इति विषयानुक्रमणिका समाप्त

श्री

गणेशमंगल.

त्रिभंगी छंद.

करवंदनमण्डितओजअखंडितपूरणपण्डितज्ञा-
ाधनं ॥ गिरिनन्दिनिनन्दनअसुरनिकन्दनसुरउर-
वन्दनकीर्तिकरं ॥ भूषणमृगलक्षणवीराविचक्षणज-
नमणरक्षणपाशधरं ॥ जयजयगणनायकखलगण-
घायक दाससहायकविघ्नहरं ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ श्रीगणेशस्तुतिप्रारंभः ।

श्रीगणेशायनमः ॥ षट्पद ॥ प्रथमसुमुखयकरदन,

कपिलगजकर्णसुदायक ॥ लंबोदरमुनिविकट, वि
नाशजुविनायक ॥ धूम्रकेतुअरुगणाध्यक्ष शिरचं
गजानन ॥ द्वादशनामप्रभात, नित्यसुमिरोनि
आनन ॥ रटविद्यारंभविवाहमें, गृहप्रवेश गम
सदा ॥ शुभश्रीधरगणपतिनिरविघन, संग्रामे सं
टछिदा ॥ इतिश्रीधरकृतगणेशस्तुतिःसमाप्ता

अथ गणेशाष्टकं लिख्यते ।

जय २ गणनायकनवनिधिदायकबुद्धिविनायकव
वंता ॥ [illegible]
भगवंता ॥ कलिमलभयछायकदुष्टदहायकसुखउ
जायकशुभकरणं ॥ जय २ ज[illegible]नंदनवि[illegible]
गौरीनंदनतुमशरणं ॥१॥ वामेअँगरिद्धीदाहिनी
द्धीसकलसमृद्धीनवनिद्धी ॥ मवमिलतसुरऋद्धीभ
गुणवृद्धीध्यानसुबुद्धीचितशुद्धी ॥ मटतदुखदुर्द
सवर्द्धीउरनउदर्द्धीउद्धरणं ॥ जय० ॥ [illegible]

मोदकघृतपूरंखुरमाखूरंमोतीचूरंभाभरणं ॥ जय०
॥८॥मंदिरमहलानंमहिरत्नालंभलहरभानंगहमानं॥
संभृतमणियानंकक्षकुरानंरटतपुराणंरमानं॥दरगा
हदिवानंधुरतनिशानंजोरितपाणिंमुनियानं॥जय०
॥ ९ ॥ पोहोकुरणान्पातंजगतविख्यातंकछाकु-
लउद्योतभणं ॥ भलगढजोधानंअभिरामंगावतमंग
लवंदभणं॥अनधनअतिपारंभर्तिभँडारंनितप्रातिमं-
गलव्याभरणं ॥जय०॥ जगवंदनविघ्ननिकंदनगौ-
रीनन्दनतुमशरणं ॥ १० ॥ इति गणेशाष्टकम् ॥

॥ अथ श्रीगणेशवन्दन ॥

॥ अथ सूर्यपुराण लिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ वंदौंचरणनहृदयधरि.
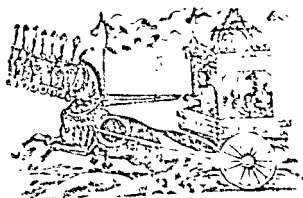
आदितपरमेश्वरस्वामी ॥ अलख निरंजनअंतर-
जामी ॥ वर्णिनजाइज्योतिकीलीला ॥ धर्मधुरं-
धरपरमसुशीला ॥ ज्योतिकलाचहुँओरविराजे ॥
जगमगकानन कुंडलछाजे ॥ नीलवर्णछविहय
असवारी ॥ ज्ञाननिधानधर्मव्रतधारी ॥ परं
पुनीतअदितअविनाशी ॥ अजनअनादिसकल
घटवासी ॥ जासुकथमैंकरौंबखाना ॥ सोपुरुष
है अभिसमाना ॥ महिमाआदितअगमअपारा ।
तीनहुलोकज्योतिउजियारा ॥ १ ॥ दोहा ॥ आदि
तकथापुनीतहै, गावहिंशंभुसुजान ॥ तीनलोक
छविउदितहै, करहिंप्रतापबखान ॥ २ ॥ चौपाई॥
सुनहुउमाआदित्यप्रतापा ॥ वर्णौंविमलजासुमैं
जापा ॥ नाथमहातमसुनहुभवानी ॥ कहौंकथा
पुनीतशुभवानी ॥ गिरिजासुनहुकथामनलाई ॥ मैं-
तोहिंअर्थकहौंसमुझाई ॥ बांझसुनैयकमासपुराना॥
प्रसन्नकर्ममचितधरिध्याना ॥ नेमधर्मसेकैरअहारा..

द्वादशवर्तकरैइतवारा ॥ कुशनविछाइकरैविश्रामा॥ अर्पित लेइ सूर्यको नामा ॥ इतनी टेकधरैत्रियज- वहीं॥ होहिंदयालुदयानिधितवहीं ॥ वृथावचनभाषौं नहिंतोहीं ॥ मनवचकर्मजो पूछौमोहीं ॥ निश्चयतौ- प्रसन्नवलवाना ॥ पांचपुत्र होअमिसमाना ॥ तिन- सिजीतिसकैनहिंकोई ॥ विद्यावंतगुणीवड़होई ॥ ॥ २ ॥ दोहा—वांझ कथामनलाइकै, टेकधरैव्रत- ध्यान ॥ निश्चयहोवेंपुत्र पँच, योद्धाअमिसमान॥४॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये महापुराणे वांझपुत्रपावनो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चौपाई-सूर्यकथाहै अमृतवानी ॥ मनअस्थि- रकरिसुनहुभवानी ॥ कुष्ठवर्णहोइजाके अंगा ॥ सोयहकथाकरैसुप्रसंगा ॥ रविदिनभोजन करै- अलोना ॥ पुष्पसुवासचढावैदोना ॥ विप्रवुलाइ- केहोमकरावै ॥ वहीभस्मलैअंगलगावै ॥ निश्चय कुष्ठवर्णछुटजाई ॥ धनिमहिमाहैसूर्यगुसांई ॥

॥ दोहा—जाकोअंगगकुष्ठहै, सोयहसुनेपुरान ॥
निश्चयसूर्यप्रतापतें, पावैकायादान ॥ १ ॥ ॥ १

इति श्रीसूर्यपुराणे सूर्यकायादानवर्णनो नाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

चौपाई—सूर्यकथामैंकहोंबुझाई ॥ मनवचक
र्मसुनहुचितलाई ॥ जाकेवर्णअंगमहँहोई ॥ अस्थि
रकथापढेनरसोई ॥ जाकोगाढपरैअति भारी ।
सोयहकथाकरैअनुसारी ॥ पांचवरतनरकरइतवार
॥ मनवचकर्मकथाअनुसारा ॥ अगरसुचंदनलेप
करई ॥ निशिदिनध्यानसूर्यपरधरई ॥ निश्चय
वर्णसकलमिटि...

॥ १ ॥ . . . . . .

तसुनेपुरान ॥ धन्यधन्यआदित्यकी, महिम
करौंबखान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सूर्यकथामैंकहो
बुझाई ॥ मनअस्थिरकैसुनुचितलाई ॥ जोनरहो-
यअंधदोउलोचन ॥ सोयहकथासुनैदुखमोचन ॥
निशिदिनकौअलोनअहारा ॥ विविधभांतिकरनै-

सअचारा ॥ पीपरतरुतरसुनैपुराना ॥ पावैनयन अंधचलखाना ॥ अंधालोचननिश्चयपावै ॥ जोयह क्थासुचितलचलावे ॥ २ ॥ दोहा ॥ अंधालोच-नपावई जोजानैप्रभुएक ॥ पुलकितनेमपुनीतम-न, धरैकथापरटेक ॥ २ ॥ मनवचकर्मसुप्रीतिदृढ, भोजनकरैअलोन ॥ रविदिनहर्षितमुचितमन, पु-ण्यचढ़ैविदोन ॥ ३ ॥

इति श्रीसूर्यपु० महा० अंधलोचनपावनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३

चौ०--यात्राकरिनरचलैविदेशा ॥ सोनहपढ़ैपु-राणसुदेशा ॥ निश्चयतासुनसकलसिधिहोई ॥ लाभ-भवनचलिआवैसोई ॥ जाकागाढ़परैअतिभारी ॥ सोयहकथाकरैअनुनारी ॥ निश्चयकष्णहुँसकलमि-टिजाई ॥ धनिमहिमाहिसूर्यगोसांई ॥ १ ॥ दोहा--यात्रा करिनरचलैजब, तबयहपढ़ैपुरान ॥ निश्च-यसफलमनोरथ, पुरवहिं श्रीभगवान ॥ १ ॥ चौ०--सुन इमाभै करोंप्रभुताई॥मनवचकर्मसुनहुचितलाई॥

ऐसीमहिमाआदितदेवा ॥ जासुकरहिंसुरनर सेवा ॥ भेटतगाढ़सकलतनुत्रासू ॥ पुलकप्रेमहिय हर्षहुलासू ॥ दीनानाथनिरंजनसाँई ॥ महिमासु खलेवर्णिनजाई ॥ जोदंडवतकरेव्रतदाना ॥ सोन तुलेयहिकथासमाना ॥ तेजमतापवर्णिनहिंजाई । सूरजकथापढ़ेमनलाई ॥ कहेंशंभुयहकथापुनीता ॥ रविप्रतापतेभयेउँअजीता ॥ २ ॥ दोहा--असमहि माआदित्यकर, वर्णोंप्रेमउछाह ॥ सुनहुउमाअतिप्रे मसे, प्रभुकीरतिअवगाह ॥ २ ॥ चौ०--कहौंकथा पुनीतशुभवानी ॥ छठोंमहातमसुनहुभवानी ॥ कार्तिकचैत्रपुण्यबहुभारी ॥ साजहिं अर्थसकलनर नारी ॥ चंदनअगरकपूरकी वाती ॥ पूजानाथक रहिं बहुभाँती ॥ जोउरमनोकामनाराखे पुलकि ध्यानधरिमुखतेभाखै ॥ सोकारजपुरवहिंभगवाना॥ ऐसेहैंप्रभुज्ञाननिधाना ॥ ३ ॥

दोहा-लीलाअगमअपारहै, कृपासिंधवलवान ॥ नाम

मरीमतिबौराई ॥ एसेवचनकहोकहुँजाई ॥ मो
कन्यात्यागवपचीशा ॥ ऐसावचननकहोमुनीशा ॥
अवविनतीममसुनहुसुवानी ॥ अंवरदेहुहमहिंसु
निज्ञानी ॥ ४ ॥ दोहा--नयनारिजलमेंअहौ, तुम
हिंकहोंकरजोरि ॥ करिकरुणाकरुणायतन, अंव
रदीजैमोरि ॥४॥ चौ०--जवकन्यावहुविनतीलाई
तेहिक्षणमुनितवगयउलजाई ॥ अंवरदैमुनिभव
सिधाए ॥ तेहिअवसरतहँशंकरआए ॥ सोसुनि
मुनिहिँ शापवशकीन्हा ॥ सोआदितसोंकहँ
लीन्हा ॥ जहांकरतहीमें असनाना ॥ मुनिअंवर
लैगेअज्ञाना ॥ ताहिसमयआएशिवभोरा ॥ संग
उमाजसचंद्रचकोरा ॥ भक्तिसहितप्रभुनायउँमाथा ॥
पूंछिकुशलतवत्रिभुवननाथा ॥ कुशलकहाशिवम-
नमुसकाई ॥ वैठेप्रभुतहँ कहाबुझाई ॥ पूंछाप्रभुहि
शिवहिंकरजोरी ॥ नाथ सुनहुयकविनतीमोरी ॥
कअपराधकीन्हमुनिभारी ॥ सोप्रभमोसोंकहोवि

चारी ॥ तवप्रभुकहासुनहुहोभोरा ॥ कन्याप्राछि-
तसेवकमोरा ॥ सोजुसुना मुनिकरअज्ञाना॥दिष्टि-
विलोकेमनकरध्याना ॥ यहिकारणमुनिशापजो-
दयऊ ॥ तेहितेअंगवर्गसुनि भयऊ ॥ इतनासुनि-
मनशिवमुसकाने ॥ दिष्टभुलानेउमनअज्ञाने ॥
सुनतवचनक्रोधितमनभयऊ ॥ कन्यासहतवमु
निपहँगयऊ ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

हा–मुनिमोंकहावचनतव. क्रोधकियेमनलाइ ॥
र कौतुकतुमकीन्हेउ, मोहिंकहहुसमुझाइ ॥ ५॥
पाई--मुनिकरजोरिसुवचनसुनाए ॥ धरिपद क-
सूर्यगुणगाए ॥ कहमुनिप्रभुसुनुवातहमारी ॥
ोंसूकभईअतिभारी ॥ यहअपराधक्षमहुप्रभु
॥ विनवौंनाथदोउकरजोरा ॥ तवप्रभु

कीन्हपरकास ॥ हर्षिकथाजोगाइहै, लहैसा-
विढिगवास ॥ ६ ॥

इति श्रीसू०म०राजपरीक्षितकन्यानारदशापदानं नाम चतुर्थो०४

चौपाई—पंपापुरयकनगरकनाऊँ ॥ हलधर
विप्रनृपतिवहिठाऊँ ॥ नगरवसैमानहुँकैलासा ॥
धर्मकथातहँहोइप्रकाशा ॥ पूजैसूर्यहिं सोदिन
राती ॥ निशिदिनटेकधरैवहुभांती ॥ अग्नि
कोटचारोंदिशिताहां ॥ श्रीसूरजकोआश्रमजाहां॥
तहांतडागअखंडसुहावा ॥ चारोंघाटसुवर्णवँ-
धावा ॥ तहांथंभयकवड़ाविशाला ॥ शतयोज-
नसोरहेउपताला ॥ तेहिथंभश्रीआदितकरवासा ॥
प्रातहिथंभसोलागुअकासा ॥ यहिविधिआदितआ-
वहिंजाहीं ॥ सुनहुकथापुनीतमनमाहीं ॥ मैंतेहिं
अर्थकहौंसमुझाई ॥ आदितकथापढ़ैमनलाई ॥ १ ॥
दोहा ॥ धनिआदितपरमेश्वर, महिमाअगमअपार॥
तीनभुवनतमभागेउ, भयउसकलउजियार ॥ १ ॥

परमसुशीला ॥ जोनरकथासूर्यकीगावै ॥ चढिवि मानवैकुण्ठसिधावै ॥ सूर्यकथाहैअम्मृतसानी ॥ अस्तुतिहर्षितकरतबखानी ॥ २ ॥ छंद—तुमप्रभुस्वामीअंतर्यामी ज्योतिकलाछविउदितमहा ॥ रूपनिधानाश्रीभगवाना करहुकृपादमअधमपहा ॥ छविज्योतिविराजैकुंडलछाजै तवप्रताप हैत्रैभुवना॥ महिमाप्रभुतोरीहृदयधरोरी लेतनाम पातकहरना ॥ १ ॥ चौपाई—गिरिजाकहैदोउकरजोरे ॥ एकसंदेहअवरमनमोरे ॥ उत्तरदिशिकहँउगाहिंगुसांई ॥ सोमोहिंनाथकहौ समुझाई ॥ लहनलगेशिवकथा रसाला ॥ जेहिविधिउत्तरउगाहिंकृपाला ॥ उत्तरदिशिकरकथाकहानी॥मनअस्थिरकरिसुनहुभवानी ॥ तहँशैलयकबडविस्तारा॥शतयोजनसोउच्चपहारा। झंपे भानुकिरणनहिथावै ॥ यहिविधिपुरअँधियार जनावै ॥ तहांवासकलियुगकरहोई ॥ तबसोपाप-

मलिनहोयसोई ॥ यहिविधिकवहुँनऊगहिंभानू ॥ मैं तोहिँ अर्थकहौंपरमानू ॥ एकसमयअचरजअस-भयऊ॥नारदमुनितहवाँचलिगयऊ ॥ देखानगरसक लअँधियारा ॥ धर्मकथाकरनामविसारा ॥ फिरफि-रिनगरसकलमुनिदेखा ॥ पापशिवायअवरनहिंले-खा ॥ मनमेंनारदकरहिंविचारा ॥ आयेकहँनगर अँधियारा॥ असकरिनारदकोपेउजवहीं ॥ नगरहि शापदीन्हमुनितवहीं ॥ कुष्टीहोउसकलनरना-री ॥ धर्मकथाकरनामविसारी ॥ कुष्टवर्णभयेसवके अंगा ॥ ओठोवदनसकलतनुभंगा ॥ कोउनरहा कुष्टसनवाँचा ॥ सवकेकुष्टवर्णभयसाँचा ॥ व्याकुल भयेतहाँनरनारी ॥ त्राहित्राहिकरतवहिँपुकारी ॥ शापितकरिसूरजपहँआये॥उत्तरदिशिकरअर्थजना-ये ॥ सुनतकथाआदितमुसकाने ॥ कहाँगयेमुनिउ-तरभुलाने ॥ शापितकरिउत्तरकहँआये ॥ अवहम-रेपहँघातजनाये ॥ अवेकहहुमुनिपूँछोंतोहीं ॥ उत्र

शापकव्यहूँटेओहीं ॥ कहनलगेमुनिनारदजवहीं ॥ अंगवर्णमुनिदेखामवहीं ॥ अंगवर्णमुनिदेखाकैसा ॥ मानहुँ हंस सरोवर वैसा ॥ चकित भये सबमुनिकेअंगा ॥ निकसोवर्णसकलतनुभंगा ॥ तनुमहँ कुमजोमुनिकेभयऊ ॥ व्याकुलहोयसूर्यसनकहऊ ॥ अवमभुसवपूँछौंतोहीं ॥ केतिकअंगवर्णहैमोहीं ॥ कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा ॥ वर्णभयोतनुकेहिअपराधा ॥ सोमोहिंनाथकहौसमुझाई ॥ जोहितेअंग वर्णमिटिजाई ॥ तवप्रभुकहासुनहुममवानी ॥ उहाँ केलोगसकलगुरुज्ञानी ॥ सवकहँशापदीन्हेतुमभारी ॥ व्याकुलभयेसकलनरनारी ॥ सवकरअंगभंग तुमकीन्हा ॥ उत्तरजाइशापतुमदीन्हा ॥ ३ ॥

दोहा—अवमैंकहिहौंतुमहिँ सन, कथापुनीतअभंग ॥ शापअनुग्रहकरहुतौ, वर्णमिटैतवअंग ॥५॥

चौपाई—नीकवचननारदमुनिमाना ॥ उत्तरदिशि कहँ कीन्ह पयाना ॥ द्वादशदिनमहँउत्तरगयऊ ॥

नगरशापसुअनुग्रहकियऊ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ नारदउत्तरजाइके, शापअनुग्रहकीन्ह ॥ तेजप्रतापहिभानुकर, हर्षितवर्णनकीन्ह ॥ ६ ॥

इतिश्रीसूर्यमाहात्म्ये नारदशापवर्णननामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

चौपाई—असकहिमुनिआदितपहँआये ॥ उत्तरदिशिकीकथासुनाये ॥ शापअनुग्रहकीन्हगुसाँई ॥ धन्यप्रतापवर्णिनहिंजाई ॥ असमुनिआदितहर्षितभयऊ ॥ दयालगीतवमुनिसोंकह्यऊ ॥ अवजनिऐनेभरमभुलाहू ॥ आशीर्वादलेहुवरजाहू ॥ भईकृपामुनिपरवहुभारी ॥ वर्णिनजाइज्योतिअधिकारी ॥ विदाहुएमुनिगृहकोआये ॥ हर्षितहुएसूर्यगुणगाये ॥ हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ धन्यसूर्यसवकरहिंपुकारी ॥ धनिआदितकायाकेराजा ॥ जाहिज्योतिचहुँओरविराजा ॥ कोटिविप्रतहँनेवतिपठावा ॥ अस्तुतिनारदसूर्यकीगावा ॥ अश्वमेधकरनेमुनिलागे ॥ तीनभुवनकेदारिदभागे ॥ सव

कहुँ नारदनेवतिपठाए ॥ रथचढिदेवतहाँसवआए॥ ब्रह्मविष्णुआदित्रिपुरारी ॥ आयेसहितसकलनर-नारी ॥ बहुप्रकारमुनिसवहिंजिवाँए ॥ हर्षितहोय सूर्यगुणगाए ॥ हर्षितमंगलगावहिंनारी ॥ ब्राह्मणवेदपढेंजयकारी ॥ अक्षतचंदनपानपकवाना ॥ पूजाकरहिंधरहिंमुनिध्याना ॥ हर्षितहोयसूर्यगुण गावें ॥ तालपखावजशंखवजावें ॥ १ ॥ दोहा ॥ यज्ञकीन्हमुनिनारद, शोभावर्णिनजाइ ॥ तेंतिस कोटीदेवतहँ, हर्षिकथागुणगाइ ॥ १ ॥

इति श्रीसूर्यमाहात्म्ये नारदयज्ञशोभावर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

चौपाई—जोनरधरेकथापरध्याना ॥ ताकरहोय परमकल्याणा ॥ जोयहकथापढेमनलाई ॥ तापर सूरज होयँ सहाई ॥ धनिप्रतापआदित्य वलवाना ॥ तेजप्रतापसुअग्निसमाना ॥ १ ॥ दोहा—गिरिजापूँछेशंभुसन, सूर्यचरितमनलाय ॥

दक्षिणदिशाकहँउगहिं. नाथकहोममुझाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कहंशंभुसुनशैलकुमारी ॥ सूर्यचरितमें कहोंविचारी ॥ कहनलगेशिवकथाबुझाई ॥ जेहिं विधिदक्षिणउगेंगुसाई ॥ दक्षिणदिशियकनगरअनूप ॥ जयमलविप्रजहांकोभूपा॥ हर्षितभजनकरेदिन राती ॥ जहँरहेआदित्यबहुभांती ॥ यहिविधिप्रभु करज्योतिविराजे ॥ अनहदनादघंटध्वनिबाजे ॥ तेतिसकोटिदेवताताहाँ ॥ जगन्नाथकोआश्रमजाहाँ॥ दक्षिणदिशिमेंकाशिप्रयाग॥ तहाँअहेयकविमलतड़ागा॥ तहँचलभद्रसुभद्रासंगा ॥ जहाँवसहि श्री सुरसरिगंगा ॥ कृपासिंधुप्रभुपरमअगाधा ॥ निशिदिनभजनकरेअवराधा ॥ २ ॥ दोहा ॥ दक्षिण दिशापुनीतहै, सुनहुउमाचितलाइ ॥ आगिलअर्थ जुहोहहै, सोमेंकहोंबुझाइ ॥ २ ॥ चौपाई—कलियुगअंतहोइजबजेहैं ॥ मानुपकोतनुमानुपखेहैं ॥ तवप्रभुलेअवतारकलंकी ॥ मानुपतवहोइहैनि

कलंकी ॥ दक्षिणदिशाउगहिरविजाई ॥ आगि
लअर्थकहौंसमुझाई॥ धर्मकथाचलिहैंवहुभाँती ॥ ने
मधर्मकरिहैंदिनराती ॥ विप्रजिंवाइआपतवजेंइहै॥
निश्चयनामसूर्यकेगइहैं ॥ लक्ष्मीघरघरकरहिनिवा
सा॥ धर्मकथातहँहोइप्रकाशा ॥ वृथावचनकोईनहि
भाषे ॥ निशिदिनध्यानसूर्यपरराखे ॥ धर्मविचार
सूर्यतहँकरिहैं ॥ द्वादशकलाज्योतिलैवरिहैं ॥ ३ ॥
दोहा ॥ द्वादशकलालेऊगिहै, आदित्यत
हींआइ ॥ पूर्वजन्मकेपातकन, कथापढतक्षयजाइ।
॥ ३ ॥ चौपाई–आगिलअर्थजुटेरसुनावा ।
सुनिगिरिजाकेमनअतिभावा ॥ मममईसुनिशि
कीवानी ॥ हर्षिसूर्यगुणकरहिवखानी ॥ तिनभुवन
जेहिं नावेंमाथा ॥ सोप्रभुनाथअनाथकेनाथा ॥ जो
यहकथापढैमनलाई ॥ घटैधर्मपापक्षयजाई ॥ ४ ॥
दोहा ॥ याहिकथामनलायके, [illegible]मनध्या
न ॥ जोइच्छाकरिपढैनर, सोपुरवहि भगवान ॥ ४ ॥

इतिश्रीसूर्यमा० महा० फलयवतारवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७

॥ व्रतविधानं लिख्यते ॥

चौपाई–कार्तिकमासजोप्राणीरहई ॥ तीनिपत्रतुलसीदललहई ॥ अगहनमासध्यानजोधरई ॥ शक्कर चाटिकैभोजनकरई ॥ पूसमासजोप्राणी रहई ॥ तीनदूबकेभोजनकरई ॥ माघमासकेसुनहुविचारा ॥ तिलखंडीको करैअहारा ॥ फाल्गुनमासजोयहिविधिरहई ॥ दहीखंडकेढिगहोरहई ॥ चैत्रमासकेसुनहुविचारा ॥ घृतगँह्रपकरिकैरैअहारा ॥ मासवैशाखजोप्राणीरहई ॥ अमिलतासचाटीसो रहई ॥ ज्येष्ठमासकेसुनहुविचारा ॥ अंजुलि तीनिजल करैअहारा ॥ आषाढमासजोप्राणीरहई ॥ तीनिमिरचकाभोजनकरई ॥ सावनमासयही व्योहारा ॥ कपिलमूत्रगँह्रपअहारा ॥ भादोमास जोयहिविधि रहई ॥ गोबरखंडीकेढिगरहई ॥ आश्विनमासकेसुनहुविचारा ॥ चंदनचाटिकैकरै

अहारा ॥ इतिश्री सूर्यमाहात्म्येमहापुराणे व्रतमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ इति श्रीसूर्यपुराणं समाप्तम् ॥

॥ गणेशपुराणं लिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा—एकरदनगजवदनके, पदवंदौंकरजोरि ॥ कृपाकरहुशिवनंदन, बुद्धिबढ़ैजेहिमोरि ॥ १ ॥ व्यासआदिनरपुंगव, नारदआदि मुनीश ॥ दिनकरमहाशेषग॰ सबकहँनावोंशीश

सोभयऊ ॥ यहसमुझाइकहौयदुनाथा ॥ वारवार
नावोंपदमाथा ॥ हँसिकहकृष्णसुनोतुमभूपा ॥ गण
नायककीकथाअनूपा ॥ आदिदेवकोउपारनपावें ॥
वेदपुराणहुमुनिजनगावें ॥ आदिकल्पतेजगविस्ता
रा ॥ तवतेगणपतिपूज्यभुवारा ॥ दोहा ॥ तीनलो
कसवपूजते, सुरनरआतमशेष ॥ शंभुतनयजेहि
भांतिभे, सोअवसुनोनरेश ॥ ४ ॥ चौपाई—
एकसमयगिरिवरकैलासा ॥ सहितउमाशिवकरत
विलासा ॥ करिकछुरामकथागुणगाना ॥ महादेव
तवगयेअस्नाना॥ वैठीगिरिजासदनसुहाये॥तेहिस
मयनारदऋषिआये ॥ उठिकैरमाविनयवडिकीन्ह
आसनदैचरणोदकलीन्हा ॥ धन्यभाग्यमुनिआज
हमारे ॥ कृपाकीन्हमुनिइतपगुधारे ॥ केहिकारण
आगमनतुम्हारा ॥ कहोऋषीश्वरकरतविचारा ॥
तवबोलेनारदमृदुवानी ॥ वचनएकममसुनहुभवा
नी ॥ दोहा ॥ वहुदिनवीतेब्रह्मपुर, मनमहँभयऊ

॥ तुह्मरेहृदयमुंडनकीमाला ॥ सोकेहिकेशिरआ-
हिंकृपाला ॥ तवशंकरवोलेमुसकांई ॥ कवनेतुह्म-
रीमतिभरमाई ॥ मुंडमालममहृदयभवानी॥ तासु-
कथातुमसुनोसयानी ॥ जवजवजन्मतुह्मारोहोई॥
रामकृपासोंव्याहोंसोई ॥ समयपायजवत्यागहुदेहा
॥ तुमशिरकेसवमालजुएहा ॥ दोहा--जितनेजन्म
भयेतव देहतजेकरिभोग ॥ तवतुमशिरकेमालकिय
प्रियातुह्मारेशोग ॥ ६॥ चौ०--यहसुनगिरिजावच
नउचारी॥ सुनहुवचनममनाथपुरारी॥ तुमअवता-
रभयोप्रभुयेका ॥ केहिकारण ममजन्मअनेका ॥
मोरेमनप्रभुभयउअँदेशा ॥ सोसमस्तमोहिं कहौ-
महेशा ॥ तवशंकरशुभगिरासुनाई ॥ हृदयसु-
मिरिनिजप्रभुरघुराई ॥ वीजमंत्ररघुनायककेरा ॥
सोममहृदयमेंकरतवसेरा ॥ तातेमोरहोतनहिं-
नाशा ॥ वीजमंत्रदियअल्पप्रकाशा ॥ वीजमं-
त्रलमजानतनाहीं ॥ तातेजन्मधरेविपुलाहीं ॥

लावा ॥ कहतसुनतअंडागुखभयऊ ॥ बारहवर्ष बीतितबगयऊ ॥ जोजोमंत्रउमहिंशिवदीन्हा ॥ सोसबअंधसुनाओलीन्हा ॥ संवतद्वादशगयोशि-राई ॥ माताकहँआईअलसाई ॥ सोवतजानि-गिरीशकुमारी ॥ तबतेकीरदीन्हहुंकारी ॥ यहि-अंतरमहँकथाशिरानी ॥ उमाजगाइकहाशिव-चानी ॥ जहँ लगिसुनाकहौंसबलाई ॥ अं-तरलखिशिवकहाबुझाई॥ कथापुनीतमैंकहावखानी ॥ हुंकारहिंकेहि दीन्हभवानी ॥ उमाकहाप्रभुमैं-गइसोई ॥ देखहु नाथजीवकोइहोई ॥ तबशंकर-चितयेधरिध्याना॥सुनावीजखगकीरनिधाना॥कर त्रिशूललेउठेरिसाई ॥ कीरदेखिउडिचलेउपराई ॥ भागोखगव्याकुलअतिशोका ॥ भरमतफिरेउसक लत्रैलोका॥ जहँजहँखगशरणागतभाखा॥ शिवद्रो हीकाहूनहिंराखा ॥ दोहा—पाछेशिवधावतफिरे, कियेक्रोधदृखमूल ॥ जोभावीसोनामिटे, छूटैन

ूल ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥
पाई—जबअतिकीरविकलमनभयऊ ॥ उड-
व्यासघरगयऊ।व्यासनारितेहिममयभुआरा
ुमज्जनकरिमूर्यनिहारा ॥ ताहिममयआई
ई ॥ वदनपंथक्षगगयउममाई ॥ पाछेशंभु-
ाई ॥ भयदेखाइत्रियमाथनवाई ॥ कहेशंभु
पिकीनारी ॥ चोरहमागेदहुनिका-
ुनित्रियकहेनाथनहिंजानों ॥ कहांचोरमें
खानों ॥ तवहींवोलेशंभुसुजाना ॥ उदरतु-
ोरममाना ॥ दोहा—देनिकारिरिपु मोरहि,
चनविश्वास ॥ नाहिंतोमुनित्रियअबहि,
ुमारानाश ॥ १० ॥ चौपाई—ताहिमध्यव्यास
आये ॥ देखिशंभुमुनिशीशनवाये ॥ समाचार
कहोमुनीशा ॥ वचनहमारसुनो जगदीशा ॥
जानिप्रभुयथनाहिंकीजे ॥ बालकदोहुनाआर
जे ॥ मुनिकेवचनसुनतअनिरुद्र ॥ भेद
सुरेद्र ॥ तबमुनिनोहिंगिरतेउमरेश ॥

दीनपुत्रताहिंतजोअँदेशू ॥ होईपुत्रमहाविज्ञानी। तासुचरित्रतिहूँपुरजानी ॥ हाथजोरिमुनिविनती कीन्हा ॥ होइप्रसन्नतवेशिवदीन्हा॥वरदेशंभुगयेकै लासा ॥ मुनिहिंपुत्रकीउपजीआशा ॥ दोहा- पूरेदिनवालकभयो, सुखतेखुनहुभुआल॥ शुकाचा र्यधरिनामतेहिं, राखोऋपीविचार ॥११॥ चौपाई- इहांशंभुआएकैलासा ॥ वैठेजाइलागिअतित्रासा॥ देखतशिवहिंक्रोधभयोभारी ॥ तवहिंउमासोंकहा विचारी ॥ तुम्हरेसँगनहिंकार्यहमारा ॥ जाउजहां मनरुचैतुम्हारा ॥ जवगिरिजाशिवआयसुपाई ॥ उठिकेचलींचरणशिरनाई ॥ शिवशिवभापतउरअ भिलाषा ॥ गईतहांजहँपुत्रविशाखा ॥ मातालखि गुहकीन्हप्रणामा ॥ कहुजननीआईकेहिकामा ॥ सवप्रभावजवउमासुनावा ॥ पण्मुखहृदयशोचतव आवा ॥ करिविचारवोलेसुनुमाता ॥ राखोइहां क्रोधकरिताता , - वचनमोहिं मेटिनजाई ॥

कठिनकर्मकीन्हेउतुममाई ॥ दोहा–शिवप्रभावको समुझिकै, कहीप्रडाननवात॥ मातुतपस्याकरहुतुम, सिद्धिकरहिंगेतात ॥ १२ ॥ चौपाई–सुतकेवचन सुनतमनभाये ॥ उमाचलींकिष्किंधहिं धाये ॥ तेहिगिरिपरयकगुहासुहाई॥ तहांजाइशिवतपमनलाई ॥ यहिविधिकालवीतिकछुगयऊ ॥ सुनउभूपआगेजसभयऊ ॥ एकसमयनिजदेहनिहारी ॥ उवटन कीन्हगिरीशकुमारी॥ तनुकामलजोछूटसुआरा ॥ सोउठायमनकीन्हविचारा ॥ बालकरचिकीन्हेउहरिष्याना ॥ तनयसजीवकरौभगवाना॥ हरिइच्छा सोगयेनरेशा ॥ गणनायकतहँकीन्हप्रवेशा॥ तनयशीसकरपरसेउजवहीं ॥ कीन्हसजीवरमापतित वहीं ॥ दोहा–तनयसजीवनदेखिकै, मनआनँदतवकीन्ह ॥ अतिज्ञानीसुतहोहुतुम, माताआशिपदीन्ह ॥ १३ ॥ चौपाई—सुतसोंवोलीवचनभवानी ॥ सुनहुतातमानहुममवानी ॥ गु

॥ चौपाई ॥ यहसुनिपेलिचलेप्रियपाहीं ॥ बालककोपकीन्हमनमाहीं ॥ क्रोधवंतसुतगिरिजा भारी ॥ शिवपरतीक्षणशक्तिपँवारी॥आवतशक्तिदे खिखरधारा ॥ तेजशक्तिसोंकाटिनिवारा ॥ लखिशं करशरतेजअपारा ॥ बालकधनुपकाटिशिवडारा ॥ मातासुनिकाटेधनुवारा ॥ गुफासोंनिकसीशक्तिअ- पारा॥मारततनयनमानतहारी॥ क्रोधवंततवभयेत्रि पुरारी ॥ जौलोंशिवशिशुहतेप्रचारी॥तौलोंशिवयह युक्तिविचारी ॥ देखायुद्धभयंकरनाना ॥ कोपेशिव भयअनलसमाना ॥ गहित्रिशूलतेहिहतेप्रचंडा ॥ उडिगामाथगणपकरखंडा ॥ यहिविधिबालकमारिगि- रीशा॥ तनयमेलगुफामेंलिना ॥ जबहिंउमाशंभुक हेदेखा॥उठाभरेतनमाँनिविशेषा॥ ॥दोहा॥ आगम देखदयालकोनिरखिपदार्थलिन्ह ॥ शंभुदिआ- सनसुभग, मधुविनिआशिशदिन्ह ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ उमाशंभुसनहरषुभानी ॥ गणोनाननमपगम-

बुलाई ॥ सकलकथाकहितिन्हहिसुनाई ॥ आजुके
भयेतनयलैआवहु ॥ जननीपीठिदयेजहँपावहु ॥
सासुनिदूतदसौंदिशिधाए ॥ हेरिसोजिनुनिशिवप
हँआये ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गहैंशंभुसनजोरिकर, सकल
दूतशिरनाइ ॥ तेहिप्रकारकाबालहम, हेरिरहेनहिं
पाइ ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ मुनिबोलेगणगिरासु
हाई ॥ सुनौनाथकरिणीयकजाई ॥ सोबालक पीछे
हेनाथा ॥ आज्ञाहोयतो आनौंमाथा ॥ आयसुपाइ
दूतबहुधाये ॥ करिसुतमाथकाटिलेआये ॥ माथ
लायजोडेउमोइग्रीवा ॥ भयोठाढभगटेउतबजीवा ॥
पुत्रदेखिमातासुखपायो ॥ आशिपदेशिवहृदयल
गायो ॥ तनयदेखिसुखकीन्हभवानी ॥ शंकरसों
बोलीमृदुबानी ॥ करिणीकोसुतदेहुजिवाई ॥ ऐसे
नाथबहोदुखपाई ॥ तबशिवकिरकिटमाथगँगात्रा ॥
कृपाकीन्हहरतिन्हेंजिलाना ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ किर
किटकोआशिपदियो, जनोनिधनिनगोज ॥ नव

कर्कोदीन्ह ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ यहिअंतरपणमु
चलिआये ॥ हरिकेचरणशीसतिननाये ॥ देखाम
दकबालकहाथा ॥ शरजन्माकोपेउनरनाथा ॥ मु
दकलीन्हबदनपरमारा ॥ एकदंतगाढ़टिभुआरा॥
तबहरिहँसिकहगिरासुनाई ॥ षण्मुखकहाकीन्हल
रिकाई ॥ वहबालकहैयेकसजाता ॥ दाँतढ़टिगा
कायहबाता ॥ तबगुहकहायुगलकरजोरी ॥ नाथ
सुनोयकविनतीमोरी॥सबसंसारदौरिमैंआयो॥ बै
ठरहेउसोमोदकपायो॥ हरिकहतुमसोंआगेआवा॥
तेहिकारणइनमोदकपावा ॥ यहसुनिगुहअतिशंका
कीन्हा ॥ तबहरिचारितलखावैलीन्हा ॥ हँसिकेज
बहरिवदनपसारा॥ तीनलोकतबदेखिकुमारा ॥ दे
खिषडाननलज्जितभयऊ ॥ तबहरिगुहैप्रबोधित
कियऊ ॥ दोहा ॥ पुनिसबदेवनजोरिकर, प्रभु
हिंकहासमुझाइ ॥ सोबालकबुधिवंतहै कृपाकरौ
चौपाई ॥ देवगिरासु

कहाँदीन्ह ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ यहिअंतरषणमुख
चलिआये ॥ हरिकेचरणशीसतिननाये ॥ देखाबो
दकबालकहाथा ॥ शरजन्माकोपेउनरनाथा ॥ मं
दकलीन्हवदनपरमारा ॥ एकदंतगाढ़टिभुआरा॥
तवहरिहँसिकहगिरासुनाई ॥ षण्मुखकहाकीन्हल
रिकाई ॥ वहबालकहयेकसजाता ॥ दाँतहटिगा
कायहबाता ॥ तवगुहकहायुगलकरजोरी ॥ नाथ
सुनोयकविनतीमोरी॥सवसंसारदौरिमैंआयो॥ वै
ठरहेउसोमोदकपायो॥ हरिकहतुमसोंआगेआवा॥
तेहिकारणइनमोदकपावा ॥ यहसुनिगुहअतिशंका
कीन्हा ॥ तवहरिचारितलखावेलीन्हा ॥ हँसिकैज
वहरिवदनपसारा॥ तीनलोकतवदेखिकुमारा ॥ दे
खिषडाननलज्जितभयऊ ॥ तवहरिगुहैप्रवोधित
कियऊ ॥ दोहा ॥ पुनिसवदेवनजोरिकर, प्रभु
हिंकहासमुझाइ ॥ सोबालकबुधिवंतहै कृपाकरै
सुखदाइ ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ देवगिरासु

प्रथमहि नाथभक्तिलवणाऊँ ॥ पुनिदृमस्वरनाँ
ऊँ ॥ जोकोइपूजामनलावै ॥ मनवांछितफलसो
भुपावै ॥ बोलेप्रभुचिहँसेमृदुवानी ॥ सुनेहर्षित
सहितभवानी॥मुनिप्रभुवंदनकरिसबसेवा॥निज
जलोकगयेसबदेवा ॥ शंकरप्रभुपदउरमहँराखी
विदाभयेविनतीबहुभाषी ॥ दोहा ॥ ॥ गुह
पतिप्रभुचरणगहि, चलेआशिषपाइ ॥ गिरिज
हितमहेशतब, गमनकीन्हहर्षाइ ॥ २४ ॥ चौ
ई ॥ ॥ पहुँचेविश्वनाथकैलासा ॥ सुतनसहितशि
परमहुलासा ॥ कहेउँकथामैंसकलनरेशा ॥ जेहिवि
धिसोशिवतनयगणेशा ॥ पूजेनितगणपतित्रैलो
का ॥ तिन्हैपूजिजगहोविनशोका ॥ तेहितेपूजोग
णपतिराजा ॥ मिलहितोयसबराजसमाजा ॥ यहसु
निधर्मतनयशिरनावा ॥ धन्यकृष्णयहकथासुनावा॥
अबजानेगणनाथपुरारी ॥ सुनतकथाछूटादुखभा
री ॥ औरौएकलालसामोरे ॥ कहौकृष्णविनवौंकर

युद्धविचारा ॥ यहिविधिजाइनिशाचरमारा ॥
गुरुसहितदेवतहँआये ॥ मांधाताकोकथासुनाये
राजाकहाकहेगुरुमोंहि ॥ केहिवलसोंमारोंसु
हीं ॥ सुरगुरुकहाभूपसुनिलीजै ॥ गणपति
जाव्रतकीजै ॥ युक्तिदेवगुरुदीन्हवताई ॥ तेहि
धिसोंपूजामनलाई ॥ ॥ दोहा ॥ कृपाभई
नाथकी, चलसमूहह्वैजात ॥ मांधाताप
भये, धुंधूसुताहिंनिपात ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई
यहइतिहाससकलजगजाना ॥ तातेंमेंसंक्षेपव
ना ॥ गणपतिउहैकृपाकरिनाना ॥ धुंधु
असनामवखाना ॥ औरकथासुनुधर्मकुमारा
वृत्रासुरसोंसुरपतिहारा ॥ गुरुउपदेशसुरेशहिं
न्हा ॥ तवगणपतिकीपूजाकीन्हा ॥ व्रतकेफल
येउवलभारी ॥ मारेउवृत्रासुरहिंप्रचारी ॥ औरक
सुनुधर्मकुमारा ॥ जोसुनिकटैसकलदुखभारा
महादेवकहँसंकटभयऊ ॥ त्रिपुरादैत्यमहा

॥ गिरिजालेनत्रिपुरमनकीन्हा ॥ तवशिवग-
पतिपूजाकीन्हा ॥ मारादैत्यमहाबलहारी ॥ तव
नामधरोत्रिपुरारी ॥ पुनिव्रतकीन्हषडाननवीरा॥
विधानहोसुनुमतिधीरा ॥ तारकअसुरभयउपर
डा ॥ जीताकोपिसकलब्रह्मंडा ॥ गुहगणपतिपू
अनुरागी ॥ हतेउतारकहिं वारनलागी ॥ दोहा ॥
रिकथाअवभाषिहों, चितदेसुनहुनरेश ॥
क्मिणिसुतकेकारणे, पूजादेवगणेश ॥ ३० ॥
पाई ॥ व्रतफलतेहिं प्रद्युम्नसुतभयऊ ॥ अति
नँदशोभाफललयऊ ॥ पुनिव्रतकरिपूजागणरा-
॥ रत्नजडितआरतिसोसाजा ॥ चीररोपिपुनिक
उनरेशा ॥ पुत्रदानतवदीन्हगणेशा ॥ त्रियासहि
प्रद्युम्नघरआये ॥ रुक्मिणितनयदेखिसुखपाये ॥
रिासुनहुधर्ममतिधीरा ॥ सोसुनिकटैसकलपुनि
रा ॥ माहिष्मतीनगरसुखधामा ॥ नीलध्वजरा
॥ तापुरवासीब्राह्मणएका ॥ ताकेयक

सुतसोअविवेका ॥ धेनुवत्सपुरकेरचरावै ॥ ब्राह्म
णिभिक्षामांगिलेआवै ॥ यहिविधिसोंकछुकालवि
तावा ॥ पुनितीयागणपतिहिं मनावा ॥ व्रतप्रभाव
सोंसंपतिपावा ॥ कछुकज्ञानबालककेहँआवा ।
॥ दोहा ॥ नीलध्वजकीसभामहँ, बालकआ
जाइ ॥ ताहिदेखिकेभूपसुनु, प्रीतिकरहिंअधिकाइ
॥ २१ ॥ चौपाई ॥ जादिन सभा न बालक
जावे ॥ राजहिं नींदनभोजनभावे ॥ बहुअधिकारी
द्विजसुतजाना ॥ अतिअभिमानहृदयमहँआना ॥
एकदिवसब्राह्मणिव्रतकियऊ ॥ गणपतिकीपूजामन
दियऊ ॥ तेहिअंतररत्नाकरसुतआवा ॥ मातासोंतब
वचनसुनावा ॥ क्षुधालागिमोहिंमातबहूता ॥ जन
निकहाधरुधीरजपूता ॥ गणपतिकीपूजाकरिलेहूं॥
तेहिपीछेतोहिंभोजनदेहूं ॥ तबवहबालकउठारिसा
ई ॥ नाताकेसन्मुखचलिआई ॥ दोहा—गण
पतिकीप्रतिमाहनी, लातनदीन्हगिराइ ॥ मूरति

पटकी क्रोधकरि पुनिबोलासुरखाइ ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ मूरतिपूजिपढेकछुटोना ॥ पूजाछोड़िबैठ्यककोना ॥ यहकहिगयउसभानृपकेरी ॥ भलअनभलनाहिंनमनहेरी ॥ तवबोलीमाताअकुलानी ॥ पूजासाजिउठालेआनी ॥ थापितकैपूजामनलावा ॥ करजोरेगणपतीमनावा ॥ गणपतिकेद्विजसुतपदमारा ॥ ताकरफलअवसुनहुअपारा ॥ जव ब्राह्मणिसुतगोनृपद्वारे ॥ सभामृनिलखिमहलसिधारे ॥ भीतरजाइसोकौतुकदेखा ॥ शयनकियेदंपतिकोलेखा ॥ देखतद्विजसुतअतिभयमाना ॥ भ्रम वश विसरे पगके त्राना ॥दोहा॥ अपने पदकी पानहीं, छोडी भूप अवास ॥ राजाकीपगपनहिलै ॥ आयउनिजपितुपास ॥ ३३ ॥ चौपाई–भोरभये नीलध्वजजागे ॥ चरणत्राणलखिकहवेलागे ॥ काकी पदत्राहिंपदत्राना ॥ रानिकहाप्रभुमैंनहिंजाना ॥ सुनुतियद्विजसुततांकीआहीं॥नीलध्वजवोलेहु मन

माहीं ॥ तुरतिबालकगकरिमँगावा ॥ पुनितंडा
भूपबोलावा ॥ कहतहिद्विजसुतआनमँगाई ॥
हिविपिनमहँमारहुजाई ॥ बालकलैचंडालसि
ये ॥ समाचारपुनिमातापाये ॥ तबगणपतिको
न्हेसिध्याना ॥ करजोरेबिनवैविधिनाना ॥
करोगणपतिलखिसेवा ॥ विप्ररूपधरिप्रगटदेवा
गयेजहाँनीलध्वजराजा ॥ देखिविप्रनिजअ
साजा ॥ करिप्रणामनृपसीसनवावा ॥ आशिर्व
जवचनसुनावा ॥ दोहा ॥ द्विजसुतकीनन
पकछु, कहिमृदुमीठीबात ॥ बिनुअपराधहि
नृप, बालककरियनघात ॥ ३४ ॥ चौपाई
सोसुनिराजातुरतबोलाये ॥ विप्रजानिकैसीसन
ये ॥विप्रतनयनिजमंदिरगयऊ ॥ देखिमातुतबवि
बधाऊ ॥ धन्यदेवगणनाथगोसांई ॥ दीन्हावा
मोरछोंडाई ॥ नृपघरआवैजायसोबालक ॥ तै
प्रीतिकरैनरपालक ॥ सोबालकमतिमंदगोसांई

गणपतिमहिमानाहिंबुझाई ॥ सोकारणमुनुधर्मकु-
मारा ॥ जमवाल्कका भाज्योंहारा ॥ एकदिवसनृप
कोसुनतहवाँ ॥ ब्राह्मणिगुनचलिआवाजहवा ॥ मु-
खमज्जनकरिभूपकुमारा ॥ जलभाजनलियब्राह्मणि
वारा ॥ भेअनकृपानाथगणकेरा ॥ ताकरफलअब
सुनोवहोरी ॥ मुखमज्जनकरतबभयऊ ॥ जलको
पात्रमाथहोइगयऊ ॥ राजपुत्रनहँभयोअलेखा ॥ य
हकौतुक पुरवासिन देखा ॥ दोहा ॥ द्विजसुनदे-
खिचरित्रयह, मनमहँअतिभयमान ॥ ठाढविगुर-
मनहिमन, काहकीन्हभगवान ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥
सबकेहृहयहभयउअलेपा ॥ जायभूपसोंकहियविशे
पा ॥ ब्राह्मणितनयकुँवरकहँमारा ॥ महाराजकाक-
रियविचारा ॥ सुनिकभूपविपुलदुखमाना ॥ कहारि
सायतोरलेउँप्राना ॥ मारियाहिवारजनिलावहु ॥
ताकरमुखजनिमोहिंदिखावहु ॥ सुनतवचनतबमा-
रनधाये ॥ समाचारतबमातापाये ॥ व्याकुल है

वहींराजावचनसुनाये ॥ कछुचेटकतुमजानुसयानी ॥ सोविधिहमसोंकहहुवखानी ॥ कहैब्राह्मणीसुनोहोराजा ॥ मैंजानोंगणपतिकीपूजा ॥ दोहा ॥ गणपतिकीपूजाकरों, ध्यानधरोंमनलाय ॥ परसनहोतेभूपसुनु, सकलकष्टमिटिजाय ॥ ३८ ॥ ॥ चौपाई ॥ सत्यसत्यराजाकरिमानी ॥ ब्राह्मणिसोंबोलामृदुवानी ॥ केहिविधिपूजौंगणपतिराई ॥ तवब्राह्मणिकहिकैसमुझाई ॥ कनकवसनभरिविपुलमँगावा ॥ ब्राह्मणिकोदेपदशिरनावा ॥ तनयसमेतपरमसुखपाई ॥ आशिपदैब्राह्मणिघरआई ॥ गणपतिकीपूजातवभयऊ ॥ सवदुखभयउसवैदुखगयऊ ॥ व्रतप्रभावनीलध्वजराजा ॥ सुखपत्नीसुखसंपतिभ्राजा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तातेसुनहुधर्मसुत, व्रतकरिपूजुगणेश ॥ विघ्नहरणहैनामतेहि, मेटतसकलकलेश ॥ ३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनि[illegible]गाजोसिहाथा ॥ धर्मतनयतवनायउमाथा ॥

रखावे ॥ तांबूलपुनिआनिचढ़ावै ॥ जोविधिवारह मासकीहोई ॥ तिहिंविधिसोंआवहिदेसोई ॥ पाछे कथासुनैमनलावै ॥ जवलगिचंद्रउदयकरिआवै ॥ चंद्रअरघदैकरेप्रणामा ॥ फेरिविसर्जनकरैसुधामा॥ पुनिब्राह्मणहिंदक्षिणादेई ॥ आशीर्वादताहिसनलेई ॥ त्रियापुरुषव्रतधारैकोई ॥ मनवांछितफलपावै सोई ॥ दोहा ॥ यहिविधिव्रतधारणकरै, पूजैदेवगणेश ॥ जोविधिवारहमासकी, सोअवसुनोनरेश ॥ ४१ ॥ ॥ चौपाई ॥ भाद्रचौथिपूजामनलावै ॥ सुमनतरूवरकेरमँगावै ॥ घृतकेसंगहोम जोकरई ॥ तीनिजन्मभवसागरतरई ॥ मासकुँवार चौथिजवआवै ॥ दूवहरीकेदलनमँगावै ॥ घृतसँग होमकरैजोकोई ॥ सवविधिसोंफलपावैसोई ॥ कार्तिकमासचौथिजवआवे ॥ उड़ददालिघृतहोमकरावे ॥ पूजापूरणताकीहोई ॥ सकलसिद्धिफलपावै सोई ॥ अगहनमासचौथिजवआवे ॥ कटसरैयाके

मजोकरई ॥ सोप्राणीपुनिदेहनधरई ॥ श्रावणमासचौथिजबआवे ॥ कुसुमसेहरुनाकेरमँगावे ॥ सावधानहोमघृतकरई ॥ दैत्यदेवताकेवशहोई ॥
॥ दोहा ॥ यहविधिबारहमासकी, कह्यउँभूपसमुझाय ॥ विधिसोंपूजेगणपती, सकलकष्टमिटिजाय ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुनिकैकथाधर्मशिरनावा ॥ धनिगोपालयहकथासुनावा ॥ जोविधिकृष्णकहाव्रतनीती ॥ तेहिविधिसोंनृपकीन्हप्रतीती ॥ गणपतिकीभइकृपाअपारा ॥ माराशत्रुलागिनहिंबारा ॥ सुखनसमेतराजतबकीन्हा ॥ गणपतिकेरिदयालखिलीन्हा ॥ गणपतिकेरिबातचितआई ॥ जोमनसाकरिसोफलपाई ॥ ऋधिसिधिसंपतिसुखहुअपारा ॥ धरणिधामसुतसंपतिधारा ॥ नारीपुरुषकरैव्रतकोई ॥ सकलसिद्धिफलपावैसोई ॥ जोयहकथासुनेअरुगावै ॥ अंतकालसुरपुरपहुँचावै ॥
॥ दोहा ॥ श्रीगणपतिकीकथायह, प्राकृतम-

॥ अथ सनेहलीलाप्रारंभ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा—एकसमयब्रजवासकी, सुरतिकरीहरिराय॥ परिजनअपनोजानिकै, उद्धव लियोबुलाय ॥ १ ॥ कृष्णवचनऐसेकह्यो, उद्धवतुम सुनिलेहु ॥ नंदयशोदाआदिलै, जाब्रजकोसुखदेहु ॥ २ ॥ ब्रजवासीवल्लभसदा, ॥ मेरेजीवनप्रान ॥ तातेनिमिषनवीसरें, मोहिंनँदरायकीआन ॥ ॥ ३ ॥ तुमउनसेंऐसेकह्यो, आवेंगे रिपु जीत ॥

अवतो रे केसेवने, पितामानसांप्रीनि ॥ ४ ॥ उद्धवेव्रजयोपिता, उनकेमेरोध्यान ॥ निन्हेजायउपदेशद्यो, पूरणब्रह्मगुज्ञान ॥ ५ ॥ वाकोअपने अंगको, क्रीटमुकुटपहिराय ॥ श्रुतिकुंडलमाला दई, अपनोवेषबनाय ॥ ६ ॥ अरुअपनोरथसाजिके, सूतसारथीदीन्ह ॥ उद्धवचरणप्रणामकरि, रथआरोहणकीन्ह ॥ ७ ॥ विद्यावंतविवेकयुत, शीलवंतगुणशुद्ध ॥ चतुरचिह्नजानतसवै, यों प्रवीणश्रीउद्ध ॥ ८ ॥ परमसखाश्रीकृष्णको, सुरगुरुशिष्यप्रवीण ॥ तातेलायकपाठयो, व्रजकोआयसुदीन्ह ॥ ९ ॥ रथहुजोरिउद्धवचले, अतिआनँदमनकाम ॥ दिनकरघरमापतिभये, गये नंदकेगाम ॥ १० ॥ चहुँदिशिगोधनआवहीं, वृषभानुनकीगाय ॥ वच्छवचनलागतभले, मानों थानखुराय ॥ ११ ॥ अपनीअपनीमंडली, मिले ग्वालकेवृंद ॥ मुरलीमधुरवजावहीं, गावहिंगु-

णगोविंद ॥ १२ ॥ गोदोहनमोहनतिया, टेरत लैलैनाम ॥ गोरजउडिअंवरलगी, छविपावतनंदगाम ॥ १३ ॥ तवउद्धवरथहाँकिके, गयेनंदकी पौर ॥ नंदयशोदादेखिकै, सन्मुखआयेदौर ॥ ॥ १४ ॥ उद्धवरथतेउतारिकै, मिलेनंदकोधाय ॥ नयनसजलजलसोंभरे, आनँदउरनसमाय ॥ १५ ॥ करगहिगृहकोलेचले, सुतसनेहकेभाय ॥ अशन वसनवहुविधिदिये, निजमंदिरपधराय ॥ १६ ॥ अरुचंदनवहुपुष्पजल, धूपदीपइत्यादि ॥ विधि पूर्वकपूजाकरी, सुखशय्याकुसुमादि ॥ १७ ॥ नंदयशोदाप्रीतिसों, पूँछनलागेवात ॥ शूरसेनके पुत्रकी, कहोपरमकुशलात ॥ १८ ॥ जिनकेपडूवालकहते, वंदिपरेवेकाज ॥ केतिकदिनदुखितभए, दुष्टकंसकेराज ॥ १९ ॥ भलीभईसेनासहित, कृष्णकियोहतकंस ॥ तादिनतेसुखपावहीं, मातपितायदुवंश ॥ २० ॥ जाकेअष्टादशतिया, ॰रामकृ-

ष्णसुतदोय ॥ सरवरतावसुदेवकी, कहौकौनपैहोय॥ ॥ २१ ॥ देवनकेमंगलभए, वासुदेवजनमंत ॥ घरघरप्रतिसवसुरनके, दुंदुभिवजेअनंत ॥ २२ ॥ पटरानीदेवकसुता, सुकृतपरमकृपाल ॥ ताकेगृहप्रगटतभये, कृष्णकंसकेकाल ॥ २३ ॥ उद्धवताते कीजिए, उनकोसुमिरनध्यान ॥ अवऊधौकवदेखिहौं, अनँदवधायेकान॥२४॥सुफलकसुतआएइहाँ, रामकृष्णलेजान ॥ तवतेतनुगतिदोभई, इहाँ देहउहँप्रान ॥ २५ ॥ नयनयशोदाजलभरे, कंठ श्वासनहिंलेत ॥ कहिकहिवातिपुत्रकी, हीयोभरि भरिदेत ॥ २६ ॥ निमिषनिमिषमहँझगरते, वेमोसोंदोउभ्रात ॥ अवऊधौकवदेखिहौं, चोरिचोरि दधिखात ॥ २७ ॥ मोतिनकीमालागरे, राजहंस गतिदोर ॥ यहिआँगनकवदेखिहौं, रामकृष्णकी जोर ॥ २८ ॥ पीतांवरकीओढनी, अरुवाजनपृदुवेनु ॥ अवऊधौकवदेखिहौं, वनवनचारतधेनु

वंदनपान ॥ शीसनाइआदरकियो , सखाकृष्णको
जान ॥ ४७ ॥ उद्धवव्रजआयेभले, कहोकृष्णकुश
लात ॥ उहांजाइकीन्हीभली, कहुकछुउत्तमवात॥
॥ ४८ ॥ तुममाँचिउत्तमसखा, मनवचकर्मसहेत ॥
प्राणनकोहरिलैगए, पिंडदानतुमदेत ॥ ४९ ॥
उद्धवहमतोबावरी, करैंक्वनसोंप्रीति ॥ उहाँजाइ
छोंडासबै, नंदगांवकीरीति ॥ ५० ॥ यावजकव
हुँकआइहै, मैयाकेहितकाज ॥ ब्रजयुवतिनकेनाभ
य, भयेउहाँकेराज ॥ ५१ ॥ हमश्रवणनछाँडीगु
नी, मोरपीछवनघात ॥ सुरभीसाँचीचित्रकी,
ताहिदेखसकुचात ॥ ५२ ॥ तबउद्धवबोलीकही,
सुनोसकलब्रजनारि ॥ यातकहोंपरब्रह्मकी, आ
तमतत्वविचारि ॥ ५३ ॥ वेतुमपरकरिहैंक्षा, प्र
भुताजानीपर्म ॥ तजियेनातोगामको, भजियेपू
रणब्रह्म ॥ ५४ ॥ छायामायारहितहै, नहींत्तिउ-
नमान॥हरितुमसोंऐसोकह्यो, भजियेश्रीभगवान ॥

॥ ५५ ॥ जापदकोयोगेश्वरा, लगेरहतअनुराग ॥ साधनसोइकीजेसदा, नामधरेवैराग ॥ ५६ ॥ नैनमूँदिमुखमौनगहि, त्रिगुणरहितनिजधाम ॥ तुमसवहीमेंदेखिहो, आपहिआतमराम ॥ ५७ ॥ मधुकरअंतरकठिनहे, कठिनवातकहिजात ॥ भूख मरेदिनसातलों, सिंवआननहिंखात ॥ ५८ ॥ यद्यपियोगप्रसिद्धहे, तोतुमहीलैजाउ ॥ वहुन्योनाहिनपाइहो, ऐसोउत्तमदाउ ॥ ५९ ॥ उद्धवतातेदेखिहो, तत्वरूपतनमाहिं ॥ मोहमसोंसिखवतकहा, तुमहीसाधतनाहिं ॥ ६० ॥ यहतोउनको चाहिये, जिनकेअंतरराय ॥ दादुरतोजलविनजिये, मीनतुरतमरजाय ॥ ६१ ॥ हेंदोउयकठौरके, दादुरमीनसमान ॥ येजलविनमारुतभखें, वेविछुरत तजप्रान ॥ ६२ ॥ उद्धवइतनोअंतरो, व्रजमथुराके लोग ॥ विमुखकरेंवारूपको, जारिदेहसोंयोग ॥ ६३ ॥ पठयेआयेकवनके, कवनमित्रकोजानि ॥

॥ ५५ ॥ जापदकोयोगेश्वरा, लगेरहतअनुराग ॥
साधनसोइकीजेसदा, नामधरेवैराग ॥ ५६ ॥
नैनमूँदिमुखमौनगहि, त्रिगुणरहितनिजधाम ॥
तुमसवहीमेंदेखिहो, आपहिआतमराम ॥ ५७ ॥
मधुकरअंतरकठिनहै, कठिनवातकहिजात ॥ भूख
मरेदिनसातलों, सिंवआननहिंखात ॥ ५८ ॥ य
द्यपियोगप्रसिद्धहै, तोतुमहींलैजाउ ॥ वहुन्योना
हिनपाइहो, ऐसोउत्तमदाउ ॥ ५९ ॥ उद्धवतातेदे
खिहो, तत्वरूपतनमाहिं ॥ सोहममोंसिखवतक-
हा, तुमहींमाधतनाहिं ॥ ६० ॥ यहतोउनको
...तरराय ॥ दादुरतोजलविनजिये,
... ६१ ॥ हैदाउयकठोरके, दा-
...ग्तभमेँ, वेविछुरत

हरिअनुरागी लगनमें, कहो लगन रहि चाँनि ॥ ६४ ॥ घनगुपनन भाँदों भिगा, नहिं जानन परहेन ॥ मधुकरदगों अंगार, कलालोंनग गिरेत ॥ ६५ ॥ तनकारे मननोरिरे, कपटी परम पुनीत ॥ मधुकर लोभी भंवरके, निगिपणक कमीत ॥ ६६ ॥ तुमतो स्वारथके सगे, नहीं बिलगें भाव ॥ भावें यह गहवर चढो, भावें जरिचारि जाव ॥ ६७ ॥ तुमनौ चरणाजिन छुवो, ऐसी गति के वीर ॥ मधुकर रस अनिलालची, नहिं जानत पर पीर ॥ ६८ ॥ रहननिकट तिन श्यामके, तातें निपट न पीर ॥ बिछुरो गेहरि संगते, तव जानो गे वीर ॥६९॥ उध्दव हरि बिछुरन विथा, तुम पैं वीती नाहिं ॥ बिछुरोगे जब श्यामते, तब जानो मन माहिं ॥ ७० ॥ हम तुम तें कैसे कहें, मधुकर सुनो सँदेश ॥ ना हरि जाति न पाँति के, कहा करों उपदेश ॥ ७१ ॥ कित बिधना शिर जीह में, कित दियो ब्रजको वास ॥ कित मिलाप श्रीकृष्ण सों, कित बिछुरनकी आस ॥ ७२ ॥

नयनहमारेमधुकर, आननकृष्णसरोज ॥ व्रज छाँड़ेतादिवसते, वैरीभयेमनोज ॥ ७३ ॥ मनमोहनवेनामहैं, मोहननयनविशाल ॥ मोहनपढ़िकछुमोहिनी, लेमोहीव्रजवाल ॥ ७४ ॥ सवअँग मोहनरूपहैं, मोहनवेणुरसाल ॥ मोहनमूरतिमाधुरी, मोहनवचनमराल ॥ ७५ ॥ वचनवचनमोहीतिया, हमतुमकेतिकवात ॥ सुरनसहितसुरयोषिता, थकितधामनहिँजात ॥ ७६ ॥ एकसमय निशिशरदकी, मोहनवेणुवजाइ ॥ वैनसैनदैसाँवरे, लीन्हींसवैवुलाइ ॥ ७७ ॥ अरसपरसहमसों मिले, कुंजनकियोविहार ॥ सोसुखनाहींवीसरे, सुमिरतवारंवार ॥ ७८ ॥ एकसमयजलकेविषे, करतकेलिअसनान ॥ चीरचोरतरुपैचढे, वेयशुदाके कान्ह ॥ ७९ ॥ वहुत्योनाहिंनवीसरो, भुजवलकीअनुहार ॥ राखिलियेव्रजकुलसवै, नखपर गिरिवरधार ॥ ८० ॥ एकसमैवनकेविषे, कुंजकुंज

नयनहमारेमधुकर, आननकृष्णसरोज ॥ व्रज छाँड़ेतादिवसते, वेरीभयोमनोज ॥ ७३ ॥ मनमोहनवेनामहें, मोहननयनविशाल ॥ मोहनपढ़िकछुमोहिनी, लेमोहीव्रजवाल ॥ ७४ ॥ सबअँग मोहनरूपहे, मोहनवेणुरसाल ॥ मोहनमूरतिमाधुरी, मोहनवचनमराल ॥ ७५ ॥ वचनवचनमोहीतिया, हमतुमकेतिकवात ॥ सुरनसहितसुरयोपिता, थकितधामनहिँजात ॥ ७६ ॥ एकसमय निशिशरदकी, मोहनवेणुवजाइ ॥ वेनमेनदेमाँपरे, लीन्हींसबेबुलाइ ॥ ७७ ॥ अरसपरसहमसों मिले, कुंजनकियोविहार ॥ सोसुखनाहींवीसरे, सुमिरतवारंवार ॥ ७८ ॥ एकसमयजलकेविषे, करतकेलिअसनान ॥ चीरचोरतरुपैचढे, वेयशुदाके कान्ह ॥ ७९ ॥ वहुन्योनाहिंनवीसरो, भुजवलकीअनुहार ॥ राखिलियेव्रजकुलसवे, नखपर गिरिवरधार ॥ एकसमयवनकेविषे, कुंजकुंज

इहाँतुह्मारीकवनसों, कहोकवनपहिचाँनि ॥ ६४ ॥ वचनवचनवाढीविथा, नहिंजानतपरहेत ॥ मधुकरदग्धेअंगपर, कहालोनघासिदेत ॥ ६५ ॥ तनकारेमनसाँवरे, कपटीपरमपुनीत ॥ मधुकरलोभींवासके, निमिषएककेमीत ॥ ६६ ॥ तुमतोस्वारथकेसगे, नहींवेलसेभाव ॥ भावैयहगहवरवढौ, भावैजरिवरिजाव ॥ ६७ ॥ तुमतौचरणाजिनछुवौ, ऐसीगतिकेवीर ॥ मधुकररसअतिलालची, नहिंजानतपरपीर ॥ ६८ ॥ रहतनिकटतिनश्यामके, तातेनिपटनपीर ॥ विछुरोगेहरिसंगते, तवजानोगेवीर ॥६९॥ उध्दवहरिविछुरनविथा, तुमपैवीतीनाहिं ॥ विछुरोगेजवश्यामते, तवजानोमनमाहिं ॥ ७० ॥ हमतुमतेकैसेकहें, मधुकरसुनोसँदेश ॥ नाहरिजातिनपाँतिके, कहाकरोंउपदेश ॥ ७१ ॥ कितत्रिधनाशिरजोहमें, कितदियोव्रजकोवास ॥ कितमिलापश्रीकृष्णसों, कितविछुरनकीआस ॥ ७२ ॥

नयनहमारमधुकर, आननकृष्णसरोज ॥ व्रज छाँड़ेतादिवसते, वैरीभयेमनोज ॥ ७३ ॥ मनमोहनवेनामहें, मोहननयनविशाल ॥ मोहनपढ़िकलुमोहिनी, लेमोहीव्रजवाल ॥ ७४ ॥ सबअँग मोहनरूपहे, मोहनवेणुरसाल ॥ मोहनमूरतिमाधुरी, मोहनवचनमराल ॥ ७५ ॥ वचनवचनमोहीतिया, हमतुमकेतिकवात ॥ सुरनसहितसुरयोपिता, थकितथामनहिँजात ॥ ७६ ॥ एकसमय निशिशरदकी, मोहनवेणुवजाइ ॥ वेनमैनदेमाँचरे, लीन्हीसबैवुलाइ ॥ ७७ ॥ अरसपरसहमसों मिले, कुंजनकियोविहार ॥ सोसुखनाहींवीसरे, सुमिरतवारंवार ॥ ७८ ॥ एकसमयजलकेविषे, करतकेलिअसनान ॥ चीरचोरतरुपैचढे, वेयशुदाके कान्ह ॥ ७९ ॥ वहुन्योनाहिंनवीसरो, भुजवलकीअनुहार ॥ राखिलियेव्रजकुलसवै, नखपर गिरिवरधार ॥ ८० ॥ एकसमैवनकेविषे, कुंजकुंज

वनधाम ॥ हरिहमगोंक्रीडाकरी, पलपलपूरण काम ॥८१॥ एकदिवसयकगोपिका, गईदेहकेद्वार ॥ दधिचोरतरंकेहरी, चालेचापटमार ॥८२॥ एकदिवसहरिमोमिले, गएमाँकरीखोर ॥ मटुकी पटकीभूमिपर, हँसेहारकोतोर ॥ ८३ ॥ ऐसीदिन दिनकीकथा, वर्ततनाहींओर ॥ हमरीवेजानतसवे, मोहनचितकेचोर ॥ ८४ ॥ लीलागोकुगाँउकी, हमजानतमनमाहिँ ॥ उद्धवतुमश्रवणनसुनी, नयननदेखीनाहिँ ॥ ८५ ॥ जोतुमलाएयोगको, यदुपतिकेपरथान ॥ हरिरसकीसीचीसवे, नहिंभावतरसआन ॥ ८६ ॥ पतिव्रताकहँरंककी साखिभरतसवगाउँ ॥ यदपिभजेकोउभूपको तोव्यभिचारिणिनाउँ ॥ ८७ ॥ सीपरहतसागरविषे, मन मिलाप नहिंलेत ॥ मधुकरयहउत्तममतो, स्वातिबूँदसोंहेत ॥ ८८ ॥ मानसरोवरतेउडे, आनभूमि चढिजाहिं ॥ विधिवाहनक्षुधारथी, तोउच्छिष्टन

खाहिं ॥ ८९ ॥ अरुनाई नयनंनकी, मागरनदा निपान ॥ म्यानिग्रदचानकरिये. आमेवङ्खठसमान ॥ ९० ॥ पढाउनयनविगरके. निगमकहूनहैं नीत ॥ उडिचकोगअनर्गक्यो. दिनकरअग्निशशि भीत ॥ ९१ ॥ चलिहैंनवपाममय. कस्तदुखमांप्री- ति ॥ प्राणगयेछांडेनहीं. अपनीउनमर्गीनि ॥ ९२ ॥ हमतोनरदेहीधर्गी. इननीजाननतनाहिं ॥ ग्मनजि भजिययोगको. भंगहोतव्रतमाहिं ॥ ९३ ॥ करते आएसोकरत. ऊंचनीचमोमंग ॥ हमकचहूँनाहि- नकिये, इष्टभावव्रतभंग ॥ ९४ ॥ यद्यपिकुब्जाचतुरहे, तोहुकोंमकीदामि ॥ भवनगवनकीनोहरी, तुमसेसेवकरासि ॥ ९५ ॥ अपलक्षणनेनाडरो, वढे भूपकेपूर ॥ कौवेमाँचेरावरे, कौनुममाँचेदूत ॥ ९६ ॥ यहीकठिनलागतहमें, सुनोश्यामकोहेत ॥ इहाँ जायकुब्जारची, हमेंयोगलिखिदेत ॥ ९७ ॥ जोकछु लिखाललाटमें, बिछुरनमिलनसंयोग ॥ दोपक-

वनकोदीजिये, जानतहैंसबलोग ॥ ९८ ॥ देहध-
रीजाकारनै, लगिहैताकेकाम ॥ मनघटयहरससोंभ-
रो; नहींयोगकोठाम ॥ ९९ ॥ मोरमुकुटकटिका-
छनी, कुंडलतिलकसुभाल ॥ पीतांबरक्षुद्रघंटिका
उरवैजंतीमाल ॥ १०० ॥ करलकुटीमुरलीगहे, घुं-
गरवारेकेश ॥ वेहमरेनैननवसें, श्याममनोहरवेश ॥
॥ १ ॥ तवउद्धवऐसीकही, धन्यधन्यव्रजनारि ॥
प्रेमभक्तिरसवशकिये, श्यामभुजाउरधारि ॥ २ ॥
यहलीलातुमकारने, गोपवेशअवतार ॥ निर्गुणते
सगुणहुभये, तुमतेकरनविहार ॥ ३ ॥ निगमजा-
हिखोजतरहे, अगमनपावतअंत ॥ सो तु-
ह्मारजूँठनगहे, श्रीपतिश्रीभगवंत ॥ ४ ॥ यो-
गेश्वरपावेंनहीं, सिद्धसमाधिलगाय ॥ सोतुमरे
रसवशभये, वनवनचारतगाय ॥ ५ ॥ कहतसु-
नतऐसीकथा, उहाँरहेषटमास ॥ तवउद्धवआज्ञाल-
ई हरिचरणनकीआस ॥ ६ ॥ [illegible]

दामिलीं, मिलेगोपिअरुग्वाल ॥ वंदनकरिकरिसबहिंसों, उद्धवचलेकृपाल ॥ ७ ॥ नंदकही यशुदाकही, गोपिनकहीवहोरि ॥ वेरजधानीरमिरहे, ब्रजकोनातोतोरि ॥ ८ ॥ अवकबहूँकरिहें कृपा, सेवकअपनेजानि ॥ हरिहमकोनहिंवीसरो, पूरवलहिपहिंचानि ॥ ९ ॥ तबउद्धवआएइहाँ, कृष्णचंद्रकेधाम ॥ पाँयलागिवंदनकियो, बोलतलेलैनाम ॥ १० ॥ ग्वालबालसबगोपिका, ब्रजके जीवअनन्य ॥ तुमहिंपाँयलागनकहे, सुनहुदेवब्रह्मन्य ॥ ११ ॥ नंदयशोदाहेतकी, कहियेकयाबनाय ॥ केवेजानततुमभले, मोपेकहीनजाय ॥ १२ ॥ वेचितितेटारतनहीं, रामकृष्णकीजोर ॥ मधुनायकसुरलीगहे, मूरतिमधुरकिशोर ॥ १३ ॥ अलगोपिनकेप्रेमकी, महिमाकहूंअनंत ॥ मैंपूँछीपटमांसलों, तोहूँनपायोअंत ॥ १४ ॥ देहगेहनबलोंडिके, परनरूपकोध्यान ॥ उनकोभजनविचारिए, अरुनव

फीकोज्ञान ॥ १५ ॥ संतभक्तभूतलजिते, तेसवव्र-
जकीनारि ॥ शरणशरणलागेरहें मिथ्यायोगविचा-
रि ॥ १६ ॥ उनकोगुणनितगाइए, करिकरिउत्तम
प्रीति ॥ मैंनाहींदेखीसुनी, व्रजवासिनकीरीति ॥
॥ १७ ॥ तबहरिउद्धवतेकही, हूंजानतसबअंग ॥
मैंकबहूँछाँडौंनहीं, व्रजवासिनकोसंग ॥ १८ ॥ व्र-
जताजिअंतनजाइहौं, मेरेतोयहटेक ॥ भूतलभारउ
तारिहौं, धरिहौंरूपअनेक ॥ १९ ॥ उद्धवतुमजानौ
नहीं, प्रेमभक्तिकीरीति ॥ गोपिनकेसम्बन्धते, उप-
जैप्रेमप्रतीति ॥ १२० ॥ कृष्णभक्तसोजानिये,
जाकेअंतरप्रेम ॥ राखेअपनेइष्टको, गोपिनका-
सोनेम ॥ २१ ॥ यहलीलाव्रजवासकी, गोपी
कृष्णसनेहु ॥ जनमोहनजोगावहीं, तेनरउत्तम
देह ॥ २२ ॥ जोगावहिंसीखेसुनें, मनवचकर्मस-
हेत ॥ रसिकराधपूरणकृपा, मनवांछितफलदेत ॥
॥ २३ ॥ गोपीअरुउद्धवकथा, भूपरपरमपुनीत ॥

जहाँवसतव्रजराज॥गोरसवेंचतहरिमिलें, एकपंथदो काज ॥ १ ॥ चौपाई ॥ प्रभुपूरणब्रह्मण्डअखंडा॥ जाकेरोमकोटिब्रह्मंडा ॥ प्रभुसँगगुणअरुब्रह्मकहाए ॥ मथुरातेवृंदावनआए ॥ तहँदेवलोकमुनिजेते ॥ सवगोपग्वालिनीतेते ॥ देवकिसुतनामधराए ॥ वसुदेवहिंरूपदिखाए ॥ जवगोकुलइच्छाकीन्ही ॥ वसुदेवहिंआज्ञादीन्ही ॥ जिननंदभवनपहँजाए ॥ तहँनंदकेलालकहाए ॥ छंद ॥ जन्मलियोवसुदेव-केगृह नंदकेवालकभये ॥ छपनकोटियदुवंशमाया यूथगोपीग्वालके ॥ कृष्णकेसँगवहुतवालक गोच-रावनवनगए ॥ हर्षिगावहिंदानलीला सुनौसज्जन-कानदे ॥ चौपाई ॥ सवघरघरकीव्रजनारी ॥ दधिगोरसमधुवेंचनहारी ॥ मिलियूथमतोसवकीन्हो ॥ यमुनातटमारगलीन्हो ॥ जहँमोहनधेनुचरावें ॥ मधुरे स्वरवेणुवजावें ॥ जहँवाटसवनकीमोड़ै ॥

यशहमसोंलीजिए ॥ नंदकोसुतजानिहमसों ग
र्वबहुतनकीजिए ॥ चौपाई ॥ तबग्वालस
खामिलिघेरे ॥ अरिकामटुकीमहँतेरे ॥ कोइहाथ
डारिदधिकाढे ॥ तबदूँधचहूँदिशिबाढे ॥ एकयहग्वा
लिनीउठीरिसाई ॥ प्रभुकातुझरीतिचलाई ॥ कछु
माँगदहीमरिलीजे ॥ नईदानकीरीतीकीजे ॥ ज
बकंसराजसुनिपैहै ॥ तुमकोउपदेशपठैहै ॥ छंद ॥
कंसराइकेराजमेंप्रभु ॥ नईरीतिनकीजिए ॥ नंद
केगृहदूँदउपजे ॥ दुखपरेतनछीजिए ॥ सदाआवत
जातमथुरा ॥ दानहमसोंकिनलिए ॥ दहीमाँगतछाँ
छदुर्लभ, नीरयमुनापीजिए ॥ चौपाई ॥ जबग्वा
लिनिकहिऐसीबाता ॥ तबहँसिबोलेत्रिभुवननाथा॥
तुमतीनलोकमेंदेखो ॥ हमकोजनिमानुपलेखो ॥
हमहींसबदैत्यसँहारा ॥ यककाकरेकंससविचारा ॥
तुमकंसकोकरहुमाना ॥तेहिकालिकरोंपिसमाना॥
अबउग्रसेनभएराजा ॥ हमहींअबताहिनिवाजा

हमसोंहठवादनकीजे ॥ हमैंदानहमारोदीजे ॥
॥ छंद ॥ जाकोवेदपुराणगावे मनमानेंसोईकरे ॥
परअधीनवलहीनजोनर कंसकेडरसोडरे ॥ द-
हीगोरसकोनवूझे देखआभारआपनो ॥ जडित
हीरालालकंचन माँगमोतिनसोंवनो ॥ चौपाई ॥
कितमोतिनमाँगविराजे ॥ कितपाँयननूपुरछा
जे ॥ कितकंठरतनकीमाला ॥ हीरामाणिकगूथे
लाला ॥ वाजूवंदकँगनभलसोहे ॥ नकवेसरसोंजग
मोहे ॥ सिरवेनीगूँथीवहुभाँती ॥ तहँलागीरत्ननकी
पाँती ॥ मणिमाणिककंगनडोलें ॥ कटिमधुराकिं
किणिवोलें ॥ कितपाटपितंवरपहिने ॥ कितपोड-
शभूषणकीन्हे ॥ छंद ॥ हृदयदेखिविचारि
ग्वालिनि कुंजवनकीवाटहे ॥ लूटिलेइकोसवेभूष-
ण कोतुह्मारेसाथहे ॥ इहांसवकोदानलागे हठनकी
जेसुंदरी ॥ कंसतेहमडरतनाहीं सुनतवातेसवडरी॥
॥ चौ[illegible] यककंगनलेजवदीन्हा ॥ हरिसों

यशहमसोंलीजिए ॥ नंदकोसुतजानिहमसों ग-
र्वेचहुतनकीजिए ॥ चोपाई ॥ तवग्वाल-
सखामिलिघेरे ॥ अरिकामटुकीमहँतेरे ॥ कोइहाथ-
डारिदधिकाढे ॥ तवदूँधचहूँदिशिवाढे ॥ एकयहग्वा
लिनीउठीरिसाई ॥ प्रभुकातुहारीतिचलाई ॥ कछु
माँगदहीभरिलीजे ॥ नईदानकीरीतीकीजे ॥ ज-
वकंसराजसुनिपैहै ॥ तुमकोउपदेशपठैहै ॥ छंद ॥
कंसराइकेराजमेंप्रभु ॥ नईरीतिनकीजिए ॥ नंद-
केगृहदूँदउपजे ॥ दुखपरेतनछीजिए ॥ सदाआवत
जातमथुरा ॥ दानहमसोंकिनलिए ॥ दहीमाँगतछाँ-
छदुर्लभ, नीरयमुनापीजिए ॥ चोपाई ॥ जवग्वा
लिनिकहिऐसीवाता ॥ तवहँसिवोलेत्रिभुवननाथा ॥
तुमतीनलोकमेंदेखो ॥ हमकोजनिमानुपलेखो ॥
हमहींसवदैत्यसँहारा ॥ यककाकरेकंसविचारा ॥
तुमकंसकोकरहुगुमाना ॥ तेहिकालिकरोंविसमाना ॥
अवउग्रसेनभएराजा ॥ हमहींअवताहिनिवाजा ॥

ताजतजिचरणनपरीं ॥ कुंजकीलाजगमायग्वालि-
निजन्मजन्मसेवाकरीं॥रहमिमोहनसंगहिलिमिलि-
मणिमाणिकदीपकधरें ॥ कृष्णराधेयूथग्वालिनि
कुंजवनक्रीड़ाकरें ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ थकरहम्समँड-
लमभुठाना ॥ सबगोपिनकेमनमाना ॥ कोईगंधधूप
लेआवे ॥ नैवेद्यकीयुक्तिवनावे ॥ तहँराधापानखवावे
॥ कोइमाथेचँवरडुलावे ॥ कोइतालमृदंगवजावे
॥ कोइआरतिमंगलगावे ॥ नृत्यतनादमृदंगी
वानी ॥ प्रभुमंडलकरतवखानी ॥ जहँवाजतताल
मृदंगा ॥ मधुरीधुनिवेणुउपंगा ॥ करतालवजेकी
घोरी ॥ रसमंडलकीवनघोरी ॥ तहँमाँझकिशोर
किशोरी ॥ दोउकृष्णराधिकाजोरी ॥ छंद ॥ श्रीकृ-
ष्णघंटवजायआरतियूथमिलिसेवाकरे ॥ गिरिजानं
दप्रसादपावेजन्मजन्मकेदुखहरे ॥ जेनरगावहिंदान
लीलासुनहिंजेचितलावहीं ॥ ततोपावहिं प्रेमभक्ति
औविष्णुलोक सिधावहीं ॥ इतिदानलीलासंपूर्णा ॥

विनतीवहुकीन्हा ॥ प्रभुयोरवहुतकछुलीजै ॥ अ-
वपारसवनकहँकीजे ॥ एग्वालकरीचतुराई ॥
तिनऔघटनावछिपाई ॥ जवआइकृष्णसोंभाषा ॥
प्रभुनाकहाकोइराखा ॥ अकुलाइउठींसँगसाती ॥
प्रभुसाँझपरीयहिभाँती ॥ तवकृष्णसवैसमुझावे ।
अवनावकहाँकोउपावे ॥ छंद ॥ औघटघा-
टगंभीरयमुनारातकोनाहिंपथचलै ॥ वाघसिंहवट-
पारवनमेंकवनतुमकोभलिकहै ॥ झूँठमायामोह
परिजनस्वप्नहैदिनचारिकै ॥ कोउकाहूकेसंगना
हींअंतदेखविचारिकै ॥ चौपाई ॥ जवग्वालि
निकेमनमाना ॥ धिगजीवनकैजगजाना ॥ धिग
जीवनधनपरिवारा ॥ तुमहींप्रभुनाथहमारा ॥
अवचरणशरणप्रभुदीजे ॥ तनमनअपनोकरिली
जै ॥ अवचरणशरणसवलागी ॥ हमहंप्रभुपरमस-
भागी ॥ पथिरातिपरीअँधियारी ॥ जनिछाँडियकृ
ष्णमुरारी ॥ छंद ॥ जन्महमरोसुफलकरिये

ो ॥ वसैद्वारकाअंतर्यामी ॥ वासुदेवसंकर्षणछा-
ं॥ प्रद्युम्नओअनिरुद्धविराजें ॥ ककाकलियुगना-
अधारा ॥ प्रभुसुमिरोभवउतरोपारा ॥ साधुसंग
रहरिरसपीजे ॥ जीवनजन्मसुफलकरिलीजे ॥१॥
खाखोजोसकलजहाना ॥ जाकोगावैंवेदपुराना ॥
नेभयनामहरीकोलीजे ॥ चरणकमलकोध्यानध-
ीजें ॥ २ ॥ गगागुणगोविंदकेगावो ॥ मायाजा-
भूलिजनिजावो ॥ धनयौवनतरंगपतंगा ॥ क्ष-
मेंक्षारहोइयहअंगा ॥ ३ ॥ घघाघटघटबोलेभाई ॥
लथलमेंप्रभुरहेसमाई ॥ ऊँचनीचज्ञानकरिदेखो ॥
कब्रह्मसकलमेंलेखो ॥ ४ ॥ ननानिगमखोजक-
रिदेखो ॥ दूजोअवरनाहिंकोउलेखो ॥ सप्तद्वीप
औरनवखंडा ॥ तामहिंछायरह्योनवखंडा ॥ ५ ॥ च-
नाचितनिश्चयकरिराखो ॥ मिथ्यावादझूँठकरिभा-
खो ॥ सत्यशब्दतपहोतप्रमाना ॥ झूंठवचनसोपाप
समाना ॥ ६ ॥ छछाछलबलतजोविकारा ॥ निर्म-

॥ अथ मित्रप्रशंसा ॥

॥ दोहा ॥ देहगेहसुधिबुधिछुटै, छुटैधर्मतपनेम ॥ जगमेंकछुदीखतनहीं, होतअधिकजबप्रेम ॥ १ ॥ वनवनमेंमारेफिरै, घरजनकछुनसुहात ॥ जपतइ तएकान्तमें, मित्रामित्रदिनरात ॥ २ ॥ इतिमित्रप्र

॥ अथ सुदामजीकी बाराखडी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ककाकमलनयननारायणत्या

हृदयेभाई ॥ रोमरोमप्रभुरहोममाई ॥ पिंडब्र-
ह्माडरह्योसमपूरा ॥ सदानिकटहरिवामनादूरा ॥
॥१४॥ ननानामहरिहि कौर्लीजे ॥ हरिभक्तनकीसे
वाकीजे ॥ साँचिभक्तिभगवानकोभावे ॥ प्रेममहि-
तरसनागुणगावे ॥ १५ ॥ ततानरीसुफल्कमाई ॥
नरदेहीसुमिरनकोपाई ॥ हरिभजगर्भवासनछूटो ॥
रामनामएमोधनलूटो ॥ १६ ॥ थथाथोगरहीजीव
नहैभाई ॥ हरिबिनजन्मवृथारथजाई ॥ निसदिनहु
हरिनामउचारो ॥ तनुकात्रिविधतापनिरवारो ॥
॥१७॥ ददादेखनहीजगकोव्यवहारा ॥ मायाजाल
फैल्योसंसारा ॥ बंधनतेछूटनकोनाहिये ॥ सरणजा-
संगनतेरहिये ॥ १८ ॥ धधाधरणीधरहिरदेधरि
भाई ॥ संतनकेप्रभुसदासहाई ॥ सदानमीसंतनि-
पनहिंनररी ॥ भवजलनीरनिसतारनही ॥ १९ ॥ न-
नानेतरसौनोसादी ॥ प्रेमसहितनामगुणगावो ॥ दु-
खिनाधर्मगुणोंमनभाता ॥ नेतजनकोई [illegible] ॥

लनामजपोयकसारा ॥ कामक्रोधकोतजोप्रसंगा ।
सदारहोसंतनकेसंगा ॥ ७ ॥ जजाजपोजगतपतिई
शा ॥ जाकोध्यावेंसुरतेतीशा ॥ निशिवासररहोल
लाई ॥ हरिपदकमलसदासुखदाई ॥ ८ ॥ झझ
झेरनकीजोभाई ॥ शिरपरकालरह्योमड़राई ॥ चे
नहोयहरिशरणेरहिये ॥ कालत्रासकाहेकोसहिये
॥ ९ ॥ ननानिमिषनिमिषहरिरूपनिहारो ॥ चित
ध्यानपलकनाहिंटारो ॥ आठौंयामरहौलौलाई ।
चितचरणनमेंरहेसमाई ॥ १० ॥ टटाटारोजगत
कोनाता ॥ नहिंकोइमातपितासुतभ्राता ॥ हरिसों
हितूनहींकोइअपना ॥ जगव्यवहाररैनकोसपना ॥
॥ ११ ॥ ठठाठाकुरपरमसनेही ॥ जिनयेदीनीसुंद
रदेही ॥ नरदेहीकोलाहौलीजे ॥ प्रेममग्नहोयहरि
रसपीजे ॥ १२ ॥ डडाडामाडोलचित्तमतिकरो ॥
हृदयध्यानहरिहीकोधरो ॥ औरदेवकाहेकोध्यावे ॥
दृढविश्वासविष्णुगुणगावे ॥ १३ ॥

॥ २० ॥ पपापरेपरेसवजन्मगमायो ॥ गुणगा प्रभुकोनहिंगायो ॥ मायाभर्मभूलिरहोअंधा ॥ ज न्मगमायोकरिकरिधंधा ॥ २१ ॥ फफाफिरिफिरि परेमोहकेफंदा ॥ अजहुँनचेतेमूरखअंधा ॥ गुरुच रणनकीधरुमनआशा॥हरिभजिमेटोयमकीत्रासा॥ ॥ २२ ॥ बबाबोलोअमृतवानी ॥ स्नेहप्रीतिरसना गुणसानी ॥ हरिहीराहिरदैधरिराखौ ॥ कटुकबच नमुखतेजनिभाखौ ॥ २३ ॥ भभाभूल्योमनसमु झावौ ॥ जासोंभवजलफेरिनआवौ ॥ ऐसीभक्ति करोमनमेरा ॥ जरामरणहोवैनहिंतेरा ॥ २४ ॥ म मामोहजालभवसागरभारी ॥ धीमरकालमनिसंसा री ॥ जाललियेयमफिरतअहेरा ॥ हरिविमुखन परदेतदरेरा ॥ २५ ॥ ययायहअवसरनहिंवारंबा रां ॥ तातेपुनिपुनि[illegible] ॥ [illegible] चतुरसुजाना ॥ [illegible]

। २६ ॥ रराटनाहरिहीसों

भयउउजेरा ॥ ३३ ॥ ललालेवेकोहरिजीकोनामा ॥ देवेकोअनदानसमाना ॥ धरनेकोप्रभुजीकोध्याना ॥ सेवनकोगुरुचरणसमाना ॥ ३४ ॥ छछाछाँडनविषयवदनजोचाहिये ॥ सद्गुरुचरणनिकेहोरहिये ॥ नामम‍धुररसापिवोसुजाना ॥ गर्भवासनहिंहोयपयाना ॥ ३५ ॥ बाराखडिआनँदगुणगावों ॥ सबसंतनकोसीसनवावों ॥ दीनपतितहैदाससुदामा ॥ नमस्कारगुरुदेवसुनामा ॥ ३६ ॥ इति सुदामाजीकी बाराखडीसंपूर्णा ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

॥ अथ मधुरवचनप्रशंसा ॥

सो०—सबै अनन्दित होय, मधुर वचनके सुनतही।
तेहिते वोलिय सोय; वचनहु काह दरिद्र ता॥१॥

॥ अथ सत्यप्रशंसा ॥

दो०—सत्यहिते रवि तपतहैं, सत्याहिपर भुवभार ॥
वहै पवनहू सत्यते, सत्याहि सवआधार ॥ १ ॥

हूंपतित मेरी कौन द्योसहेहैगति रमापतिराखौ
लाजमोसेहूपतितकी ॥ ४ ॥ केऊकरैसेवाकेऊराखतहैं
लेवादेवाकेऊकरिखानताकेखेतहीकाहिलाहे ॥ केते
कमेवासीकेतेदानहूंकेतेआसीकेतेकगाननानाविषय-
कीविधिरखिलाहे।केतेमहाक्रूरकेतेसवगुणपूरकेतेधी
रकेतेअतिबांकेरणखेतमेंअरिलाहे ॥ मैंतोमहाक्रूर
ताकोउद्यमनमूरएकयशोमतवारोकारोहमारोउमि-
लाहे ॥ ५ ॥ केऊप्रेमलक्षणाभक्तिमेंविचक्षणहै
नीकेभांतिसेवाकरजानेनिधिज्ञानकी ॥ केऊनत्वबो-
धमेंतीआतमकोशोधकरैंमाधेंनित्ययोगगतिजानेरी
धपानकी ॥ केऊनतुभामनाएचासनायतनमहैंकेऊ
केउपासनागणेशशिवभानकी ॥ हूंतोहूंअजानना-
केनाहूंसेपिछाननाहीं कोउकछुज्ञानेहूंतोजानूंना
धजानकी ॥ ६ ॥ जैसेमगनाम्नकोगानिलिसो
पेटानरेलाधागृहनीचराम्यो पांचमननाधरो ॥
गनितलियोपरीभिनकोमानारेउदम्नाहिंगम्योदन

कमलानिवासनिजदासनकीपूरेआशताकेविशवास-
विषभख्योमीराबाईहै ॥ केशवकमलनैनसंतनकर
नचैनसैनहितभयेभूपमंजनकोनाईहै ॥ इंद्रजूकोह
स्योमानसुदामाकोदियो दानभक्तजानिछानिनामदे
वजीकीछाईहै ॥ नंदकेकन्हाईनिजसंतनसुखदाईव
लदेवजूकेभाईसोहमारेहूसुहाईहै ॥ २ ॥ काहूकेअ
धारसेवाबाणिजव्योपारहूकोकाहूके अधाराथितवित
खेतगाँवको ॥ काहूकेअधारअनुसारभ्रातबंधुनको
[illegible]
[illegible]
धामको ॥मैंतोनिराधारमेरीहरिहिकरोगेसारमेरेतो
अधारएककेवलहरिनामको ॥ ३ ॥ केऊकर्मवादीकेऊ
अन्नभौमसादीभयेकेतनकीमतिभईन्यायसांख्यमत्त
की ॥ केतेजगदानीयमनेमकोप्रमाणकरेंकेतेपरती
तगहेंतीरथहूव्रतकी ॥ केऊब्रह्मचारीकेऊयोगीजट
धारीभयेवानप्रस्थकेतनकोदयासाँचसत्यकी ॥ मैंतो

धुमेटनदुखद्वंद्वके ऐसेतोअनेकरि ।विधग्रंथनमेंकही
है॥ गोपमेहतेउधारेराजावंधतेनिक ।ारेभारतमेंपारथ
हितएतेशरसहीहै ॥ नामाकवीरग ीधगाणिकारुकी
रतारेचीरबढिद्रौपदीकोजगयशलह हि ॥ वेरमाँझ
धारेमरोदुखवारदेके एहोनाथकरुण ।निधि मेरोहाथ
हीगहीहै ॥ १० ॥ छंदमत्तगयं ६ ॥ आरतने
कगुहारसुनीतबदीनदयालुकिरीति ग्रीकी ॥ दोरत
भेतजिकेनिजधामसुबातसुनीतबभी रपरीकी ॥ मेरि
सबेराविलंबरहेसुकहातकसीरकरीजु हरीकी ॥ धाय
यबेरसुनीचबटेरकरीनहिंबेरसुबेरकर कि ॥ ११ ॥
तादिनटेरसुनीततकालसहायककाज कीआनखरेहो
॥ संतनहेत अनंत अपार जु आपर रवे अवतारधरे
हो ॥ मेरीगुहारसुनीनहिंकानसुकान हकहोकिनबार
परेहो ॥ पौढरहेचटपातमेंनाथहोभो रभयेकिजुराज
करेहो ॥ १२ ॥ कवित्त ॥ तबतोभक्त ननसहायकाज
थजराजकंसकोबिदारिमातिधरीनानिर ामामाकी ॥

वालदभरल्यायेज़ ्लाहाके दयालुहोयगवुहिंजिवाई अरुछानछाईनाम ाकी ॥ संतनकोप्रणवालगणरा स्यो व्यालसेतं ोविपात्तिहरिसंपतिअमितदेसुदामा की ॥ अहोवर ्वीरतुमद्रौपदीकोवाढ्योचीरहरत क्योंनपीर अबं ासेनिकामाकी ॥ १३ ॥ द्रौपदी की लाजकाजद्वा रिकासे दौरिआयेचीरकोवढायटेक राखीसभ्यशीलक ी ॥ पुत्रहेतनारायणनामलेततत कालकाटेयमजा ङगतिभईअजामीलकी ॥ मूठिए कचावलकी खा तहिनिहालकियो कैसीदशाभईउन ब्राह्मणसुदामकी ॥ मेरेहुंकरोवीढीलहोतहोकहा वमीलतवतोनक रीढीलटेरसुनापालकी ॥ १४ ॥ कवकोपुकारतहं ेसुनतनएकोबात एहोनँदलालतुम कैसेप्रतिपालहो ॥ कहतेदयालुसोतोदयाउनदेखि यतमरीमतिऐसं ोआछेनीकेपशुपालहो ॥ धन्यो होनृसिंहरूपतं हींप्रल्हादकाज अवतोनलाजकछु गोधनमैंग्वालहं ै ॥ डार्योतेलकाननमेंवस्योजाय

माविभीषणकोछिणमहिँ राजाकियोअरीकारियेवो कहामोसेएकटूकेपर ॥ मोपरपरीहैभीरदेखतहोवि नापीरएहोघनश्यामघनवृथाखेतसूकेपर ॥ करनी सहायजोतोवेगदेसहाय करोपीछेकहाहोतकियेओं सरकेचूकेपर ॥ २१ ॥ कहाभयोजोपेतुमद्वारिकाकेरा-जाभयेगोकुलकेवासीखाँसीछाछकेपिवय्याहो ॥ क वहूँमच्छवाराहनृसिंहपरशुरामभये कवहूँभयेवाम नअच्छेस्वांगीभैंवय्याहो ॥ धेनुकेचरय्यागुंजमाल केधरय्यापुनिवंसीकेवजेय्याअरुवनमेंरहेय्याहो ॥ टेरतहोंप्रातरातवूझीनाहिंमेरीवातजनहिमतातभृ-गुलातकेखवय्याहो ॥ २२ ॥ कौरवकोवंसवान्यो कंसजूकोकंधतोन्योगोपिनकोदधिचोन्योदोऊखटपा रेहो ॥ वृंदाअरुवकीवोरीकुविजासोंप्रीतजोरीदा नदेतवलिवोन्योचोरचिरचोरहो ॥ कहहूँकुलीनको सहायकरिसुनीनाईवेश्याअरुकीरगीधएतेनकोनारे हो ॥ जरासंधसतीहारेद्वारिकापधारेतुमरव्वनकेका

जसारेऔरकेविगारेहो ॥ २३ ॥ गौतमकीनारीता
कीकथावहुतविस्तारी यद्यपिउधारीतनछिद्रउघरा
यके ॥ दुःशासनद्रौपदीकेसभावीचकेसखैंचेतवला
जराखलईलाजकोगमायके ॥ भयोवलहीनजवव्र
तिहिअधीरछिन्नतवगजकाजहरिआयेतुमधायके ॥
दीनकेदयालप्रभुयामेंतोसँदेहनाहींकरतसहायआप
नीकेतनतायकै ॥ २४ ॥ काहूकेतोहेतकरिखेतहीं
निरायदियोकाहूपरप्रीतिकाजवालदभरिल्यायेहो ॥
काहूकेमँजूरहोइछानिहींछवायदईनाईहोइनृपतिको
आरसीदिखाईहो ॥ काहूपेदयालहोइदारिद्रवि
दारिदियोकाहूहेतसावहनहुंडीसिकराईहे ॥ करि
होजोहोमजापदेखतहोआपसवमोंमोतोतिहारेनइ
वातहीवनाईहो ॥ २५ ॥ जानतहोभलीविधिवड
विश्वासीपरछलाकोकरेय्याऐसोदेख्योकोईधूतना ॥
पांडुपुत्रहेतकुरुक्षेत्रमेंमचायोयुद्धकौरवमेंमयोरवेको
ऐसोकोउदूतना ॥ महांनिरदर्दर्[illegible]नजात

औपुराणकहैंजानतहौंजाकेअवखोवेकीविचारीहै॥
द्वारकाकेवासीभयेजातकेभवासीअवमेरीहोतहाँसी
यामैंहाँसीतोतिहारीहै ॥ २९ ॥ पीपासोपापीअजा
मीलसोंसुरापीअरुव्याधसोंअधमतान्यो अहल्याउ
धारीहै ॥ [illegible]
थीसेहजारबारपुनिवारत्यारीहै ॥ कुवरीरैदासपी
पाधनानामदेवछीपा ऐसेतोअनेकतारेतान्योनाग
कारीहै ॥ कैतेकअधमतारेकेऊअधमीउधारेस
वहीकेकाजसारेअववारीसुमारीहै ॥ ३० ॥
करुणानिधिकीन्हसुनोविनतीसुनवेकेविनाप्रभुकैसे
सरैगो ॥ दीनदयालदयाकरियेजोगईकरियेतोपला
उधरैगो ॥ मोसेकपूतकेकामकृपानिधियाजगमेंक
हौकौनकरैगो ॥ तातेमैंनाथकोहाथगह्योरघुनाथवि
नादुखकौनहरैगो ॥ ३१ ॥ करतअपराधभोरतां
प्रतरकोरनितअतिहीकठोरमतिवोरकोनकामहौं ॥

तिनकों आठोयामहीं ॥ अरचानजानूँकछूचरचान वृझतहींकरिहेतप्रातसेनलेतहरिनामहीं॥सवतकसी रवलवीरपेरीमाफकरो कहैमाधोदासप्रभुतिहारोगु-लामहीं॥३२॥ ॥ दोहा ॥ याकरुणावत्तीसिको,प-ढेंसुनेंनरनारि॥ तिनकेसवदुखदंदको, काटेंकृष्णमुरारि॥३३॥इतिसुं॰ मा॰ कृतकरुणावत्तीसी सं॰

॥ अथ पंचरत्नवर्णन ॥

दो॰–तुलसीयहिसंसारमें, पंचरत्नहैंसार ॥
साधुमिलनऔहरिभजन, दयादीनउपकार ॥ १ ॥
शशिकलंक हरिभृगुलता, वडवानलहिसमुद्र ॥
घटेरागित्यागेंनदी, शेषभूमिविपरुद्र ॥ १ ॥

॥ रासकी गति ॥

साधेरनाधेरनानाधेरनानाधेरधेरनानाधेरनाना नानाधेरनानानाधेरनाधेरनाधेरननधाधेरनधा धेरनधेरनधेरनानानाधेरधा ॥ ॥ ॥

॥ अथनरसीमेहताकीहुंडीलि० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्रीगणपतिकोपहिलेध्यावौं ॥ जवनरसीकीहुंडीगावौं ॥ परमभक्तमेहताहैनरसी ॥ रामभजनमैंवुद्धिहैसरसी ॥ १ ॥ निशिदिनरामकृष्णचितधरै ॥ झूँठींदंतकथानहिंकरै ॥ जाकोहैजूनागढवास ॥ रामभजनमेंरैहहुलास ॥ २ ॥ तहँआयेसाधूजनदोय ॥ वा

सोलेकरहिगेसोय ॥ प्रातजागपूँछतहेंतहाँ ॥ को नलिखतहेहुंडीयहाँ ॥ ३ ॥ एकमसखरेंकीन्हीहाँ सी ॥ सुनियोहोतीरथकेवासी ॥ घरमेहतानरसीके जावो ॥ चाहेजितनीहुंडिलिखावो ॥ ४ ॥ उनके धनकोछेडोनाहीं ॥ वहुतेरीलक्ष्मीघरमाहीं ॥ जव साधूपूँछतघरआये ॥ नरसीजीघरबैठेपाये ॥ ५ ॥ रामरामसाधूवोलेजव ॥ हाथजोड़नरसीवोलेतव ॥ उज्वलजलसेपावपखारे ॥ ऊंचेआसनपरवैठारे ॥ ६ ॥ पांवपखारिलियोचरणामृत ॥ धनधनअप नोभाग्यवखानत ॥ श्रद्धासेफलकरिरसोई ॥ पा यलियोसाधूजनदोई ॥ ७ ॥ चलकरियेआरामक रायो ॥ नरसीपगचापनकोआयो ॥ साधुनकोपूछ तहेंऐसी ॥ मोपरकिरपाकीनीकैसी ॥ ८ ॥ साधू बोलेवानवनाय ॥ नरसीजीसुनियोचितलाय ॥ मं गतमिलनचलनतिसाथ ॥ हमद्वारिकापुरीजात ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ नगरदारिकाहुंडी

करो ॥ सोचतनरसीकहाकहुँइनको ॥ करमभोग भेजेहैंजिनको ॥ १० ॥ मेरेतोहरिनामअधारा ॥ एहीबाणिजकरोंन्यौप्यारा ॥ अवहरिकीअस्तुतीकरतहै ॥ तासुमिरेसवकामसरतहै ॥ ११ ॥ गजसहाय कीन्हीततकाला ॥ गरुडछाँडधायेगोपाला ॥ परस शिलाचरणरजधारी ॥ गौतमनारिअहल्यातारी ॥ १२ ॥ पृथ्वीअसुरडुवाईजवै ॥ धरिवराहतनुआ नीतवै ॥ हिरणाकुसजवखरोरिसायो ॥ नृसिंहरूपप्रहलादवचायो ॥ १३ ॥ चारमासतुमवलिकेद्वा रा ॥ अपपधारेश्रीकरतारा ॥ मान्योपापीरावण राई ॥ लंकविभीपणकोतुमदाई ॥ १४ ॥ सुतसनेह हरिनामउचान्यो ॥ अजामीलसोंपापीतान्यो ॥ आठौयामपढातीकीर ॥ गणिकातारीश्रीरघुवीर ॥ १५ ॥ जुँठावोरभिल्लिणिहाथ ॥ आपअरोगेश्री रघुनाथ ॥ भेजीकंसपूतनाआई ॥ वनीरूपअति सुंदरताई ॥ १६ ॥ श्रीमुखमेंजवअंचलदीनो ॥

ताकोमाणखींचितवलीनो ॥ शकटासुरराक्षसजव आयो ॥ बैठागाडेवदनछिपायो ॥ १७ ॥ दीन्हीलातकन्हयालाला ॥ मान्योपापीकोततकाल ॥ तृणावर्तअतिगरदउठाई ॥ नंदगाममेंधूमम चाई ॥१८॥ लेकरकान्हगयोआकासा ॥ मुष्टिकमा रकियोतवनासा ॥ वालपनेमेंमाटीखाई ॥ मातय शोदामारणआई ॥१९॥ देखुमातमैंकछूनखायो ॥ तीनलोकमुहमेंदरसायो ॥ देखयशोदाविस्मय भारी ॥ पलमेंमायादूरीकरी ॥ २० ॥ दोहा ॥ पयउफनातोदेखकर, गईयशोदादौर ॥ पीछेद धिकीमाथनी, फोडीनंदकिशोर ॥ २१ ॥ रीस भरीमाताजवै, सुतकोपकन्योधाय ॥ ऊखलसों बांध्योतवै, नंदनंदव्रजराय ॥ २२ ॥ दोरूख नकेवीचमें, ऊखलखैंच्योजाय ॥ नलकूवरपरगट भये, टूटपरेवृक्षराय ॥ २३ ॥ नारदजीकोशाप जो, दूरभयोततकाल ॥ चढ़विमानमरपरगये

तिनकोकियोनिहाल ॥२४॥ वत्स-सुरवछराभयो रूपकपटकोधार ॥ श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्यो पाँवछाड ॥२५॥ वरुणलेगयोनंदको, यमुनामा हिंडुबोय ॥ पितासाँचजानीतवै, कृष्णछुडायेमोय ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ चोरेचीरजवैघनश्याम ॥ व्रज वासिनकेपूरणकाम ॥ ऋषिपत्नीकेघरकेजीवण ॥ आपअरोगेजगकेजीवण ॥ २७ ॥ जलयमुनाकोमो टोभाग ॥ जामैंनाथ्योकालीनाग ॥ वच्छग्वालव्र ह्माहरिलीन्हा ॥ श्रीनँदलालफेरसवकीना ॥ २८ ॥ व्रसएकलागीसवमाया ॥ व्रजवासिनकछुलक्षन पाया ॥ कोप्योमघवाव्रजपरजवहीं ॥ गोपीग्वाल वचायोतवहीं ॥२९॥ घनिघनिव्रजकेगोपीग्व ल ॥ नितखेलततुमउनसँगख्याल ॥ निशाशरदअ ऱ्यालासाथ ॥ रासरच्योश्रीगोपीनाथ ॥ ३० ॥ स थअक्रूरमधुपुरीआये ॥ लो

ये ॥ कुब्जासँगतुमरमेकृपाला ॥ क्रीडाकीनीश्री-
गोपाला ॥ २१ ॥ हाथीहत्योकुवलयापीड़ ॥ जि
नकोकंसचढ़ायोभीड़ ॥ जानिबूझिकेभलोखिला-
यो॥पकडसूंडकरदूरभगायो ॥ २२ ॥ मुष्टिचुणूर
हतेदोमल्ल॥कुस्तीकरिमार्‍योयकपल्ल ॥ पापीकं
सहत्योमहराज ॥ उग्रसेनकोदीन्होराज ॥ २३ ॥
आठभईतुम्हरेपटरानी ॥ एकतेएकअधिकमनमा
नी॥अंतरयामिद्वारकानाथ ॥ उनकोहेमेरेसिरहा
थ ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ अतिसुंदरिहैरुक्मि
णी, लक्ष्मीकोअवतार ॥ सतिभामाकोमानहै,
जाम्बवतीसोंप्यार ॥ २५ ॥ कालिंदीनागनजिती
भद्राजीसोंहेत ॥ मित्रवृँदाअरुलक्ष्मणा कुलको
शोभादेत ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ॥ पारिजातसु
रपुरसेलाये ॥ सतिभामाघरआनिरुपाये ॥ भ्रमउ
पज्योनारदकोजबै॥महलोंमहलपधारेतबै ॥ २७॥
विपतसुदामाकीतुमहरी ॥ घरमेंऋद्धिसिद्धिबहु

तिनकोकियोनिहाल ॥२४॥ वरस सुरवछराभयो रूपकपटकोधार ॥ श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्यो पाँवछाड ॥२५॥ वरुणलेगयोनंदको, यमुनामा हिंडुवोय ॥ पितासाँचजानीतवै, कृष्णछुडायेमोय ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ चोरेचरिजवैघनश्याम ॥ व्रजवासिनकेपूरणकाम ॥ ऋपिपत्नीकेघरकेतीवण ॥ आपअरोगेजगकेजीवण ॥ २७॥ जलयमुनाकोमोटोभाग॥ जामेंनाथ्योकालीनाग ॥ वच्छग्वालव्रह्माहरिलीन्हा॥ श्रीनँदलालफेरसवकीना ॥ २८॥ वरसएकलागीसवमाया ॥ व्रजवासिनकछुलक्षन पाया॥कोप्योमघवाव्रजपरजवहीं ॥ गोपीग्वाल वचायोतवहीं ॥२९॥ धनिधनिव्रजकेगोपीग्वाल ॥ नितखेलततुमउनसँगख्याल ॥ निशाशरदअरुव्रालासाथ॥ रासरचोश्रीगोपीनाथ ॥ ३० ॥ साधअक्रूरमधुपुरीआये ॥ लोगनगरकेअतिसुखपा

ये ॥ कुब्जासँगतुमरमेकृपाला ॥ क्रीडाकीनीश्रीगोपाला ॥ ३१ ॥ हाथीहत्योकुवलयापीड़ ॥ जिनकोकंसचढायोभीड़ ॥ जानिबूझिकेभलेखिलायो॥पकडसूंडकरदूरभगायो ॥ ३२ ॥ मुष्टिचुणूर हतेदोमल्ल॥कुस्तीकरिमार्‍योयकपल्ल ॥ पापीकंसहत्योमहराज ॥ उग्रसेनकोदीन्होराज ॥ ३३ ॥ आठभईतुम्हरेपटरानी ॥ एकतेएकअधिकमनमानीं॥अंतरयामिद्वारकानाथ ॥ उनकोहेमेरेसिरहाथ ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ अतिसुंदरिहैरुक्मिणी, लक्ष्मीकोअवतार ॥ सतिभामाकोमानहै, जाम्बवतीसोंप्यार ॥ ३५ ॥ कालिंदीनागनजितीभद्राजीसोंहेत ॥ मित्रवृंदाअरुलक्षमणा कुलकोशोभादेत ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ ॥ पारिजातसु रपुरसेलाये ॥ सतिभामाघरआनिरुपाये ॥ भ्रमजपज्योनारदकोजवे ॥ महलोंमहलपधारेतवे ॥ ३७ ॥

कौतुम[illegible] ॥ घरमेंऋद्धिसिद्धिव[illegible]

तिनकोकियोनिहाल ॥२४॥ वरस सुरवछराभयो रूपकपटकोधार ॥ श्रीकृष्णवाकोमारियो, पटक्यो पाँवछाड ॥२५॥ वरुणलेगयोनंदको, यमुनामा हिंडुवोय ॥ पितासाँचजानितिवे, कृष्णछुडायेमोय ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ चोरेचरिजबैधनश्याम ॥ ब्रज वासिनकेपूरणकाम ॥ ऋपिपर्लीकेघरकेतीवण ॥ आपअरोगेजगकेजीवण ॥ २७॥ जलयमुनाकोमो टोभाग॥जामेंनाथ्योकालीनाग ॥ वच्छग्वालब्र ह्माहरिलीन्हा॥ श्रीनँदलालफेरसबकीना ॥ २८ ॥ वरसएकलागीसबमाया ॥ ब्रजवासिनकछुलक्षन पाया॥कोप्योमघवाब्रजपरजबहीं ॥ गोपीग्वाल बचायोतबहीं ॥२९॥ धनिधनिब्रजकेगोपीग्वा ल॥ नितखेलततुमउनसँगख्याल ॥ निशाशरदअ रुवालासाथ॥ रासरचोश्रीगोपीनाथ ॥ ३० ॥ सा धअक्रूरमधुपुरीआये ॥ लोगनगरकेअतिसुखपा

तेंतीसनपावहिंपार ॥ मेहूंदीनऔरनहिंहाथ ॥ आपक्हीजेदीनानाथ ॥ ४५ ॥ तुमअनेकभक्तनको तारे ॥ संतहेतबहुकारजसारे ॥ मेंशरणागतआयों तेरी ॥ तुमहिंप्रँतिज्ञाराखोमेरी ॥ ४६ ॥ गदगद होयप्रेममेंपाग्यो ॥ अबहुंडीलिखनेकोलाग्यो ॥ नगरद्वारिकासिद्धिश्री ॥ सुभगसुथानजहांवसेंहरी ॥ ४७ ॥ श्रीसाहाजीसांवलनाम ॥ तिनकोनरसी करेंपणाम ॥ तुमपरतापचेंनहेंयहां ॥ अतिआनं दचाहियेवहां ॥ ४८ ॥ पानकपूरअरोगणलीजे ॥ डीलांकाबहुयतनकरजे ॥ डीलांपाछेमारीगाथ ॥ - मुत्रागनियोंडीलांसाथ ॥ ४९ ॥ अपरँचममाचार- सों काम ॥ हुंडीसिकारदीजोदाम॥हमराखामाधृज- नपासा ॥ साह्योगतुमदीजोखासा ॥ ५० ॥ सा तसेंकरारुपयालीना ॥ नेमेजाकामाढातीना ॥ पों नादोयचोगुनाकीजो ॥ देखतमवेदामगिनदीजो ॥ ५१ ॥ मितीमाससंवतअरूदीन् ॥ लिखागिरना

करी ॥ अग्निअजीर्णहोगईतवै ॥ वनखांडवमेंजराई
जवै ॥ ३८ ॥ यज्ञराजपांडवकोकियो ॥ थालीमांजन
कोतुमरयो ॥ जवजववोल्योजोशिशुपाला ॥ था
लीफेंकहत्योततकाला ॥ ३९ ॥ जवद्रौपदिकीकी
नीभीर ॥ वस्त्रवढायोघट्योनचीर ॥ शापदेनपांड
वकोआये ॥ वनमेंऋषिकोवहुतअधाये ॥ ४० ॥ दा
सविदुरकोमोटोभाग ॥ अतिहिंप्रीतिसेंपायोसाग
॥ भीषमकोप्रणराख्योजवै ॥ भीडपडीभारतमेंतवै
॥ ४१ ॥ कियोपरीक्षितकेरिसहाया ॥ गर्भवासमें
लियोवचाया ॥ भारतमेंअतियूवमचाया ॥ टींटो
डीकाअंडवचाया ॥ ४२ ॥ मित्राचारकियोहेपार
थ ॥ जाकोआपजितायोभारथ ॥ पांडवकोअश्वमे
धकरायो ॥ अतिहिंप्रीतिसेंहितजितायो ॥ ४३ ॥
मद्यपियोयादवमिलिसवहीं ॥ तोहून्छारोंमगटेतव
हीं ॥ उद्धवकोतुमज्ञानसिखायो ॥ कृष्णरूपमभुना
मनिधायो ॥ ४४ ॥ तुमगुणकोलिंकहाविचार ॥ सुर

सांवलपरहुंडीहमलाये ॥ ताकेदामकछूनहिंपाये ॥
॥ ५९ ॥ अबपीछानरसीपे जइबे ॥ ईजतउसकीखू
बगमइबे ॥ तबबोलेतुममारोकाम ॥ सांवलसाह
हमारोनाम ॥ ६० ॥ वसोंद्वारकाअतहीछाने ॥
कोइकहरीकोसेवकजाने ॥ हुंडीकाढोरुपायालीजे॥
खरचोखावोदेरनकीजे ॥ ६१ ॥ तवसाधूजनभयेखु-
साल ॥ हुंडीकाढिदीनततकाल ॥ गाँठरुपइयावां-
ध्योजबे ॥ सांवलकोपूछतभेतवे ॥ ६२ ॥ कहासाख
अरुकहांपिछान ॥ नरसीकातुमकरोवखान ॥ सां-
वलकहेंसाधुसुनिलीजे ॥ नरसीमेरासखागनीजे
॥ ६३ ॥ मेंसेवकनरसीकोतनी ॥ उनकीमोपरकि
रपाघनी ॥ उनकेवेंच्योहुँविकजाऊं ॥ अधिकीऔ
रकहादरसाऊं ॥ ६४ ॥ मनआयोआनंदउछाह ॥ का
गदलिखतेसांवलसाह ॥ सिद्धिश्रीजूनागढवास ॥
विराजमानहोहरिकेदास ॥ ६५ ॥ सरवऊपमालाय-
ककरूं ॥ तापरश्री अष्टोत्तरधरूं ॥ जिनकांहैनरसी

मूकोठोकीनू ॥ हुंडीसाधूलीनीजवै ॥ नरसीउनको
वोल्योतवै ॥ ५२ ॥ हाथसांवलेसाहकेदीजो ॥
तुरतरुपय्याअपनालीजो ॥ करिमैजलसोपहुँच्यो
तहां ॥ नगरद्वारकासांवलजहां ॥ ५३ ॥ जाकर
भेंटेश्रीरणछोड़ ॥ पापगयेतवतनकेकोड़ ॥ तीरथ
वासीपूंछततहां ॥ सांवलसाहरहतहैकहां ॥ ५४ ॥
कोइवतावोउनकोवास ॥ सांवलपरहुंडीहमपास ॥
लोकनगरकेऐसीकहैं ॥ सांवलसाहयहानहिंरहै ॥
॥ ५५ ॥ कोउठगारेपासठगाये ॥ तुमतोहुंडीलो
टीलाये ॥ देरनकरौवेगितुमजावो ॥ उसीठगारेको
पकड़ावो ॥ ५६ ॥ उपजीजीकोवडीउदासी ॥ पी
छाचलिभोतीरथवासी ॥ दोअरुतीनकोसजवआ
या ॥ वैठेउथकिकरिवृक्षकिछाया ॥ ५७ ॥ भयाजीव
मेहपैउछाह ॥ तवहींआयेसाँवलसाह ॥ रामरामक
रवैठेआगे ॥ हालहकीकतपूँछनलागे ॥ ५८ ॥ साधू
वोलेमधुरीवानी ॥ कहाकहूंकछुगतिनहिँ जानी ॥

जीनाम ॥ चरणकमलपरकरूंप्रणाम ॥ ६६ ॥ कृपा
तुम्हारीसुखहेयहां ॥ अतिआनंदचाहिये वहां ॥
खानमानाचितनीकेआनो ॥ मुद्राडीलांपाछेजानो ॥
॥ ६७ ॥ सदाकरतहौहमपरदाया ॥ याहीभांति
राखियोमाया ॥ हुंडीतुम्हरीसाधूलाये ॥ जिनके
दामलियेपरखाये ॥ ६८ ॥ हेतकरोतुमआनँदअ-
पार ॥ हुंडीलिखजोबारंबार ॥ यहिविधिकागद
लिखियोजबै ॥ सौंप्योसाधुनकोतबै ॥ ६९ ॥
यहदीजोनरसीकेहाथ ॥ एकजबानीकीजोबात ॥
दूजीचितमेंकभीनआनो ॥ सांवलकोसेवकहीजा-
नो ॥ ७० ॥ ऐसीबातपरस्परभई ॥ विदाहुएसा-
धूजनसई ॥ फिरतफिरतजूनागढआये ॥ सेंदआग
लीचितमेंलाये ॥ ७१ ॥ साधूजनकरआगोकीनू ॥
कागदसांवलतुमकोदीनू ॥ इसकासमाचारतुमवाँ-
चो ॥ भिक्षुतुह्मारो सांवलसाँचो ॥ ७२ ॥ कागद
लियोजबैततकाल ॥ बाँचतनरसीभयेखुसाल ॥

॥ अथ हनुमान्विजयप्रारंभः ॥

दो॰स्वस्तिश्रीपतिपशुपती, गणपतिमृगपतिमाय॥
श्रीधरजगपतिखगपती, वंदौंनगपतिराय ॥१॥
विजयहनूवर्णनकरूं, हृदयधनूआनंद ॥
श्रीधरमारुतनंदको, दर्शनपरमानंद ॥ २ ॥

छंदकड़खा ॥ ॐनमःशारदासुमतिमनमेंवसोकुमतिकाअंधकेफंदतोरे ॥ ह्रींनमःहाँकहनुमानमहावीर

कीभीरिकादुःखकोमुखमोरै॥श्रीनमःसर्वदासंपदाआ
पश्रीलक्ष्मीनाथकेहाथपावैं ॥ क्लींनमःक्लेशसंताप
दुखदूरकाविजयहनुमाननरनामगावै॥१॥प्रथमजा
नामसेकामजगमेंकरेदुःखकेहरणसुखकरणगन्ना ॥
बुद्धिकेसिंधुश्रीगिरीपुत्रके चरणपदशरणकोधरणम-
न्ना॥गुरुपदकंजकीरंजमकरंदमनभ्रमरज्योंसुमिरिक
रसीसनाऊँ॥ कोटितैंतीसमिलिदानआशीषद्योहृद-
यहनुमानकोध्यानपाऊँ॥२॥ जगतमेंजगमेंज्योति
ज्वालमुखीजाहिपदपंकमेंशंकनाहीं ॥ हनुमानहं-
कारटंकारकीशक्तिपुरशिष्यकीभक्तितिहुँलोकमाहीं
चलतहैमंत्रश्रीवचनईश्वरतणाँटरतदुखरोगबहुबुल-
तभोगा ॥ हृदय हनुमानको ध्यान मुखगान
करमानसन्मानमयकरतलोगा॥३॥ विजयहनुमान
विस्तारसंसारमेंजोतिगढलंकनिःशंकगाऊं ॥ बु-
द्धिकोहीनअतिदीनगुणतानपणवीरमहावीरकी भी

रकोंहे॥७॥गयोगढलंकपरडंकहनुमानकोरंककीशं-
कनहिंअंकजेती॥ द्विविदसुग्रीवनलनीलकपिराज
पुनिखरयुवराजहनुमंतनेती ॥ सिंधुपरसेतुधरपा
जपाखानकरमामपरतापकपिकटकपारा ॥ जयशब्द
उचरेभूमिसचथरहरैफरहरैध्वजादशग्रीवद्वारा ॥८॥
कोटपरकूदकरकांगरैकागरैनागिरै नाडेरवीरहनुमंत
कूदे ॥ उमँगमनमांहरघुनाथकेवचनराजायदाखल-
भमहलसूदे ॥ रामकेछुवतपदआवहोलंकपदनाथ
वकसीसदेलंकयेरी ॥ कहतमंदोदरीपीवसुनपापिया
रामदलआयकेलंकघेरी ॥ ९ ॥ दशाननकोपकरक-
हतसुनुकामिनीभामिनीदामिनीजातचपला ॥ दा
मिनीचपलधनमेघमेंचलपलेभामिनी हलपले भुवन
भचला ॥ शूरनरधरपलेसमरसंग्राममेंशत्रुकेसीसभु
जदंडतोडै ॥ कहतदशग्रीवसुनुरानिमंदोदरीलाज-
काकाजक्योंमुक्खमोडे ॥१०॥ कोटगढलंकआखा-
तदारियावसेमेरुसमबंधुहैकुंभकर्णा ॥ हारकेजायँगे

यननरामानयागुव्यमेंजीतिहिंलंबकणीं ॥ जानकी
हेतउद्योगनृपरामकोमनुजकहतजीतिहिंदनुजहांहे॥
कहतदशग्रीवसुनुरानिमंदोदरीरामके अनुजकोतनु
जर्जाते ॥ ११ ॥ रामकोदासआरामकोनाशकरलं
कसीधामनिष्कामक्षँपै ॥ अंजनीपूतसोरामकोदूत
हैच्छूटकीहूतसेभूतकाँपे ॥ एकहीवनचरेकियोविपरी
तिपुरछांडिअभिमानमुखठानजीजे ॥ कहतमंदोद
रीपीवसुनुप्रीतिसेजनकजारामकीभेंटकीजे॥१२॥
नट्योनिशिराजमनरट्योगौरीशकोकट्योतनचाहि
येरामशस्त्रैं ॥ सट्योजयसेनमेंघट्योजूमेघमेंलट्योजु
लेतलंकारवस्त्रैं ॥ चापशरकानमेंधन्योतनधर
णिमेंवरस्योमनचरणमेंशरणकाजे॥ जनकजाहीयमें
रामकोवासरघुनाथकेहीयब्रह्मांडराजे ॥१३॥ अखि
लब्रह्मांडकोभारलेसमरमेंरामकेसंगदशग्रीवजूझे ॥
वीरहनुमानसंदेहकरमोहसेनाथकेकानमेंबातबूझे ॥
कीजियेसहायसबसृष्टिकीकृपानिधिदुष्टकेबाणहिय
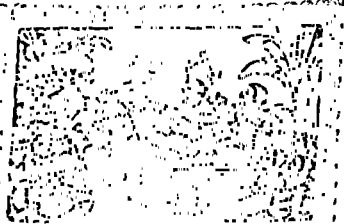
सुढारमदनमनमोहना ॥ यहछाविविधप्रकासराम गुणगायहें ॥ गौरश्यामदोउभ्रातमुनिमनभायहें ॥
॥ छंद ॥ उठीराक्षसीघोरमहाप्रभुबाणएकैसोंह-नी ॥ विप्रकोयज्ञकियोपूरणकृपाकरीकोशलधनी ॥
॥ चौपाई ॥ मारीगर्वगुमानध्यानहरिसोंधरो ॥ चौंकिपरीजियमाँझरामशरससोंरो ॥ ब्रह्मास्त्रकर धारिमारीचकोमारियो ॥ सोयोजनतनपन्योनगु रतिविसारियो ॥ ॥ छंद ॥ मारिचटारिसुबाहु मारिअरुमुनिनकेमंगलभये ॥ सुरविमाननिपुष्पव-रपेंहर्षभरिजैजैकिये ॥ चौपाई ॥ रच्योहैस्वयं-वरजनकरामचलिदेखिये ॥ आयेहेंवहुभूपसबैमि-लिपेखिये ॥ भलीकहीऋषिरायजनकपुरजाइये ॥ शिवधनुकाठिनकठोरदरशदिखवाइये ॥ ॥ छंद ॥ चरणकीरजलागिअहिल्यातुरतहीछविसोभरी ॥ करजोरिअंजलिभईठाढीरामकीअस्तुतिकरी ॥
चौपाई ॥ चरण परस कुलतारितुरत पतिपुरग

मुक्तामोलके ॥ सुंदरलोचनलोलकमलजनुभोरके॥ सुरँगचूनरीनिकटपीतपटछारही ॥ मनोअरुणघन श्यामचपलतांहिरही ॥ यहभूषणभतिविचरामछ-विउरधरे ॥ मनोयमुनजलमध्यदीखदीपकवरे ॥ रामभुजकेलिकटसियाभुजयोंलसे ॥ मरकतमणि केखंभमनोकेचनकसे ॥ रामभयेतनगोरसियाभइ साँवरी ॥ सादरसोबुधिवंतवधूभइबावरी ॥ राम भयेघनश्यामसियाभइदामिनी ॥ मुनिभयेचंदच-कोरचकितभइभामिनी ॥ पुष्पनमुवरपतमेघमुनीमं गथरहें ॥ होतजनकपुरव्याहरामभाँवरिफिरें॥रा-मसियाकोध्यानसदाशंकरधरें ॥ ब्रह्मारूपनिहारिइं-द्रपूजाकरें ॥ सुरनरमुनिआनंदसुमनवर्षाकरें॥तु-लसीसीतारामसहितउरआनिये ॥ रामभजनबिनु जन्मसुमिथ्याजानिये॥इतिश्रीजानकीमंगलसंपूर्ण॥

॥ अथ श्रीकृष्णमंगलं लिख्यते ॥
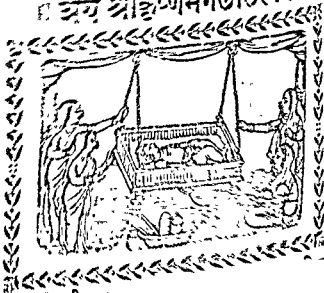
सुकीचमचावहीं ॥ बाजततालमृदंगवीणअरुबाँसुरी ॥ निरखतगोपीग्वालचलो चितवावरी ॥ यशुमतिचीरपहिरायनोरंगभईग्वालिनी ॥ सुंदर वदननिहारिचकितभईंभामिनी ॥ श्रीबलभद्रजीकेवीरअसुरदलखंडना ॥ भक्तवछलमहाराजसु यदुकुलमंडना ॥ शंकरधरतेहंध्यानसुगोदखिलावहीं ॥ सोमुखचूमतिमाइसुपलनझुलावहीं ॥ श्रीनंददाससनेहचरणचितल्यावहीं ॥ हरिगुणमंगलगायगोविंदगुणगावहीं॥इतिश्रीकृष्णमंगलं संपूर्णम् ॥

॥ परनारीनिंदा ॥

दोहा ॥ परनारीपैनीछुरी, कोउजनिलावोअंग ॥
दशोशीशरावणकटे, परनारीकेसंग ॥ १ ॥

॥ अथ बंधुवर्णन ॥

॥ दोहा ॥ आतुरतादुखहूपरे, शत्रुसंकटोपाय ।
राजदारमसानमें, साथ रहे सो भाय ॥ १ ॥

॥ अथ राधामंगलं लिख्यते ॥

॥ चौपाई ॥ वर्पानिवृपभानुदुलारी ॥ चंद्रवदनमृगलोचनिप्यारी ॥ चंद्रवदनगुनरूपरसाला ॥ खेलनगइजहाँनँदलाला ॥ निरखिरूपनँदजीकीरानी ॥ गोदउठायभवनमेंआनी ॥ ॥ छंद ॥ गोदउठाय भवनमेंआनीआभूपणपहिराइयो ॥ मागमुक्तापीतपटउरहारखुमनसुहाइयो ॥ विंदिकाकाजलकीदइकुलदैवमानमनाइये ॥ सूरकेप्रभुसाजनखशिख-

धारीधरापठाइये ॥ १ ॥ चौपाई ॥ आवोमेरी
प्राणजुप्यारी ॥ भोरहिखेलनकहँजुसिधारी ॥ कुम-
कुमभालतिलकक्रिनकीन्हो ॥ किनमृगमदकोविंदा
दीन्हो ॥ ॥ छंद ॥ विंदामृगमददियोमस्तक
निरखशशिसंशयपर्‍यो ॥ एकशरदनिशिकीकला
पूरणमानमनगंधर्वहर्‍यो ॥ हँसिहेरिमुखसोंकहत
जननीअलकवेणीकेंगुही ॥ सूरकेप्रभुमोहन्यापैसाँ-
चिकहमोहेउही ॥ २ ॥ चौपाई ॥ नँदजीकेघरनी
यकसोहे ॥ मेरेवदनतनफिरिफिरिजोहै ॥ खेलतडो
लतनिकटविठारी ॥ मनमेंआनँदकियोहैभारी ।
॥ छंद ॥ आनंदमनमेंकियोभारीनिरखिमुखवलि
वलिगई ॥ वावाजूकोनामलेलेतोहि हँसिगार
दई ॥ पाटीतुपारीडारभूषणगोदलेमेवाभरी ॥ सूर
केप्रभुहरखहियमेंविधिहिसोंविनतीकरी ॥ ३
॥ चौपाई ॥ सुनतवातकीरतिमुसकानी ॥ मेंनंदरा
निकोजियकीजानी ॥ मेरीसुतारूपगुणरासी ॥ क
न्हउदासीवनकोवासी ॥ छंद ॥ कान्हउदासीव

॥ अथ भरतजीकी वारामासी ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ चैत्रपीछिलेपाखरामनेर्भक्तो जन्मलियो ॥ अवधपुरीसुखधाममखिनमिलिमं-गलचारकियो ॥ सबरजचदशरथनेपाई ॥ दियेदा-ननगजवाजिगऊदिनधोरेफलव्याई ॥ सभानखनकुलि तहँआई ॥ फमेलेमनाहिंमिटेकरोसोइलालननच-तुराई ॥ १ ॥ लागतहीवैशाखरैसबईभावरिसर्गडा-री ॥ पिवर्जीवनपिआरभईजमतुमनीनरदारो ॥

दुखतेंनेनगरकोदीनो ॥ तीनलोककोनाथरामवन- वासीकीनो ॥ क्रूरमतिकैसीवनिआई ॥ कर्मलेखन- हिँ मिटै० ॥ २ ॥ जेठपंचमिलिकहैंभरतगादीवैठा- रौ ॥ भरतधरतकानपरहाथनाथमोरिगरदनक्यौंमा रौ ॥ सरैनहिंइनवातनकाजा ॥ तीनलोककेनाथरा मवैअयोध्याकेराजा ॥ वातयहसवकेमनआई ॥ कर्म लेखनहिंमिटै० ॥ ३ ॥ आषाढआशाराममिलनकी मनमेलागिरही ॥ रामकौनवनहवैंवताओभरतवात कही॥नगरकेनरअरुसवनारी ॥ रथडोलागजवाजि भीरगइभरतसंगत्यारी । नदीजैसेसागरकोधाई॥क- र्मलेखनहिंमिटै० ॥ ४ ॥ सावनश्रृंगवेरपुरपहुँचेभी- रभईभारी ॥ भीलनिकटकरजोरिदलर्लीनेलडनेको त्यारी ॥ भरतसेपूंछिकैरारिकरौ ॥ रामलपणसिय काजतीरगंगाकेजूझिमरौ ॥ खवरयहभरतने पाई ॥ कर्मलेखनहिंमिटै० ॥ ५ ॥ भादोंभरतभील सेभेंटेभक्तजानमनमें ॥ कंदमूलफलतोरभीलसेभेंट

करीवनमें ॥ भीलजबआगुआकरिलीनो ॥ भरद्वा-
जप्रयागआनिकेदर्शनदीनो ॥ प्रयागकीदुनियां
सबधाई ॥ कर्मलेखनहिंमिटै० ॥ ६ ॥ कुवारकरि
महिमानीमुनिनेपूँछीकुशलाता ॥ दोऊकरजोरिदे
तिपरिकरमाकौशल्यामाता ॥ आजमेरोजीवनमफ-
लभयो ॥ इतनीबातसुनीमुनिनेजबआशिरबाददि
यो ॥ भरतकीमातासमुझाई ॥ कर्मलेख० ॥ ७ ॥
कार्तिककूचप्रयागतेकीनोचित्रकूटआये ॥ चीरवल
कलशिरजटाजूटसियरामलषणपाये ॥ भरतजब
चरणनजायपरे ॥ भरतउठायरामउरलायेनयन-
ननीरभरे ॥ भरततुमभाईसुखदाई ॥ कर्मलेखन०
॥ ८ ॥ अगहनवारंवारभरतकोरघुवरनसुझावे ॥
भरतउलटियरजाउराजतुमकरोअयोध्यामें ॥ लोग
सुखजबहीपावेंगे ॥ चौदहबरषबीतिजेहेजबहमहूं
आवेंगे ॥ भरतकोऐसेसमुझाई ॥ कर्मलेख० ॥ ९ ॥
पूसमाससियरामलषणसेंङ्गरिगईभोरपनी ॥ जनक

वसिष्ठगुरूसमुझावेंकहेअपनीअपनी ॥ विनतीवहुत भातिकीनी ॥ रामआपश्रीचरणखडाऊंभरतहिंदैदी नी ॥ उलटघरजाउमेरेभाई ॥ कर्मलेख० ॥ १० ॥ माहमहीनामानिरामनेसुखपावामनमें ॥ जनकज नकपुरकोपहुँचायोभरतअयोध्यामें ॥ खडाउंगादी धरदीनी ॥ रामचंद्रतेकठिनतपस्याभरतहुनेकीनी ॥ वडाईयाहीमैंपाई ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ फाल्गुनफेरिहः रीसिताजवरावणवशकीनो ॥ रावणमारिकैरामचं द्रनेराज्यविभीषणकोदीनो ॥ जीतिकैअवधपुरी आये ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिकदर्शनको धाये ॥ राजारामचंद्रकोगादीठहराई ॥ कर्मलेखन हिंमिटै० ॥ १२ ॥ नवेशाललौंदकीभादोंअगहनग हनपन्यो ॥ बांसवरेलीकेलालदासनेरामनामको उच्चन्यो ॥ भरतकीयहीहैबारहमासी ॥ गावेसुनैपर मपदपावैकटैगीयमकीफांसी ॥ वेदलिखीऐसेहीगाई कर्मलेखनहिंमिटैकरौकोइलाखनचतुराई ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीभरतजीकीबारामासीसंपूर्णा ॥

॥ अथरामचंद्रजीकीबारामासी ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ चैत्रअयोध्याजन्मेरीराम ॥ चंदनसोलिपवायेरीधाम ॥ गजमोतियनकेचौक पुराय ॥ सोनेकेकलशादियेभरवाय ॥ धरेघटमंदिर ॥ पठयेतुमनारिबिरनवनबालकमोरे ॥ १ ॥ बैशाखमासऋतुग्रीषमलाग ॥ चलतपवनमनुबरसत आग ॥ जैसेजलबिनतलफतमीन ॥ सोगतिहमरीके कईनेकीन ॥ दियेदुखदारुन ॥ पठये० ॥ २ ॥ ज्येष्ठमासलूकलागतअंग ॥ रामलषणअरुसीतासं

ग ॥ रामचंद्रपदकमलसमान ॥ परचंतधरतीओ असमान ॥ चलैंमगकैसे ॥ पठये० ॥ ३ ॥ आषाढमासघनगरजतघोर ॥ रटतपपीहाकुहुकतमोर ॥ ठाढ़ीकौशल्याअवधपुरधाम ॥ भीजतहोंगेसियलक्ष्मणराम ॥ खडेतरुवरतरे ॥ पठयेतुमनारि० ॥ ४ ॥ सावनमेंसरसानेरीनीर ॥ कैसेधरैंकोशल्याधीर ॥ छोटेछोटेबुंदनवरसतनीर ॥ भीजतहोंगेसियारघुवीर ॥ झमकझडलागी ॥ पठयेतुमनारि० ॥ ५ ॥ भादौमेंवरसेनीरअपार ॥ घरअपनेसवहीसंसार ॥ गुंजतगुंजिलफिरतभुजंग ॥ रामलपणअरुसीतासंग ॥ रैनिअँधियारी ॥ पठयेतुमनारि० ॥ ६ ॥ लागारीसखीमासकुवार ॥ धरमकरतसबहीसंसार ॥ जो घरहोतेसियालक्ष्मणराम ॥ विप्रजिमावतिमैंदेती दान ॥ थालभरमोती ॥ पठये० ॥ ७ ॥ लागारीसखीकार्तिकमास ॥ उडतकलेजामेंदुखकीफाँस ॥ घरघरदीपसँजोवतनारी ॥ मेरीअयोध्यापडीअँधियारी ॥ करीकेकईने ॥ पठयेतुमना० ॥ ८ ॥ अ-

गहनमेंसखीकुँवरकाकरतीसिंगार ॥ कपडासिलातीमेंसोनेकेतार ॥ पटपीतांवरकुलयसमान ॥ शिरमेंचीरजदरसीपान ॥ गलेवैजयंतीमाला ॥ पठयेतु० ॥ ९ ॥ लागारीसखीपूसजोमास ॥ रैनभईजेसीखांडेकीधार ॥ कुशलआसकैसेपोढेंगेराम ॥ केसेकरेंवनमेंविश्राम ॥ भोजनमंजरीके ॥ पठयेतुम० ॥ १० ॥ माहमासऋतुफूलेवसंत ॥ कैसेजियोंरी विनाभगवंत ॥ मेरीअयोध्याकेसिरमोर ॥ ठाढे भरतजीढारतचौंर ॥ वसंतकरोरी ॥ पठयेतुम० ॥ ॥ ११ ॥ फागुनरंगरच्योसवकोई ॥ चोवाचंदनअतरसुगंध ॥ ठाढेभरतजीढोरेअवीर ॥ कौनपेछिडकें विनारघुवीर ॥ मेंकेसीकरोंरी ॥ पठयेतुम० ॥ १२ ॥ जोगावेयहवारहमास ॥ सोपावेवैकुंठहिवास ॥ कहतभवानीअवधपुरधाम ॥ वनमेंआयेसियलक्ष्मण राम ॥ मिलेकेकईसों ॥ पठयेतुमनारिविरलयन पालकदोऊ० ॥ १३ ॥ इतिश्रीभवानीदासकृत श्रीरामचंद्रजीकीबारामासीसंपूर्णा ॥ ॥ ॥

॥ अथपंडितवेश्यासंवाद ॥

ह्वांवपमरतयाहाबाधरनचातांकामकेहुलाशमें
केलिकैभयोहैजबभोरमुखमोरीबोलीएहोप्राणप्यारे

॥ अथबाँसुरीलीला ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ बांसुरीदीजियेहोब्रजनार ॥

वावाकीजाई ॥ दो० ॥ लेलकडीमुखपरध री, वंसावा कोनांव ॥ जाघरतुमसेपुत्रहैं, उजरतवाकागांव॥६॥ कृष्णवचन ॥ वसैकिऊजरहोयनहींपरवाहतिहारी॥ तुमसीहैंलखचारिनंदघरगोवरहारी ॥ दोहा ॥ लाखरहैंदरवारखडी, लखआवैंलखजाँय ॥ लखनित उठदर्शनकरैं, सुंदरमनपछितायँ ॥ ७ ॥ सखीकावं सदेिना ॥ ग्वालिनचतुरसुजानबाँसुरीआपुही दीन्हीं ॥ मोहनचतुरसुजानसाँवरेहँसकैलीन्हीं ॥ दो० ॥ लैवंसीग्वालिनिमिली, योवनवदनदुराय॥ सूरदासहारीग्वालिनी, जीतेयदुपतिराय ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णकामुरलीवजाना ॥ लैवंसीयदुराय ॥ जायजमुनातटकीन्हीं॥ सुरतेतीसककोटिउहांसरव नजोलीन्हीं ॥ दोहा ॥ भक्तवत्सलसुखदायक, राखौसवकोमान ॥ तिनमैतुमप्रभुआपुहो, गुणगावतसुरजान ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इतिसूरदासकृतबाँसुरीलीलासमाप्त ॥

केनीपजे, ज्योंकिसानकोखेत ॥ ४ ॥ कुंडलिया॥ मानैलोचनयुगसबै जानतहैनरनार ॥ त्रैलोचन विद्याकही ताकोकरौविचार ॥ ताकोकरौविचार वालपणविद्याशीखो ॥ मानुपदेहअमोल वोल विद्याकोनीको ॥ श्रीधरकविताकहैसभामेंआदर आनै ॥ जाकेविद्याकंठताहिकोराजामानै ॥ १ ॥ राजाशिखैनीतिकोपरजाकेहितकाज ॥ मंत्रीसिखै मित्रतामानेमोटाराज ॥ मानेमोटाराजकाजवि द्यासोंपावै ॥ हुंडीलिखैअपार साहपदविद्यालावै ॥ श्रीधरकविताकहै संपदामिलीहैताजा ॥ वि द्यापढोसुजानमानसन्मानैराजा ॥ २ ॥ जानैपो रुपआपकोनहींवापकोकाम ॥ वलिवंधनेकारणै वामनपायोनाम ॥ वामनपायोनामरामनिक्षत्री कीनी ॥ रघुवररावणमार भक्तकोलंकादीनी ॥ श्री धरकविताकहैगुणी संगआदरआनैं ॥ करैकृष्णको यादपिताकोकोइनजानै ॥ ३ ॥ पाचोकथापढाइये

॥ अथ त्याज्यदेशवर्णन ॥

दो० ॥ कालउपद्रवसंगशठ, अन्यराजभय होय ॥
तेहि थलते जो भागिहैं, जीवत बचिहै सोय॥१॥

॥ अथ वेनीमाधोकीबारामासी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कार्तिककिलोलकरैंसबस-
खियाँराधाविचारकरैमनमेरे ॥ माधोपियाकोआ-
नमिलावोनाहितौप्राणतजौंछिनमेरे ॥ हमकोछाँ-

तावतआयगईऋतुवरपाकीरे ॥ ८ ॥ लगोआषाढ घुमड़आयेवदराविजलीचमकैमेरेआँगनमेंरे ॥ चमक चमक चहुँओरनिहारों जैसेमीनीफरैजलमेंरे ॥ ॥ ९ ॥ सावनस्वामीहमसोंछलकीनोप्रीतकरीजाय कुविजासेरे ॥ अहोनँदलालप्राणकैसेराखूंनहिंआये श्यामवृंदावनमेंरे ॥ १० ॥ भादोंभवननींदनहिंआवैमोरवाबोलैवाहीमधुवनमेंरे ॥ कोयलहोयमेंवनवनढूँढूँसूखेतालवृंदावनकेरे ॥ ११ ॥ क्वारमासनिर्मलभयेचंदागोरीसोवैअपनेआँगनमेंरे ॥ सूरदासतव आनामिलेहरिसुखीभइराधामनमेंरे ॥ हमकोछाँडिच लेवेनीमाधो॥१२॥वेनीमाधोकीवारहमासीसंपूर्णा ॥

॥ अथ रसिक दोहा ॥

तनिककंडीउरपरी, नैनभयेवेचैन ॥
वेबपुराकैसेजियैं, जिननैननमेंनैन ॥ १ ॥

॥ अथ सुमित्रलक्षण ॥

दो० ॥ पापनिवारतहितकरत, गुणगुणिसेगुणढाकि॥दुखमेंराखतधैतकछु, शुभमित्रनयेआकि ॥१॥

॥ अथ श्रीकृष्णचंद्रकीवारामासी ॥
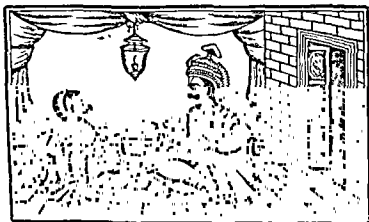
श्रीगणेशायनमः ॥ प्रथममहीनाआषाढ़लागावर्षा ऋतुआई ॥ प्रीतमहमरेश्यामसलोनेपातीभेजवाई॥ कहोंवेकैसेनहिंआये ॥ ऐसेचतुरसुजानश्यामचेरीने विलमाये ॥ डालगलजादूकीफाँसी ॥ श्रीराधागोपीत्यागकरीघरवारनकुविजासी॥ १॥ सावनमेंमन भावनहमतोंदामनसोंलागी॥ तवतोहमसोंप्रीतिवढ़ीअवहरिकाहेत्यागी ॥ सुनोतुमऊधोनेरीसों ॥

लाजशरमकितगईप्रीतिअबकीचेरीसों ॥ यहीमोहिं अवहोतहैहाँसी ॥ श्रीराधागोपी० ॥ २ ॥ भादोंरैन अँधियारीबोलेपीतमकीप्यारी ॥ अन्नभावैनींदन आवैसंकटअतिभारी ॥ प्रीतनहींमोहनऊधो ॥ ऐसेकुटिलकुजातश्यामकोजानितिहीसूधो ॥ मारिगयोविरहाकीफाँसी ॥ ३ ॥ लागतकारसराधआयेसबकोइधरमकरै ॥ मैंभीधरमकरोंगीजबहींप्रीतम नजरपरै ॥ मिलवैहैकोईऐसालै ॥ अक्रूरगयोमथुराकोकरीयेरीकैसा ॥ बुद्धिवाकीनीअभिमानी ॥ ॥ ४ ॥ कार्तिककौतुककियेकृष्णनेहमसबकोउजानी ॥ आखिरजातिअहीरश्यामकेकुबजामनमानी ॥ कंसकीतैंआखिरचेरी ॥ येहीतेदिनरैनआँखमेरीफरकतहैएरी ॥ लगीमेरेजियकोचोरासी ॥ श्रीराधा० ॥ ५ ॥ अगहनमेंमनचमकनलागाधड़कतहै छाती ॥ ऊधोहाथसँदेसाभेजावाँचोरीपाती ॥ लिखोकुछतुमभीवालमको ॥ हमकोयोगपठायरची

पटरानीकुब्जाको ॥ हमारेजियकेखुखरासी ॥ ६ ॥ दूसमासचलेगयेहमारेप्रीतमसेप्यारे ॥ काननलागेपूतकरीहमेंनेननसेन्यारे ॥ हमेंयहमदनसतावतहे ॥ जिनकेजारनकाजसँदेशोऊधोलावतहे ॥ खबरतुमलीजोअविनाशी ॥७॥ माहनाहकेडाहपियातुमछोंडीहमजानी ॥ रोउठतीकेराहवातसवऊधोनेजानी ॥ ज्ञानकीवातेंदरसाई ॥ कृष्णकोदेहुमिलायसकलसवगोपीसमुझाई ॥ झूँठसचहीकेमनभासी ॥ श्रीराधा० ॥ ८ ॥ फागुनकीकोलेंगेरेनदिनहोयरहीविपमें ॥ पातीवाँचनछेमसखीयकयोंवोलीरिसमें ॥ लगेअवमाहकरनचोरी ॥ हमरेजियतकान्हकितनांदीसँगखेलेंहोरी ॥ खबरमेरीलीजेकलासी ॥ श्रीराधा० ॥ ९ ॥ चेतचितामेंजरोंनरोंमेंगिरतीकुँइयामें ॥ कहियोमदनगुपालसंगकुबजाकोलेआवें ॥ कछुइनवातनकोडरना ॥ हमगोपदिशनकीप्यासीतोऔरनहींकरना ॥ खबरमेरीलीजेमजवासी ॥ श्रीराधागोपी० ॥ १० ॥ लागतहेवेनाखमासनव

हीकेघरआई ॥ ऊधोजीनेजायकृष्णसोऐसेसमुझाई ॥ पैजतुमहकनाहकरोपी ॥ हाड़मासगलिगयोबावरीहोगईसबगोपी ॥ लेहिंगीकरवटहूंकासी ॥ श्रीराधा० ॥ ११ ॥ ज्येष्ठमासमेंमिलेकृष्णजबराधागोपीसों ॥ ब्रजवासिनआनंदभयेतबछूटीबाधासों ॥ कृष्णकीयहबारहमासी ॥ पढेसुनेंवैकुंठसिधारैछूटेयमफांसी ॥ साँचयहमेरेमनभासी ॥ श्रीराधागोपीत्यागकरीघरवानकुबजासी ॥ १२ ॥ ॥ इति श्रीकृष्णचंद्रकीबारामासी संपूर्णा ॥

॥ होली ॥

रंगपिचकारीभरिमारीगिरधारी ॥ भीजगईअँगियाअनमोलीचूनरलाखहजारी ॥ गि० ॥ गुरुजनलोगचवावकरतहैंसासुसुनेंदगीगारी ॥ गि० ॥ पैयांपरूंवलिजाऊंजनार्दनतुमजीतेहमहारी ॥ गि० ॥ १ ॥

॥ अथ कुमित्रलक्षण ॥

दोहा– पाछेकामनशावही, मुखपरमीठेबैन ॥
वरजेऐसेमित्रको, पयमुखघटविषपैन ॥

॥ अथ खलनिन्दा ॥

दोहा--खलहुमर्पहूनदुहुँनमें, भलोसर्पखलनाहिं ॥
सर्पडसनहेकालमें, खलजन पद २ माहिं ॥

॥ अथ सत्संगकर्तव्यतावर्णन ॥

दोहा--करत नहीं उपदेशकछु, तऊकरियसत्संग ॥
सज्जननरकीबानहू, देतचित्तकोरंग ॥

॥ अथ दुष्टत्यागवर्णन ॥

सोरठ--विद्यायुतहहोय, तऊदुष्टतजिदीजिये ॥
फणिमणिधरजोहोय.भयकारीकहकीजिये॥

॥ वडोंकी दयालुता ॥

दोहा-- तुलसीवचनगरीबके, सुनतवडेदेकान ॥
श्रीपतिओगजराजकी, कहाकेरिपहिंचान ॥

॥ अथजन्मव्यर्थतावर्णन ॥

दोहा-- श्वानपुच्छसमजीवनो, विद्याविनहेव्यर्थ ॥
डांसनिवारनतनढँकन, नहिंएकोसामर्थ

॥ अथ कौशल्याकीबारामासी ॥
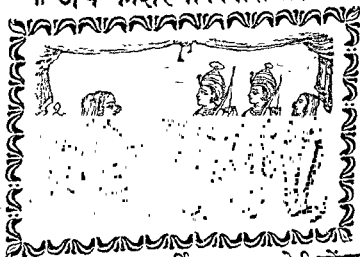
श्रीगणेशायनमः ॥ कार्तिककूचप्रयागसेकीन्होंकौशल्यासोचकरेमनमेरे ॥ रामलपणसियवनकोसिधारेदशरथप्राणतजेघरमेरे ॥ दर्शनदेमेरेप्राणपियारेतुमबिनकोननहींहिहमारे ॥ १ ॥ अगहनगैलचलेजबप्यारीदरहोयतनमेरे ॥ चलतचलउजव्रपाँयपिरानेकोईनहिंतुह्मारेबावनमेरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ ॥ २ ॥ पूसभरतजबचलेलेनकोसोतनदाहभयोमन

मेरे ॥ मैंजानीरघुवरघरअयिहैंफूलीनमाऊंमनमेंरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ ३ ॥ माहमासभरतफिरिआये हूकउठीमेरेतनमेंरे ॥ तलफतिफिरौंअयोध्यामाहीं जैसेमीनफिरैजलमेंरे ॥ दर्शनदेमेरेप्रा० ॥ ४ ॥ फागुनफिरबैठेवनमाहींसीताहरनसुनाजबमेंरे ॥ रामलषणअबढूँढतहोइहैंवैदेहीकोकहावनमेंरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ ५ ॥ चैतमेंचिताकरैंभरतजीकैसेराजकरूँअबमेंरे ॥ बिनरघुवरमेरोजीवननाहींमेंभीप्राण तजूँछिनमेंरे ॥ दर्शनदेमेरे० ॥ ६ ॥ मासवैशाख भरतनहिंमानेंसोचभयोसबनगरीमेंरे ॥ रामलषण प्रभुसियासमेताध्यानधरोमबनिजउरमेंरे ॥ दर्शन दे० ॥ ७ ॥ जेठमिलापभयोसुग्रीवहिंवालिकेप्राण हरेशरसेरे ॥ वालीमारिशैलफिरिछाजततताराविकल भइमनमेंरे ॥ दर्शनदे० ॥ ८ ॥ लगेआषाढघुमड़ रहेबादरसोचभयोअबमोमनमेंरे ॥ बिनमोरेलाल बागसबसूनेसोचपडोसबनगरीमेंरे ॥ दर्शनदेमे०

॥ ९ ॥ सावनघनगरजतचहुँओररामलपणमोरे परवतमेंरे ॥ विनतियसंगसोचमनहोयहेंमेरेहुप्राण धरेउनमेंरे ॥ दर्शनदेमे० ॥ १० ॥ भादोमेंबंदर सवधायेपूर्वपश्चिमदक्षिणमेंरे ॥ कूदसमुद्रहनुमान सिधारेसीताखवरदईछिनमेंरे ॥ दर्शनदे० ॥ ११ ॥ क्वारत्रिकूटलंकजवजारीरावणप्राणवसेउनमेंरे ॥ रावणमारिरामघरआयेअनँदवधाईमोरेगृहमेंरे ॥ दर्शनदे० ॥ १२ ॥ देवीसिंहसियारघुवरकोध्यानधरें घरवाहरमेंरे ॥ तुमविनस्वामीकोइनमेरापाँयधरों अवमोशिरपैरे ॥ दर्शनदे० ॥ १३ ॥ इतिकौशल्याकीवारहमासीसंपूर्णा ॥

॥ अथ कुब्जागृहप्रवेशलीला ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीयदुकुलकुलकमलतमारी ॥ दीनबंधुभक्तनहितकारी ॥ करिकैजननिजनकसुखकारी ॥ तवकुब्जाकीसुरतिसँभारी ॥१॥ नृपतिभवनजिकैअभिरामा ॥ चलेवसनकुब्जाकेधामा ॥

,कृष्णकृपासबहीपैन्यारी ॥ भावभजनकुब्जाभइप्यारी ॥२॥ साँचोभावहृदयजहँजाने ॥ विवशहोयतिहिंहाथविकाने ॥ नारिपुरुषकछुनाहिंनभेदा ॥ ऊंचनीचनहिंकरतनिषेधा ॥ सुधिआईमिलिमगपैपाई ॥ सोहितमानलियोयदुराई ॥ चंदनचरणतनकतनदीन्हों ॥ मानहुँतपजोकाशीकीन्हों ॥ अनिअकुलीनकंसकीदासी ॥ परमतपावनभईरंभासी ॥ आयेप्रभुपुनिताकेधामा ॥ भक्तवछलहैजिनकोनामा ॥ कुब्जाजान्योहरिजूआये ॥ पाटंबरपाँवडेबिछाये ॥ अतिआनंदलगेउठिआगे ॥ पूरणपुंजपुण्यसबजागे ॥ दोहा ॥ टेढीतेसूधीकरी, दियोरूपअभिराम ॥ दासीतेरानीभई, पूरेसबमनकाम ॥ सोरठा ॥ कोकरिसकैप्रकाश, अतिविचित्रहरिकेगुणन ॥ सदादासकोदास, भयेहुनोप्रभुउनहिंको ॥ चौपाई ॥ पुरवासिनसबहिनयहजानी ॥ राजाहरिकुब्जापटरानी ॥ कियोकहाधौंइनतपभारी ॥

ऐसेवचनकहेंनरनारी ॥ मिलीतनिकचंदनलैमग- में ॥ भईविहितपावनसवजगमें ॥ यहमहिमाकछु कहतनआवे ॥ कोताकीपटतरअवपावे ॥ भूलिक- हतकुब्जाजेकोऊ ॥ ताहिरिसाइउठतसवसोऊ ॥ सो तोभईकृष्णकीप्यारी ॥ दासीकहतडरेंनरनारी ॥ करतत्रासमनमेंसवप्रानी ॥ डारिहिमारिसुनेजोरा- नी ॥ जापरकृपाकरेंयदुराई ॥ ताहिनहींकछुयहअ- धिकाई ॥ सदाहरीकेयेहीरीती ॥ मानतएकभक्तसों प्रीती ॥ धनिधनिकुब्जाहरिकीरानी ॥ धनिधनिकृ- ष्णप्रीतिकरिमानी ॥ धनिधनिचंदनअंगलगायो ॥ धनिधनिभवनजहाँहरिआयो ॥ कहिकहिसवसुरनारि सिहाहीं ॥ आजकूवरीसमकोउनाहीं ॥ दोहा ॥ वसेश्यामकुब्जासदन, तहँकरिकछुविश्राम ॥ पु- निआयेवसुदेवगृह, जनमनपूरेकाम ॥ ॥

॥ सोरठा ॥ तवश्रीनंदकुमार, व्रजवासिनकीसुरति करि ॥ मनमेंकरोविचार, अवसवचलिहैंनंदपे ॥

चौपाई ॥ लेवसुदेवसंगदोउभाई ॥ गयेजहँउ-
ग्रसेननृपराई ॥ तहांवहुरियादवसवआये ॥ अरुअ-
क्रूरउद्धवहिंवुलाये ॥ तवहरिऐसेवचनसुनाये ॥ म-
महितव्रजवासीसवआये ॥ नंदादिकसवगोपअने-
का ॥ रह्योनहींव्रजमेंकोउएका ॥ गायवत्ससवत-
जेअनेरे ॥ हैंसूनेंमंदिरसवकेरे ॥ ह्वैहैंदुखितयशोम-
तिमैया ॥ जिनहमप्रतिपालेदोउभैया ॥ वहुतहे-
तउनसोंहमकीन्हों ॥ वहुतभांतिअवलोंसुखदीन्हों ॥
सकुचतहोंअपनेमनमाहीं ॥ उनसोंउरिणकवहुँमैं
नाहीं ॥ पलटोनहिंजोउनकोदीजे ॥ अवचलिवि-
दाउन्हेंव्रजकीजे ॥ सुनिहरिवचनपरमसुखपाई ॥
सवमिलिचलेजहाँनँदराई ॥ सुनोनंदगोपनयहवा-
यदोउभ्राता ॥ सोचनहींमनमें
ावसरहेसकाने ॥ दोहा ॥
ेपचलराम ॥ व्रजते
। सोरठा ॥ अवकैसे

व्रजजाहि॑,बलमोहनदोऊविना ॥ अतिव्याकु
माहि॑, कवधौंनैननदेखिहों ॥ इतिश्रीकुब्जा

॥ खेमटा ॥

तडपेविनवालममेराजिया ॥ चुनिचुनिकलिय
जाविछाऊंसुनीसेजपरदेशजिया ॥ खलिलपिय

हमसेविछुरेजिनकारणहमयोगलिया ॥ त० ॥ १

शिक्षाकक्कावत्तीसी

क. कक्कारेकर्मधर्मकुलरीतसँभारो ॥ १ ॥ ख. खूख

रेखालेऊंचेपगमतिधारो ॥२॥ ग. गगारेगर्वछांड वेगरवारहियो ॥३॥ घ. घघारे घरआयेकोआदर करियो ॥४॥ ङ. नूनारेनमस्कारनितसूरजदेवन ॥५॥ च. चचारेचतुरपुरुपकीसंगतिरोवन ॥६॥ छ. छछारे छलीवलीकेसँगनहिंफिरजे ॥७॥ ज. जजारेजगतसुहायोकारजकरजे ॥८॥ झ. झझारेझगडेजायझूंठमतिबोलो ॥९॥ ञ. ञूञारेञाञाञाञा ञोमतिडोलो ॥१०॥ ट. टटारेटकापईसामेलाकरिये ॥११॥ ठ. ठठारेठाकठोकवोहनीकरधरिये ॥१२॥ ड. डडारे डाकुनकीनिंदानहिंकीजे ॥१३॥ ढ. ढढारेढागढंगसोंदूरारहिजे ॥१४॥ ण. णणारे नातजातमेंपहलेजइये ॥१५॥ त. ततारे तातेभोजनकचहुँनखइये ॥१६॥ थां थथारे थरकणाविनादूधनहिंपीजे ॥१७॥ द. ददारेदयाधर्महितचितसेकीजे ॥१८॥ ध. धधारेधनदेकरानिर्धननहिंहोई ॥१९॥ न. ननारे नारायणनैनानितजोई ॥२०॥ प. पपारे

आरे आदरभावसबनसोंकीजे ३९ ॥ इ इइरे ईश्वरकोसुमिरणचितदीजें ॥ ४० ॥ ई. ईईरेईर्पाछे पत्यागजोमनकी ॥ ४१ ॥ उ. उउरे उधरइधरतो देखोतनकी ॥ ४२ ऊ. ऊऊरे ऊंचपदीपरमेश्वर देसी ॥ ४३ ॥ ए. एएरे एकवारसुखदुखकीकहसी॥ ॥ ४४ ॥ ऐ. ऐऐरे ऐसीकरणितोकबहुँनरहिये ॥ ४५ ॥ ओ. ओओरे ओलंभोप्रभुकोक्यूंसहिये ॥ ४६ ॥ औ. औऔरे औरकामतोसवहीकीना ॥ ॥ ४७ ॥ अं. अंअंरेअंगहीनहरिभक्तिविहीना ॥ ॥ ४८ ॥ अः अःअः रेअःअः करतोजलनहिंपीजे ॥ ४९ ॥ ऋ. ऋऋरेऋणमाथेकवहूंनहिंकीजे॥५०॥ ऌ. ऌऌरे ऌल्करतोघरघरनहिंफिरजे ॥ ५१ ॥ ॠ.ॠॠरे ॠद्धिसिद्धिदाताहियधरिजे ॥ ५२ ॥

॥ दोहा॥यहिशिक्षावत्तीसिको, जोकोइवाँचैसार॥ श्रीधरसाँचेहेतसे,परजाकरैजुहार ॥१॥ इतिश्रीधर कृतशिक्षाककावत्तीसीसंपूर्णा ॥

परमेश्वरकीआशाकरिये ॥२१॥ फ. फ़फारेफलवं-
तातरुवरपरधरिये॥ २२ ॥ व. व्वारे वगरव्युहारक-
चरनहिंकीजे॥२३॥ भ. भ्भारे भणावामैंआलसन
हिंकीजे॥ २४ ॥ म. म्मारे मातपित्ताकीआज्ञापालो
॥ २५ ॥ य. य्यारे यादकरोगुरुदेवसंभालो ॥२६॥
र. ररारे रमवामैंवेलामतिखोवो ॥ २७ ॥ ल. ल्ला
रे लाभहानितनमनसेजो ॥ २८ ॥ व. व्वारे वर्त-
मानकीविद्यालीजे ॥ २९ ॥ श. श्शारे शस्त्रप-
राये हाथनदीजे ॥ ३० ॥ ष. ष्षारेषटौकर्मआराध-
नकरजे ॥ ३१ ॥ स. स्सारे समझबूझपगआगेध
रजे ॥ ३२ ॥ ह. ह्हारे हँसतेहँसतेरारनकरिये
॥ ३३ ॥ ळ. ळ्ळारे लक्षणसीखकुलक्षणहरिये।३४।
क्ष. क्ष्क्षारे क्षमाकरैजासोंनितबोलो ॥ ३५ ॥ त्र.
त्र्त्रारे त्रिणसमानमूरखमनतोलौ ॥ ३६ ॥ ज्ञ.
ज्ञ्ज्ञारे ज्ञानविनापशुपूँछविपाणो ॥ ३७ अ. आ
आरे अर्थविनाविद्याधनकाणो ॥ ३८ ॥ आ. आँ

आरे आदरभावसवनसोंकीजे ३९ ॥ इ इइरे ईश्वरकोसुमिरणचितदीजें ॥ ४० ॥ ई. ईईरेईर्षाद्वे पत्यागजोमनकी ॥ ४१ ॥ उ. उउरे उधरइधरतो देखोतनकी ॥ ४२ ऊ. ऊऊरे ऊंचपदीपरमेश्वर देसी ॥ ४३ ॥ ए. एएरे एकवारसुखदुखकीकहसी॥ ॥ ४४ ॥ ऐ. ऐऐरे ऐसीकरणिलोकवहुँनरहिये ॥ ४५ ॥ ओ. ओओरे ओलंभोप्रभुकोक्यूंसहिये ॥ ४६ ॥ औ. औऔरे औरकामतोसवहीकीना ॥ ॥ ४७ ॥ अं. अंअंरेअंगहीनहरिभक्तिविहीना ॥ ॥ ४८ ॥ अः अःअः रेअःअः करतोजलनंहिंपीजे ॥ ४९ ॥ ऋ. ऋऋरेऋणमाथेकवहूँनहिंकीजे॥५०॥ ऌ. ऌऌरे ऌक्करतोघरघरनहिंफिरजे ॥ ५१ ॥ ॠ.ॠॠरे ऋद्धिसिद्धिदाताहियधरिजे ॥ ५२ ॥ ॥ दोहा॥यहिशिक्षावत्तीसिको, जोकोइवाँचेसार॥ श्रीधरसाँचेहेतसे, परजाकरेंजुहार ॥१॥ इतिश्रीधर कृतशिक्षाक्कावत्तीसीसंपूर्णा ॥

॥ अथ विद्याबत्तीसी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीकृष्णहिंकीशरणहूं ॥ सुधिबुधिदेततकाल ॥ विघनहरनसबसुख करन ॥ नमोनमोगोपाल ॥ १ ॥ गादीजेसलनग्र. की ॥ राजेश्वररणजीत ॥ यहविद्याबत्तीसिको ॥ म्हेताकरीअजीत ॥ २ ॥ प्रातहिंउठिगुरुध्यानधर ॥ प्रभुकेचरणसँभार ॥ सादरगणपतिसुमिरिके ॥ कर विद्याउपचार ॥ ३ ॥ कानोंसेगुरुवाक्यसुन ॥ मुख-सोंकरोउचारि ॥ फेरिहदैधरकरलिखो अक्षरनैन निहारि ॥ ४ ॥ पंचवर्षसेआदिले, करविद्याअभ्यास ॥ जबलगकारेकेशहैं, छाँड़नविद्याआस ॥ ५ ॥ अक्षरमात्राअंकसिख, फिरसंयोगविचार॥ इसविद्याकापारनहिं, होयअपारअपार ॥ ६ ॥ [illegible]आलसअंगमें, ढीलापनमतधार ॥ विद्या

मुझिके, सीखोनितप्रतिजाय ॥ ८ ॥ थोड़ोहीप-
वोभलो, श्रद्धासेनरश्रेष्ठ ॥ विनश्रद्धाकोविरुधहो
हुतपढ़ेफिरकष्ट ॥ ९ ॥ क्रमक्रमविद्यासीखिके,
रखपंडितहोय ॥ बूँदबूँदजलवरसिके, सागर
रणसोय ॥ १० ॥ विद्याकोसंग्रहकरो, विद्यार-
नरसान ॥ विद्याजगमेंगुप्तधन, लोहाकंचनमा-
॥ ११ ॥ कामधेनुयाजगतमें, जाहिरविद्यायो-
॥ मूरुखनरसमुझेनहीं, भुगतेअपनाभोग ॥१२॥
विद्यारूपीव्यसननर, राखुहर्पिहियमाँहि ॥ विद्या
देशविदेशमें, मंत्रहोयकरिसाँहि ॥ १३ ॥ हिम्म-
तकवहुँनहारिये, विद्यापढ़वेमाँहि ॥ हिम्मतसे
केंमतवढ़े, देखविद्याकीछांहि ॥ १४ ॥ पढ़वेमेंक
बहूँनहीं, खालीदिनमतखोय ॥ पीछेपछितैहैघना,
कारीलगैनकोय ॥ १५ ॥ भलिविद्याकीत्रासना,
जासेसबसुधिहोय ॥ विद्यासेभलपनमिले, पा-
छेवहुसुखजोय ॥ १६ ॥ विद्याकोसुखवहुतहे,

इस्त्रीसेअधिकाय ॥ वाघरमहिंसुखकरे, ओघरमेंसु खथाय ॥ १७ ॥ मोटेकुलमेंजनमले, विद्यासीखी नाय ॥ धिक्कर्लीनोवाकोजनम, पशुसंज्ञामेंआय ॥ ॥ १८ ॥ विद्यासवकुलरीतिहै, नीचहिंउत्तमदीख॥ कुलकोकारणनाहिंहै, विद्यासोंनरतीख ॥ १९ ॥ राजकाजविद्याविना, कहाकरोंपरवंध ॥ न्यायरी· तिगुनरीतिसव ॥ विनाविद्यानरअंध ॥ २० ॥ विद्या सेवुद्धीवढै, विद्यारोजीसार ॥ विद्याविनभागन खुले, वडाविद्याउपकार ॥ २१ ॥ विद्यासेआद· रमिलै, विद्यासेसन्मान ॥ विद्यासेशक्तिवढै, वि· द्यायुक्तीज्ञान ॥ २२ ॥ विद्याविनउक्तीनहीं; वि- द्याविननहिंरिद्धि ॥ विद्याविनवुद्धीनहीं, वि- द्याविननहिंसिद्धि ॥ २३ ॥ विद्याकोचोरनलगै ॥ खरचेखूटेनाहि ॥ ज्यौंखरचैत्यौंवहुवढै, हो यशजगकेमाहिं ॥ २४ ॥ विद्यासागरहैवडो, वि- द्याकोनहिंछेह ॥ जोचाहोसोफललहो, विद्यावड

पनएह ॥२५॥ विद्यारूपसमानमें ॥ विद्यारूपविवाद ॥ विद्यारूपविरूपकी, विद्यारूपसँवाद ॥ २६ ॥ वैद्यकज्योतिषतर्कमत ॥ सवविद्याआधीन ॥ विद्याविननरवेसुरत, कहांकरेपरवीन ॥२७॥ कुलमेंविद्यावंतइक, दीपकहोयउजास ॥ अंधेरो सोशठनसे, कहाकरेपरकास ॥ २८ ॥ दृष्टीविद्या वानकी, चहुँदिशिपहुँचेजाय ॥ विद्यामेसवगुण वसे, विद्याविनानकाय ॥ २९ ॥ विद्यामेंलज्जा तजो, देखोग्रंथअनेक ॥ तंतसारमेत्यारकर, पेमी धारोटेक ॥ ३० ॥ गुरुकृपाख्यातिरजमें, ह्वेजोवा-रंवार ॥ आछीवुधिह्वेशिष्यकी, विद्यासारंमार ॥ ३१ ॥ विद्यासेदिगविजयव्है, विद्यामेंमवजीन ॥ विद्यासेपूरणपुरुष, होयअजीनहुजीत ॥ ३२ ॥ वातांचतुराईविद्या, आमकेदिनयाद ॥ जाताजु गामजावगी ॥ निभमीआदिअनाद ॥ ३३॥ धनि हैविद्यावानको, धनिजननीधनितात ॥ धनि

धनिहैगुरुदेवको, धनिहैउनकीजात ॥ ३४ ॥ अरजीकरतअजीतए, बहुतनमेंमेंबोध ॥ चूकभूलकोजांचकर, शुद्धकरोकविसोध ॥ ३५ ॥ उगनीसौ अठारवें, दीपमालशनिदिन्न ॥ कियोसंपूरणग्रंथको, पढ़मनहोयप्रसन्न ॥ ३६ ॥ ॥

॥ अथ शिक्षावत्तीसीप्रारंभः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्रीवल्लभविठ्ठल प्रभु, गिरिधरगोविंदराय ॥ वालकृष्णगोकुलरवी, यदूश्यामघनसाय ॥ १ ॥ गढ़ जेसाणै पे तपै, रावलश्रीरणजीत ॥ यहिशिक्षावत्तीसिको, म्हेता करीअजीत ॥ २ ॥ मंत्रीसेवनकीजिये, नृपसेवन केकाज ॥ केवलनृपनहिंसेइये, सेवेहोयअकाज ॥ ३ ॥ पहलोभयभगवानको, भयदूजोभुवपाल ॥

केकारजकीजिये, समेविचार विचार ॥ ५ ॥ सब दिनहोयँनएकसे, समुझविचक्षणवात ॥ वरतनए-सीवरतिये, आदिअंतजोजात ॥ ६ ॥ खावोपी-वोखरचलो, करलोसुकृतसुकाम ॥ तनमनधनथिर नहिंरहे, थिररहैगोविंदनाम ॥ ७ ॥ नितउद्यम करुआपनो, नितगोविंदगुणगान ॥ नितविद्या अभ्यासकरि, नितप्रतिवड़ीसुजान ॥ ८ ॥ वृथा कालनहिंखोइये, वृथानवकियेवाद ॥ वृथाननिं-दाकीजिये, वृथासोचउन्माद ॥ ९ ॥ अतिलाल-चअतिआकसी, अतिनिद्राअतिघात ॥ अतिस-र्वत्रनकीजिये, अतिहाँसीउतपात ॥ १० ॥ नृप नारीअरिचोरजन, कपटकूटचुगलान ॥ नदीनखी भूंगीअगन, इन्हविश्वासनमान ॥ ११ ॥ हिकम-तिकरिअरुउदरभरि, किसमतिपरिरहिनाहिं ॥ हिकमतमें किसमत वसे, करि देखो जगमाहिं ॥ ॥ १२ ॥ भावेज्योंखावोमती, वहतोजगतसुहाय॥

केकारजकीजिये, समेविचार विचार ॥ ५ ॥ सब दिनहोयँनएकसे, समुझविचक्षणवात ॥ वरतनए- सीवरतिये, आदिअंतजोजात ॥ ६ ॥ खावोपी- वोखरचलो, करलोसुकृतसुकाम ॥ तनमनधनथिर नहिंरहै, थिररहेगोविंदनाम ॥ ७ ॥ नितउद्यम करुआपनो, नितगोविंदगुणगान ॥ नितविद्या अभ्यासकरि, नितप्रतिवड़ीसुजान ॥ ८ ॥ वृथा कालनहिंखोइये, वृथानवकियेवाद ॥ वृथानिं- दाकीजिये, वृथासोचउन्माद ॥ ९ ॥ अतिलाल- चअतिआकसी, अतिनिद्राअतिघात ॥ अतिम- र्यत्रनकीजिये, अतिहाँसीउतपात ॥ १० ॥ नृप नारीअरिचोरजन, कपटकूटचुगलान ॥ नदीनखी भृंगीअगन, इन्हविश्वासनमान ॥ ११ ॥ हिकम- तिकरिअरुउदरभरि, हिकमतिपरिरहिनाहिं ॥ हिकमतमें हिकमत वसै, करि देखो जगमाहिं ॥ ॥ १२ ॥ भावेज्योंखावोमती, वहनोजगनसुहाय॥

कअंतप्रमान ॥ २१ ॥ साततपतवर्षासहैं, प्रभुइ-च्छाप्रतिपाल ॥ सर्ववस्तुसंग्रहकरो, प्रापतफलको काल ॥ २२ ॥ दशाविदशाकोदेखके, तीखीतरक निकाल ॥ सपनेतरसोख्यालहोय, कटैआलजंजाल ॥ २३ ॥ थिरतातेविपताकटै, यतनाकियेदुख दूर ॥ श्रमसेसुखउत्पन्नहै धरमसेधनहैपूर ॥ १४ ॥ धरनीसेधरध्यानतूं, हटेहानसवजान ॥ धरणिवडी याजगतमें, ढकैदोषपरवान ॥ २५ ॥ जलजमीनकेयोगसे, पैदायसजरहोय ॥ जोवोवैमोईलुनै, मेहनतकरफलहोय ॥ २६ ॥ रागवसीरसचीजरँग, चंचलगुणउजलान ॥ धनखोवनकोमनहुवै, करौ प्रीतिगणिकान ॥ २७ ॥ रहतेसुखमेंमित्रसव, दुखमेंरहैनकोय ॥ विपतविदारनकोखरो, दुखमें मंत्रीहोय ॥ २८ ॥ रतिरहेतेयशरहैरी, गयेरीतिसव जाय ॥ जन्ममरणयाजगतमें, रीतिविनानहिंकाय ॥२९॥ सवहीस्वारथकेसगे, परमारथकोकोय ॥

सोंसोंस्वारथसोसधे, परमारथमतखोय ॥ ३०
तजज्वारीतजतस्करी, तजपरद्रोहअज्ञान ॥ त
कुसंगतजकूटक्त, तजदुर्मतितजहान ॥ ३१
भक्तिकियेभगवतामिलें, शक्तिकियेसिधकाम
उक्तिकियेआदरमिलें,युक्तिकियेजगनाम ॥ ३२
राखसुशीखसुसाँचवढ, रखलिहाजरखरीति ॥ क्ष
मादयारखशीलसत, रखसँतोपसुधिप्रीति ॥ ३३
जुरतफुरतअरुखुरतसे, सिधिकारजसवहोय
म्हेताअजीतकोकियो,निश्चययहकरिजोय ॥ ३४
भूलचूकसवसमझकै, करिकवींद्रसुधसोध ॥ सुनअ
जीतकीवीनती, मोमैंनहिंवहुबोध ॥ ३५ ॥ सत
उनीसअठ्ठारवैं, आश्विनसुदिदशराव ॥ भयोसम
पतग्रंथयह, करिअजीतसिंहचाव ॥ ३६ ॥ इतिश्री
शिक्षावत्तीसीमेहताअजीतकृतसंपूर्णा ॥श्रीरस्तुछंद
घनाक्षरी ॥ छापेहैंसुधारकरविद्याअरुशिक्षाजामें
दोहराछतीसदुजे छत्तिसप्रमाणहैं ॥ विपतिविदार

केो विद्यासों नओरकछु, संपतसुधारवेमेंशिक्षावल
मानेहे ॥ कुसंगतिकेनाशवेकोविद्यामानिनखड्ग और
शिक्षाविनानरदेहीपशुकेसमानहे ॥ कहेंकविश्री-
धरश्रीरणजीतनृपतिसों, मेहताअजीतसिंहमंत्रीबु-
द्धिवानहे ॥ १ ॥ कुंडलियाछंद ॥ गादीजेसल-
नगरकी, श्रीरणजीतनरेश॥राजतअपनेदेशमें, मानो
उदितदिनेश ॥ मानोउदितदिनेश, धर्ममर्यादाजा-
ने ॥ राजनीतिरसरीतिन्यायअन्यायपिछाने ॥ श्री
धरकवितावदे मंत्रिकीबुद्धिअनादी ॥ सुवसवसो
सबदेशअचलश्रीनृपकीगादी ॥ २ ॥ दोहा ॥ पु-
ष्करछायामध्यहे, परशुरामसुखधाम ॥ विप्रनल-
मावादयो. श्रीधरकविहेनाम ॥ ३ ॥ इतिशिक्षाव-
लीसमाप्ता ॥

॥ वीतरागलक्षण ॥

दोहा ॥ ममाइन्द्रिहिंआदिजो, होतदेहधरिभो-
ग ॥ कायवीटसमजोगने, वीतरागसोलोग ॥ १ ॥

॥ विवेकलक्षण ॥

दोहा॥देहप्रपंचअनित्यहे,आतमनित्यवखानि ॥
सारासारहिंजानिवो, यहविवेकसामानि ॥१॥

संकष्टनाशनगणपतिचतुर्थीकथा.

चौपाई ॥ गौरीपुत्रफरसकरधरें ॥ मूषेचढेंवि
घ्नपरिहरें ॥ जो तोपेंतोऋधिसिधिदेत ॥ जोरूठेंतो
दुखकरलेत ॥ काश्मीरमुखमंडनमाय ॥ शारदलगूं

[॥ तवप्रसादहिरदेमेंधरूं ॥ मंदबुद्धिमें
ं ॥ पुरीअयोध्यारामकोथान ॥ सुलख-
परधान ॥ चंदनदृवधूपलियेहाथ ॥ सि-
राजूसाथ ॥ नितगणपतिकीपूजाकरे ॥
वानिजवोकरे ॥ आपनफिरेगाँवदोचार॥
ल्वंतीनार ॥ तीजेप्रहरनगरमंचरे ॥ घू-
जाकरे ॥ मोदकलाडूदेइअहार ॥ गणप-
रेंअपार ॥ मासछमासीवणिजेगयो॥वर-
धारोभयो ॥ भँवराकाटेमाछरखाँय॥भू-
फिरेवनमायँ ॥ भूल्योमारगभयोगँवार ॥
नखंडअपार॥ अतिस्वरूपदेख्योसुकुमार।

जायबेलकीडाल ॥ सूतोसाहजगायोजाय ॥ वन
चनशब्दकऱ्योकिलकाय ॥ साहापुत्रमैंतोपोंतोहिं॥
जोमांगोसोपावोमोहिं ॥ स्वामीमँगोंएकपरसाद ॥
पृथ्वीगाड्योमोयबताय ॥ गयोअयोध्यापुरीविच
संगा ॥ जहंगोविंदपठेकरमंगा ॥ ताकेखेतमेंमिली
खजूर ॥ पूरवदिशाहाथहोयदूर ॥ पहफाटीभिसारो
भयो ॥ लादिफांदिसाहाघरगयो ॥ नगरपहूंचाऊ
गोसूर ॥ वँटीवधाईवाज्योतूर ॥ दोउकरजारीकामि
नीकह्यो ॥ स्वामीरातिकहाँतुमरह्यो॥तुमाविनराति
अकेलीरही ॥ होअचेतभूमीपडरही ॥ कागिनिक
हैसुनौभरतार ॥ पूजोदेवकरोजेवनार ॥ हमतुमदु
खितविहानीरात ॥ पौडोपलँगकरोकुशलात॥साह
पुत्रतवलियेकुदाला॥सुलखणचलिभेखोदनसाला॥
जायखोद्योगोविंदकोखेत ॥ लाग्योवक्रतुंडसेहेत ॥
देखभूमिकोहरपितभयो ॥ काढविनायकखोल्यांल
गो ॥ हाथमेंफरसामूपेचडे ॥ विचाविचभूपणमोती

टूटालोहरुसांकलझडी ॥ राजाबोल्योदेवीमाय ॥ जीवदानदेलागोंपाय ॥ अचकीमाताजोमैंउवरूं ॥ सुलक्षणसाहककेंहैंसोकरूं ॥ संकटचौथीअँधारीहोय॥ वाकोव्रतकरिहैंसवकोय ॥ करकेकणमोतीगलहार॥ गणेशचौथिफलदेतअपार ॥ ऋधिसिधिकरैंभरैंभंडा· र ॥ अनधनसुतकुलदेतशृंगार॥ जोयहकथासुनैचि· तलाय ॥ मनवांछितफलसोनरपाय ॥ संकटचौ· थिकोगायोंभेद ॥ जैसेनिर्णयकीनोवेद ॥ दोहा ॥ जोयाकोसीखैसुनै, नरनारीमनलाय ॥ निश्चय· मनकीकामना, पूरैंश्रीगणराय ॥ इतिश्रीसंकट चतुर्थीकथा संपूर्ण ॥

॥ अथ विरहवर्णनवारामासी प्रा० ॥

॥ टेर ॥ कहँढूंढरीसियारामलछमनकोंतैंनेपटादिया कीसवनकूं ॥ १ ॥ पहिलामहीनारीलगाचैत्रका मासा ॥ केकईकहैसुनराजा ॥ रामलछमनजीभेजदे वोवनवासा ॥ मांगांवारावरसकेपासा ॥ करेराज

जीभरतशत्रुघनकासा ॥ सबपूरेमनकीआसा ॥
॥ दोहा ॥ रामचलेबनवासको, दशरथतजेपरा-
न ॥ सबदुनियांधवरातहे, तोयाकेकइलगीपछना
न ॥ नहिंचलनारीबिनारामगेमेरेघरको ॥ १ ॥ तें
ने० ॥ सखीरीग्रीषमऋतुवैशाखा ॥ नहिंघरमेंराम
कोराखा ॥ मेरेहोतीरीजनमजनमकीमखा ॥ वेपु-
त्रदोउदशरथके ॥ कौसल्याजीयहीवचनमुखभाखा ॥
जलसेभरआंईआखा ॥ दोहा ॥ ग्रीषमऋतुवै-
शाखकी, कहकोशल्यारोय ॥ रामलखनवनकोगये,
नजानोकहहोय ॥ भईवैरनरीभलालजायाकुलको
॥ २ ॥ तेंने० ॥ सखीजेठमेंअगिनपडतजलथलमें ॥
लूलागतगोरेतनमें ॥ दशमहीनाजीरटेकटेसुखदुख
में ॥ जदजलमेंराममेंमेरेघरमें ॥ यहिअवसरजीदी
योदुखविधिबुढपनमें ॥ दोउभाईगयेवनखंडमें ॥
दोहा ॥ ज्येष्ठमहीनारीसखी, वरसतअगिनलपा-
र ॥ रामलखनवनकोगये, संगमेंसीतानार ॥ लू

लागतरी ॥ श्यामसुंदरगोरेतनकी ॥३॥ तैंने० ॥ सखीआषाढमेंअववर्षाऋतुआई ॥ चारोंदिशावदरियाछाई ॥ वरसैपानीरीचलैपवनपुरवाई ॥ योकहतिकौशल्यामाई ॥ गयेवनकोजीवैतपसीदोउभाई ॥ जिनकीअजहुँखवरनाहिंआई ॥ दोहा ॥ असाढमहीनारी सखी, वरसतहैघनघोर ॥ सीतालक्ष्मणरामजी, केहिभीजतहैंठोर ॥ वरषाऋतुमेंजीनहींरामेमेरेघरको ॥४॥ तैंने० ॥ सखीहोंनाथारीवनमेंराम जावनका ॥ ज्यांनिमतपडारावनका ॥ वरषाऋतुतुमजी मेंवरसैसावनका ॥ जहँदरमंदरथानउका ॥ होनाथाजीऋतुवनफलखावनका ॥ पानीनदीकुहातलावनका ॥ दोहा ॥ जगसवमेंविख्यातहै चित्रकूटनिजधाम ॥ सीतालक्ष्मणरामजी जहांकियेविश्राम ॥ स्वायकेरहनाजीचवदावरसवनफलको ॥५॥ तैंने० ॥ सखीभादौंरीभादोंवरसताआवै ॥ नादियनमेंनीरनहींमावै ॥ संतवडीरीनितउठगिरगोखावै ॥ राममनमें

अंदेसोलावे ॥ मायारूपीरीमिरगहाथनहिंआवे॥प्रभुधनुषबाणलेधावे ॥ दोहा ॥ जोवियोगभयोरामको, सुनियोचित्तलगाय॥ ताकेपीछेजानकी, रावण हरलेजाय ॥ सखीकोनजानेरीहोनहारकीगतको॥ ॥ ६ ॥ तेंने० ॥ सखीआसोजमेंचढ़ेरामदलसारा॥ लंकापरकियेनगारा ॥जोगरवीजेगरवकियामोइहारा ॥सागरकानीरकियाखारा॥ दलफिरगयेजीचले खड्गदुधारा ॥ रावणकोरामजीमारा ॥ दोहा ॥ रावणमान्योरामजी, सीताहरनकेकाज॥भक्तविभीषणकोदियो, गढ़लंकाकोराज ॥ वनटनकरजीछुटा लियेदेवनको ॥७॥ तेंने०॥ सखीकातिकमेंरहेरामलंकामें॥सबदैत्यरहेडंकामें ॥जिनगरवेसोमारालियेहंकामें॥हनुमानबड़ेथंकामें ॥पीछेसैन्यफिरीयकडंकामें ॥गढखाईकूदफलंकामें॥दोहा॥रावणमान्योरामजी, बीत्योकातिकमास ॥ कौशल्याचिंताकरे,घरआवनकीआस ॥ अबकबेरामगुर्नीसियरको ॥

उड़ावे॥कौशल्याजीरामविनादुखपावे ॥ जिनअन पानीनहिंभावे ॥ दोहा ॥ माहमहीनारीसखी, घरघरउड़तअबीर ॥ सीतालक्ष्मणरामविन,भाइभ रतदिलगीर ॥ धनधनवेहेंजीजिनकेरामगुणीसेघर को ॥ ११ ॥ तेंने० ॥ सखीफाल्गुनमेघरघरहोहिहो री॥उडेअबीरभरभरझोरी॥ घरइंदरकेजीमृगमदके शरघोरी॥खेलैसबसखियनकीटोरी ॥ ज्यामेंएकस- खीजीकुछस्यानीकुछभोरी ॥ याविनारामकिसिहो- री ॥दोहा॥ बारामहीनाबरसके, बारोवीतेआय॥ तेरवांमहीनाअधिकका, तेमेंअबदूंतनेंसुनाय ॥ घ रआवोरीवीतेबरसअवधिको ॥ १२ ॥ तेंने० ॥ तेर वेंमहीनारीरामचंद्रघरआये॥कौशल्याकंठलगाये ॥ भाइभरतजीबांहपकडबैठाये॥घरघरमेंबजतवधाये। गुरुविजयपुरीजीमुसंदकागुणगाये ॥ यहतेरामासी बनाये ॥ दोहा ॥ मन्नरामकहतागुणी, बीतेतेराम स ॥ सीखेगावेजोसुने, तेहिवैकुंठनिवास ॥ वेनरता

जीनहिंतरसैंअनधनको ॥ १२ ॥ तेंने० ॥ इतिश्री
रामवनवासविरहवर्णनवारामासीसंपूर्णा ॥ ॥

॥ कुवरीसंगविहारवर्णनवारामासी ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ टेर ॥ कृष्णअकेले
गयेसवव्रजवाला ॥ कुब्जादासीकंसरायकीमोहन
परजादूडाला।असाढ़आशाकरूँजीतुह्मारीनारिअ-
केलीकुंजनमें ॥ हमकोछांडिवसेजायकुब्जासँगम-
धुवनमें ॥ दासीसेतीप्रीतिलगाईमोहालियातिनछिन
में ॥ सौतिहमारीजन्मकीवैरिनविलमायाहरिनैंदन-
में ॥ पतियालिखतिमतलवगरजौंकैसेलिखूंदेगये
टाला ॥ १ ॥ कुब्जा० ॥ सावनआवनकहगयेसजनी
हमसेमोहनवचनाकिया ॥ मैंखडीदेखतीराहसखी
रीअजहुँनआयेकृष्णापिया ॥ निजनिजकेरतिवार
नगरमेंसवसखियाशृंगारकिया ॥ काजलटीकादि
येसीसपरवस्तरओढेनयानया ॥ श्यामविनामेरीसे-
जअहेसूनीवागनमेंझूलाडाला ॥ २ ॥ कुब्जा० ॥ भा-

दोमहीनागणेशचोथहेमवमाखियांगणपतिपूजें ॥ धूपदीपसिंदूरपुष्पनैवेद्यचढ़ेलड्डूगंजे ॥ हाथजोडकर खडीराधिकानाथअरजमेंकरूंतुझे ॥ स्यामहमारा मिलायदेओविनमोहनकछुनहिंमुझे ॥ इतनाकारजकरोगजाननऋधिसिधिकेकरनेवाला ॥ ३ ॥ ॥ कुब्र० ॥ आसोजमहीनेदेवीअंविकाराधापूजेअपनीगरज ॥ हाथजोडकरकहेवीनतीमानामेरीगुनोअरज ॥ पियागयेपरदेशद्वारकापियकारणहुइपीलीजरद ॥ पीवपीवकरतीरैनदिनएतोमेरेवडादरद ॥ इतनाकारजकरोअंविकाभेटचढाऊंकनरमाला ॥ ॥ ४ ॥ कुब्र० ॥ कार्तिकउत्तममासमेंहेमवमखिया कार्तिकन्हावें ॥ वेगसवेरेउठकरहरिमंदिरहरियश गावें ॥ दलेमहलअम्बरमंदिरआजदिवालीदरसावें ॥ पूजेलक्ष्मीनारायणनरपतिसतामनचितलावें ॥ स्यामबिनामेरेमनमेंसूनीओरजगतमेंउजियाला ॥ ॥ ५ ॥ कुब्र० ॥ अगहनमेंमोहनघरनाँ

वाभरवाती ॥ मैंतेरेवास्तेरेसमीपलँगविछोनाकरवा-
ती ॥ आपविगरमैंसोऊंअकेलीसूनीसेजफटैछाती ॥
दिलअपनेकोसोचकैलाखयतनकरसमझाती॥डाल
गलेमेंफांसीगयेब्रजवासीवतावोहमकोलाला ॥ ६॥
॥ कुव० ॥ पूसरोसमेंकरूंजीकृष्णापरइनऋतुमेंआये
नाहीं॥मारेठंढकेनींदनआवैमुझेसेजमाहीं ॥ जाडाने
मोहिं वहुतसतायाफेरकामनेडसखाया ॥ मैंझुरझुर
पिंजरहुईआयचेहरापरस्याईछाई,॥ ज्योंज्योंयादमों
हिंआवतिहैत्योंत्योंवदनपडैकाला॥७॥कुव० ॥ मा-
हमहीनेवसंतपंचमीजोघरहोतामेराकंत ॥ सवसखि
यनमेंखेलखेलतीखूवमचातीआजवसंत ॥ मेंखेलन
कोकैसेजाऊंनहींमिलेरीमुझेकंत ॥ दिलअपनेमेंसो-
त्रकरवैठरहींमेंआपनिचंत ॥ चैननहींदिनरैनसाँव
रेदरसदेवमुरलीवाला ॥ ८ ॥ कुव० ॥ फागुनमेंमो
हनघरनाहींफागपियाविनलागीअगिन ॥ गोरेव-
दनमेंवुझतीनाहींआयकरोकोटकोडयतन ॥ सँग-

कीसहेलीवनीअलबेलीहोरीखेलेंमंगमाजन ॥ श्या-
मद्दमाराजायकरआपलगाईकुब्जामेलगन॥ फागु-
नआगिलगीहैवदनबीचतनकेबीचउठीज्वाला ॥९॥
॥ कुब्० ॥ चैत्रमहिनालगामखीरीसचमखियांपूजें
गणगौरी॥उनकेबालमलवैहरिहरिदृवजीगुलातोर।
मेंभीपूजूंवाईगवरज्यावेगमिलावोमोहनचितचोर ॥
गयेद्वारिकाप्रीतिकरकुबजासेहोगयेकठोर ॥ इतनो
कारजकरोजिगवरजानहितोहाथलेऊँमाला ॥ १०॥
॥कुब्०॥लगामासवैशाखग्यारवांग्रीपमऋतुआईहे-
ली ॥ विनाश्यामकेवस्त्रसवत्यागगलेडालीसेली ॥
कितोवारवांमासवीचआवेंगेकृष्णमेरीजोली ॥ क-
रकेयोगिनकाभेसजायढूंढूंगीकृष्णकोगलीगली ॥
यहीनेममेंलियाजीवविचराखोपतिमुरलीवाला ॥
॥११॥ कुब्०॥ ज्येष्ठमासमेंपड़ेधूपलूलागेअंगमेंराजा
बोले ॥ वेगपधारोआपसाँवरोलपटावोमोहिआय
गले ॥ बीतेबारहमासआगयोअधिकमासअंगेजो

भले॥लागेजोफरकनअंगसबभुजानेत्रसुखवामचले
यहीशकुनपरमिलैंकृष्णवाजे जोवधाईसबव्रजवाल
॥ १२ ॥ कुब्० ॥ अधिकमहीनेकृष्णपधारेराधे
दीयादर्शन ॥ कसअँगियादीजोटूटकरसुखीहुईमन
मेंपरसन। । श्यामपधारेआजसखीरीसबव्रजहोरही
हैधन्नधन्न ॥ वजैवधाईहोरहीसुखवत्तीसवहीकेमन
प्रेमसागरमेंअमृतवरसैतनकीतृपामिटीज्वाला॥१३॥
॥ कुब्० ॥ इतिश्रीकृष्णकुवरीसंगविहारवर्णनवा
रामासीराधाजीकीसंपूर्णा ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

चिंतावर्णन–कुंडलिया.

चिंताज्वालशरीरवनदावानललगिजाय ॥ प्रगटधु-
वांनहिंदेखियेउरअंतरधुँधुवाय ॥ उरअंतरधुँधुवा-
यजरैज्योंकाचकीभट्टी ॥ जरिगयोलोहूमाँसरहीय-
कहाड़कीटट्टी ॥ कहिगिरिधरकविरायसुनोहोमोरे
मिंता ॥ वेनरकैसेजियेंजिन्हेंतनव्यापतचिंता ॥१॥
इति० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दानलीलाकाबारामासारंगत० ॥

॥ टेर ॥ श्रीकृष्णको ॥ तूदेरीदधिकोदानगुजरमतवारी ॥ टेर ॥ गोपीकी ॥ अजहुँनलाग्योम्हाण दानगिरधारी ॥ तूंसुनहुँग्वालनीखडीहमारीबात। दूधबेचनकोनितआवतनितजात ॥ लागेदानहमारोसोतूचोरेजात ॥ बहुतादिवसहोगयोहैतोकूंखेरहमारीखात ॥ तुमदानदेतोनहिंहमकोहमदानलियोचांत ॥ जोनहिंदेतीदानहमारोतोहोईउतपात ॥

॥ ४॥ देतिनहींतूदानहमाराकरतीमुखसोंजारी ॥ चोरचोरकरदानलेजावैउलटीदेतीचोरी ॥ चेराहम हैमातपिताकेतूहैकंसकीछोरी ॥ जावोकंसकोवेगपुकारोसबमिलव्रजकीगोरी ॥ दानदियेविनसुनोरी ग्वालिनकोइनजावोकोरी ॥ दधिकोख्यालमचाऊं ऐसेज्योंफागुनकीहोरी ॥ हेगुजर० ॥ ५ ॥ व्रजमें सबऐसाकहतेहैंकृष्णगोपिकाजोडी ॥ हँसीखुसीसे खेलहतासोआजकोनविधितोड़ी ॥ व्रजमेंरातिदानकीसारीकंसरायकीछोड़ी ॥ आजअनोखीआपचलावोलीनिचहौकिमिकोड़ी ॥ नंदयशोदावडे भूइहैंवाहीदयाहैथोड़ी ॥ औरहोयतोमुहुंकरादेउँव धुवाबाँधकेडोरी ॥ जीमा० ॥ ६ ॥ ऐसोडरक्या मोहिंवतावैक्याहैकंसकोवैरी ॥ निहचैकंसकरूंरजधानीजानुउसीकोवैरी ॥ उग्रसेनकोराजकराऊंयही नामअवठहरी ॥ देहोकेनहिंदेहोदानतुमइसकामुद्दा री ॥ पीछेखवरपड़ेगीतुमकोयाहिसमझतूंलेरी ॥

लीलईछिनाय ॥ नाकपकड़अरुगालमरोडेलेतेरो
ड़ानचुकाय ॥ नैननञडमावनकोल्गगयोअवक्यों
मनमुसकाय ॥ जीमानृ० ॥ १० ॥ मोहनरेरम-
खामोंबोलेचालोमायहमारी ॥सम्बामवंसंगहेंमोह-
नकेघेरीसखियांसारी ॥ ढीरफोरकछुखायगयेहेंकी-
न्हीअंगउघारी ॥देखगूजरीराजरकीनायाविधिले-
यमुरारी ॥ कह्योदानविनमिलेजेठकोदेखोक्यागत
थारी ॥अवभादोंकोकीचमचायोपहलेक्योंनविचा-
री ॥ हेगूजर० ॥ ११ ॥ पहलेनाहिंविचारीमोह
नतुमवाजोगोपाल ॥ तुमहमहिलमिलखेलेंमोहन
हमगोपीतुमग्वाल ॥ आजुअनीतिकरीतुमहमसे
खूबकरीप्रतिपाल॥अबेपुकारूंजाययशोदालेहोंआ-
पसँभाल ॥ ऐसोदांवपरेजोतोपरलगेनफेरूंताल ॥
ज्योंमकड़ीआसोजमेंनितउठगूंथैजाल ॥ जीमानू०
॥ १२ ॥ गूंथेसवमिलिजालगूजरीराखोपूरीलाग ॥
जायपुकारोमातयशोदागाज्योसवहीराग ॥ छीन

ज्योंतुमरीतिकरीसवहमसेकहिहोंमवेवनाय ॥देहुंतु-
मकोपूरताड़नातेरीयसुमतिमाय ॥मैभीजानूंग्वालि-
नऊपरराखेंमीतिसवाय॥रामनाथकरजोड़कहतहैक-
रिहैमेरीसहाय॥१६॥इतिश्रीदानलीलाकीवा० सं०॥

॥ वामनलीला–रागिनीखम्माच ॥

हरितुमवलिछलिकेकाकीन ॥ बांधनगयेबँधायेआ
पुहिवड़ीसयानीकीन ॥ लियेलकुटियाद्वारे ठाढ़ेनि-
शिवासरआधीन ॥ तीनपेगपृथ्वीकेकारणवलिको
सर्वसदीन ॥ सूरदासप्रभुवलिकीविनतीहरिचरणन
चितदीन ॥ १ ॥

अथ दंड देनेके गुण ।

दोहा–प्यार किये वहु दोष हैं, दंड किये वहु सार ॥
पुत्र शिष्यहूको करे, ताते दंड विचार ॥

अथ तितिक्षालक्षण ।

दोहा–आतपशीतक्षुधातृषा, इनकोसहनस्वभाव ॥
ताहितितिक्षाकहतहैं, कोविदमुनिवरराव ॥ १ ॥

॥ यशोदाश्रीकृष्णकी बारामासी ॥

रंगतखेलमें ॥ ॥ टेर ॥ यशोदाकी ॥ आ
छोउजागरजनम्योंलाड़लातूमेरेकन्हैया ॥ टेर
कृष्णकी ॥ कैसोउजागरगायोलाड़लोयशोदामैया॥
कुलहिंउजागरपुत्रजनमिकैअच्छोनांवकढ़ायो ॥ दू
धदहीकीकमीनतेरेक्योंलूटलूटदधिखायो॥वड़ेघरन
कोजायोवाजैजगमेंचोरकहायो ॥ सखीउलहनोदेग
इमोकोऐसोवचनसुनायो ॥ आजअनीतिकरीसव
गावैवालकनहिंदरसायो ॥वनमेंतेजकन्हैयातेरोज्ये
ष्ठसुरजज्यागायो ॥ तूंमान० ॥ १ ॥ सखियनतेज
सुरजज्योंगायोयातेरीपुन्याई॥ तुझकोउलडनादेगई
सखियाँसवीसांचदरसाई ॥ अवहमतुमकोक्याकहें
माताजोधमकीदिखलाई ॥ एकअरजसुनलेमेरीमाई
याकोजराभरगाई ॥ घेन्योगऊचरावतमोकोसवमि-
लिऐसेआई ॥ जैसेनदीअचानअसाढ़ैदूरदेशकीना-
ई ॥ हेसुन० ॥ २ ॥ वहुतदिवसलगदेवमनायोएक

पुत्रतूपायो ॥ सोभीवड़ोउजागरजनम्योजगमेंआं-
खीआयो ॥ सखियांवचनमखीकोकहगईतेंतेरोदर-
सायो ॥ सुनीवातकोफेरनिजायोदेखीगोपीअंगव-
तायो ॥ सखियाकह्योकन्हेयासोआपरपटदधिखायो
॥ ज्योंसावनकीखुरड़मायनेइंद्रआकरोआयो ॥
रेतू० ॥ ३ ॥ नहिंमानेतुमसाँचहमारीयेकआजकी
गावै ॥ येसखियांनितदहीवेचनेवहीडगरनितजावे
॥ मेंजाऊंतेरीधेनुचरावननितउठमोहिंखिजावे ॥
एकएकहोयघरसेनिकसेघटारूपवनिआवे ॥ एकस-
खीयामेंअतिचपलाचढ़चढ़वचनसुनावे ॥ ज्योंभा-
दोंकीघटावीचमेंदामिनसीदरसावे ॥ हेसुन० ॥ ४ ॥
हँसीखुसीसेघरसेनिकसेधेनुचरावनजावे ॥ संगतते-
रीरहेग्वालियाओरआकलक्योंआवे ॥ बुंदस्वाति
-कीएकहोयपहेंसंगतकाफलपावे ॥ मोतीजहकरपूरवं
समेंलोचनफेरकहावे ॥ कामकरेतेरेसंगीसाथीतेरो
नांवधरावे ॥ स्वातिबुंदआश्विनकेमोतीक्योंपानीउ-

सुनमा० ॥ ८ ॥ साँचकहोमनमोहनलालज्योंवन-
मेंवरताई ॥ क्याक्याहालसखीनेवरत्योक्याक्याक-
न्योकन्हाई ॥ साँचकहूँसखियनकोलालातांचिनमें
घमकाई ॥ कहूँसीसखीलगेतीरसीयातेंकेसेगाई ॥
प्यारीलागेकुँवरलाड़लोमोहूंतेरीमाई ॥ सूरजप्यारो
सदामाघऐसोलगैकन्हाई ॥ ॥रेतूमान० ॥ ९ ॥सु-
नहुवातमेरीमातयशोदाकहुँमाँचवरताई॥ घेन्योग-
ऊवरावतमेरीमुरलीलईछिनाई॥ नाकपकड़मेरोगा-
लमरोड्योनिजन्यांदेख्यो आई ॥ तवओछोनहिंऊ-
ठ्योमाईतेरोपूतकन्हाई ॥ पवनरूपहोइदोल्यूफिर
ग्योमटकीसवपटकाई ॥ ज्योंफागुनमेंपत्रनीमकाप-
टकैपवनसदाई॥हेसु० ॥१०॥ साँचकहेतसुनोकन्है
याहमेंरीसनहिंआवत॥साँचझूंटकीखवरपडेजदसुनै
दुतरफीवात॥सखियांसवलहोयतोहिंछांडयोतुम्हेंदि
खायोहात ॥ दिनकोरूपकन्हैयासाजोनिजसखिया
दरसात॥पहलेसवलफेरहोइइसमेंतुल्यघटतलगजा-

त ॥ ज्यादाफेरवरोवरआगेघटैचैत्रसेरात ॥ रेतुमा०
॥ ११ ॥ साँचकहूँफिरवांधघुमायोमोहिंयमुनाकेती
र ॥ सवसखियांमिलवहुडरकायोनैनाढरक्योनीर॥
तवमैंझीरझीरकरडारासवसखियनकेचीर ॥सखिया
डरवतरायोतेरोमनमेंमेरेधीर ॥ मेरेपोपतुमारोमाता
तेरेमेरीपीर ॥ ज्योंवैशाखधूपमेंपोपणलघुवृक्षनको
नीर ॥ हेसुमना० ॥ १२ ॥ तेरेपोप हेमारोलालतु
सीसोंवनमेंजावो ॥ सखासभीसँग गलेयतुमारीआछी
धेनुचरावो॥ जैसेघरकेछोरावा रूप नौवैसी सोभालावो॥
प्यारेलागोसभीविरजकोउलहना तुममतल्यावो ॥स
खियादरसकारणेआवेंहँसीखुसीचन नो ॥रामना
थकरजोड़कहतहेंआछीमहररखावो ॥ रेतु० ॥ १३ ॥
तेरेहुकुमसेवनमेंजाऊं एकअरजसुनलीजे ॥ सखि
याफेरिकेवातवनावेसोसवहीसुनलीजे ॥गाचरांठकी
खवरपड़ेविनवामेंचितनाहिंदीजे ॥ विनाखवरचित
दियेयशोदाअनल्तदिलमेंछीजे ॥ जेमांमहरआज

तुमरासीऐसीफेररखीजे ॥ रामनाथकरजोड़कहतहे सायसदाईकीजे ॥ हेसुन० ॥१४॥॥इतिझगड़ाय-शोदा श्रीकृष्णकीबारामासीसंपूर्णा ॥ ॥

नृसिंहजन्मोत्सवलीलारागिनीशहाना

शुक्लपक्षवेशाखमासमेंचौदसिनरहरिजन्मलिये ॥ टेक ॥ खंभफोरिहिरनाकुशमाऱ्यो तीनलोकमें ग जेरहे॥ चोवाचंदनऔरअरगजावीथिनकीचमचाय रहे ॥ सुरनरमुनिसवप्रेमाविवशयेसुखसंपातिसव छायरहे ॥ संतदासजीकोभक्तिदानदियोश्रीनृसिंह वहुकाजकिये ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ चातुर्वर्ण्यवलवर्णन ॥

दोहा–विद्या वल हे विप्रको, राजाको वल सैन ॥
धन वेश्यन वल शूद्रको, सेवाही वलऐन ॥

॥ श्रीकृष्णचन्द्रकीजन्मपत्रीप्रा० ॥

नंदजूमेरे मनआनंदभयो॥मेंसुनिमथुरासेआयो॥ल-

गनसाधिज्योतिषकोगिनिकैचाहततुम्हेखुनायो ॥ नंद० ॥ १ ॥ संवतसोमनामशुभभादोंकृष्णपक्षसों नामधऱ्योहै ॥ हैआठमबुधवाररोहिणीहर्षणयोग पऱ्योहै ॥ नंद० ॥ २ ॥ वृश्चिकलगनउचकेउडुपति तिनकोअतिशुभकरी ॥ हलचतुरंगचढ़ेंगेइनकेहोंगे रसिकविहारी ॥ नंद० ॥ ३ ॥ चौथेराहुकन्याकेदिन पतियंहिमंडलयहजीतें ॥ करैंविनाशकंसमातुलको निश्चयकुछदिनबीतें ॥ नंद० ॥ ४ ॥ पंचमबुधक न्याकेसोहैंपुत्रवढ़ेहैसोई ॥ सुखमेंशुक्रतुलाकेसंयुत शत्रुवचैनहिंकोई ॥ नंद० ॥ ५ ॥ ऊंचनीचयुवतीव· हुभोगेंसप्तमराहुपऱ्योहे ॥ भावभवनमेंमकरमहीश्व रईश्वरसवहिंभऱ्योहे ॥ नंद० ॥ ६ ॥ श्यामवरणमेंकेतु लगनमेंमनचीतेएकरिहें ॥ वालपनेकेलक्षणइनकेचो रीमेंचितधरिहे ॥ नंद० ॥ ७ ॥ नवनिधिवसैलाभ मेंइनकेमीनवृहस्पतिकेरि ॥ पृथ्वीभारउतारनहारेक हतथकितमतिमेरी ॥ नंद० ॥ ८ ॥ यहखुनिनं·

दमहरिआनंपूजिगर्गपहिरायें ॥ असनवसनगज वाजिसभीधनभूभंडारलुटाये ॥ नंद० ॥ ९ ॥ बंदी जनयशगावतपावतसंतनकेमनभाये ॥ व्रजजन्मे श्रीकृष्णमहोत्सवसूरविमलयशगाये ॥ नंदजुमेरेमनआनंदभयोमैंसुनिमथुरासेआयाँ ॥ १० ॥ इतिश्री०

धनकी प्रशंसा ।

दोहा-जाहिअर्थतेहिमित्र अरु, वन्धुआदिमवतान ।
सोजीवतहैजगतमें, सोइपुरुषगनिजात ॥

स्वर्गनिवासियोंके चिन्ह ।

दोहा--स्वर्गी चिह्न मनुष्यके, यहि चार पहिचान ॥
मधुर वचन देवारचन, दान विप्रको मान ॥

अथ शिवस्तुतिअष्टकप्रारंभः ॥

श्रीः ऐसारेष्यानशिवहरिहरकाहांरेकरआननचार्य- चरका ॥ अगड़बअगड़बीडमकडिमकडमरुआने

रँगकरशिरछत्रविराजे ओढ़ेगुदड़ीनवरंगा ॥ ७ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ यकरानीतोरेगोरापारवतीदूजी रानीशिवअर्द्धंगा ॥ तीजीरानीअसलभिलादेजटाजूटशिरह्वेगंगा ॥ ८ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ यकरानीतोरेचंदनधरतीदूजीजलभरलावेगा॥ तीजीरानीधूपदीपलेचोथीजोतजलावेगा ॥ ९ ॥ ऐसारे० अगड़० ॥ तुकारामउस्तादनामहैसाहेवहैसोवहुरंगा देखदाखलापोथीपुराणमेंमतभरवाताअडभंगा ॥ ॥ १० ॥ ऐसारे० ॥ अगडवंअगडवंडिमकडिमकडमरूवाजेशिवशंकरका ॥ इतिशिवस्तुतिअ० सं०

नरकवासियोंके चिन्ह ।

दो०–अतिहिकोपकटुवचनहूं, दारिदनीचामिलान ॥
स्वजनवैरअकुलिनटहल, यहपटनरकनिशान ॥

अथ मुक्तिका उपाय ॥

सो०-मुक्तिचहोजातात, विपयनकोत्यजुविपसरिस॥
दयासरलताशौच, क्षमासत्यपियअमियसम ॥

शिवशंकरका॥टेक॥अंगविभूतिलगायेसदाशिवहा
थलियेनिशिदिनगोला ॥ कैलासछोड़करलौटेमसा
नमेंऐसाहैशंकरभोला ॥ १ ॥ ऐसारे० ॥ अगड़० ॥
खोपरीमेंभोजनकरतागिरिजासोहैंअर्धांगा ॥ सुरन
रमुनिवरध्यानधरतहैंकोईदेवताहैंअदभूता ॥ २ ॥
ऐसारे० ॥ अगड़० ॥ त्रिशूलसेत्रिपुरासुरमाऱ्योती
नलोकमेंअधिकारी ॥ नागनकेरेकुंडलविराजेचढ़ेबे
लकीअसवारी ॥ ३ ॥ ऐसारे० ॥ अग० ॥ कूंडी
अरुसोंटागौराघोटपिलावैनिशिदिनभंगा ॥ गलेरुं
डकीमालविराजेजटाजूटाशिरबहेगंगा ॥४॥ ऐसारे०
॥ अगड़० ॥ विपसेकंठहुवाजवनीआरामनामसुख
सेंवोला ॥ ठंढाशीतललहेरहुवाजवप्रेममगनमेंशि-
वडोला० ॥५॥ ऐसारे ० ॥ अगड़० ॥ जोकोईमांगे
उनकोदेवैऐसाहैशंकरभोला ॥ आकधतूराआपअ-
रोगैफाँकेभागभरझोला ॥ ६ ॥ ऐसारे० ॥ अग० ॥
शिंगीशेलीशिवकोसोहेहाथलियेझोली ॥ वहू

ादियोतव चाहियकौनविचारविचारो ॥ के
पालिवायमहाप्रभु सोतुमदासकोशोकनि-
॥ कोन० ॥ २ ॥ अंगदकेसँगलेनगयेसिय
पीशहुवैनउचारो ॥ जीवतनाबचिहौहम-
विनासुधिलेयइहांपगुधारो ॥ हेरिथकेतट
ोतव लेसियकीसुधिप्राणउवारो ॥ कोन
३ ॥ रावणत्रासदईसियकोतव राक्षसिसों
कनिवारो ॥ ताहिसमयहनुमानप्रभू
ारजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसु
ै देप्रभुमुद्रिविषादनिवारो ॥ कोनहिं०
ाक्तिलगीउरलक्ष्मणकेतव प्राणतजेसुतरा-
॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेतसभी गिरिद्रोण
ो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतव ल-
ोनहिं० ॥ ५ ॥ रावण
कपाशसबैशिरडारो ॥
ःभयोतवसंकटभारो ॥

॥ अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ मत्तगयंदछंद ॥ बालसमै
विभक्षाकियोतव तीनहुँलोकभयोअंधियारो ॥
ताहिसोंत्रासभईजगकोयह संकटकाहुसोजातन
टारो ॥ देवनिआनिकरीविनतीतव छांडिदियोर
विकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहैजगमेंयह संक
[illegible]रो ॥ १ ॥ वालिकित्रासकपीशव
[illegible] प्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहामु

निशापदियोतव चाहियकौनविचारविचारो ॥ के
द्विजरूपलिवायमहाप्रभु सोतुमदासकोशोकनि-
वारो ॥ कोन० ॥ २ ॥ अंगदकेसँगलेनगयेसिय
खोजकपीशहुवैनउचारो ॥ जीवतनाबचिहोहम-
सोंजु विनासुधिलेयइहांपगुधारो ॥ हेरिथकेतट
सिंधुसबेतब लेसियकीसुधिप्राणउबारो ॥ कोन
हिं० ॥ ३ ॥ रावणत्रासदईसियकोतब राक्षसिसों
कहिशोकनिवारो ॥ ताहिसमयहनुमानप्रभू
जायमहारजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसु
आगिसों दैप्रभुमुद्रिविपादनिवारो ॥ कोनहिं०
॥ ४ ॥ शक्तिलगीउरलक्ष्मणकेतब प्राणतजेसुतरा-
वणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेतसभी गिरिद्रोण
सुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतब ल-
क्ष्मणकेतुमप्राणउवारो ॥ कोनहिं० ॥ ५ ॥ रावण
युद्धअजानकियोतब नागकिपाशसबैशिरडारो ॥
श्रीरघुनाथसमेतसबैदल मोहभयोतवसंकटभारो ॥

॥ अथ वजरंगचालिसीलिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बुद्धिहीनतनजानिके, सुमिरोंतनयसमीर ॥ बलबुधिविद्यादेहुमोहिँ, संपतिसहितशरीर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जय हनुमानज्ञानगुणसागर ॥ जयकपीशतिहुँलोकउजागर ॥ रामदूतअतुलितवलधामा ॥ अंजनिपुत्रपवन सुतनामा॥महावीरविक्रमवजरंगी ॥ कुमतिनिवारसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवरणविराजकपीशा ॥ कुंडलकाननभेषहेकीशा॥हाथवज्रउरधुजाविराजे ॥कांधेमंजुजनेऊराजे ॥ शंकरसुवनअंजनीनंदन ॥ तेज प्रतापमहाजगवंदन ॥ विद्यावानगुणीअतिचातुर॥ भक्तकाजकरनेकोआतुर ॥ प्रभुचरित्रसुनवेकोरसिया॥रामलखणसीतामनवसिया ॥ सूक्ष्मतनधरिसियलखिआयो ॥वड़ेरूपधरिलंकजलायो॥भीमरूप धरिअसुरसँहारा ॥ श्रीरघुनाथकेकाजसँवारा ॥ आनिसजीवनिलखनजिवाए॥रामचंद्रतवकंठलगाए ॥

आनिखगेशतवैहनुमानजु वंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ वंधुसमेतजवैअहिरावण लैरघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिपूँजिभलीविधि सोंबलि देहुसवैमिलिमंत्रविचारो ॥ जायसहाय भयेतवहीं अहिरावणसैन्यसमेतसँहारो ॥ कोनहिं० ॥ ७ ॥ कार्यकियेवड़देवनकेतुम वीरमहाप्रभुदेखविचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगरीवको जोतुम सोंनहिंजातहैटारो ॥ वेगिहरोहनुमानप्रभू यह जोकछुसंकटहोयहमारो॥कोनहिं० ॥८॥दोहा॥लाल देहलालीलसे, अरुधरिलाललँगूर ॥ वज्रदेहदानव दलन, जयजयजयकपिशूर॥१॥ यहअष्टकहनुमानको, विरचिततुलसीदास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढै होयदुखनास ॥ २ ॥ इतिश्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकटमोचनहनुमानाष्टकं संपूर्णम् ॥

स्त्रियोंके स्वाभाविकदोषविषे ।

दो०मायामिथ्यामूर्खता, साहसलोभप्रभाव ॥

मेंध्यानजोलावे ॥ सबपररामराजशिरताजा॥ ताको
कामहेतसोछाजा ॥ औरमनोरथजोकोइलावे ॥ मन
वांछितफलसोनरपावे ॥ चारउयुगपरतापतुम्हारो ॥
हैपरसिद्धजगतउजियारो ॥ रामपियारेशंभुदुलारे॥
साधुसंतकेतुमरखवारे ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिकेदा-
ता ॥ असबरदीनजानकीमाता॥ रामरसायनतुम्हरे
पासा ॥ कृपाकरहुदीनलखिदासा॥ तुम्हरेभजनराम
जीपावें॥ जन्मजन्मकोदुखबिसरावें ॥ सबसुखमि-
लेतुम्हारेशरणा॥तुम्हरेसुयशविमलमनचरणा ॥नि-
श्चैनेमभक्तितवभाई ॥ अंतकालरघुपतिपुरजाई ॥
औरदेवताचितनहिंधरई॥ हनुमतसेइसकलसुखक-
रई ॥संकटहरेहरेतनपीरा॥ भजेनिरंतरहनुमतवी-
रा ॥ संकटतेहनुमानछुडावे ॥ मनबचकर्मध्यानजो
लावे॥ जैजैजैहनुमानगोसाँई ॥ कृपाकरहुगुरुदेवकि
नाँई ॥ यहिशतबारपढेजोकोई ॥ छूटेबंदिमहासुख
होई ॥ जोकोइपढेबजरंगचालीसा ॥ होइहिसिद्धि

रघुवरकीन्हेउबहुतबड़ाई॥अहोतातभरतसमभाई॥ सहसवदनतुह्मरेगुणगायो ॥जसकहिरघुपतिकंठल गायो ॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा॥नारदशारद सहितअहीशा ॥ यमकुबेरदिगपालजहाँते ॥ कवि कोविदकहिसकयँकहाँते ॥ तुमउपकारसुग्रीवहिकी न्हा॥राममिलायराजपददीन्हा॥तुम्हरोमंत्रविभी पणमाना ॥ लंकेश्वरभयेसबजगजाना ॥ जगस हस्रयोजनजोभानू ॥ लीलाताहिमधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुखमाहीं ॥ जलधिलांघिगयेअचर जनाहीं ॥ दुर्गमकाजजगतमेंजेते ॥सुमिरतसिद्धि होयँसबतेते ॥ रामदुवारेतुमरखवारे ॥बिनुअज्ञान होइपैठारे ॥ सबसुखलहेतुह्मारेशरणा॥वेदपुराणमु- निनसोवरणा॥आपनतेजसँभारेआपे ॥ तीनोंलोक हाँकतेकाँपे ॥ भूतपिशाचनिकटनहिंआवे॥महावी- रजबनामसुनावे॥नाशेरोगहरेतनपीरा।भजेनिरंतर हनुमतवीरा ॥ संकटतेहनुमानछोड़ावे ॥ मनवचक-

रै॥लियेजन्मगणपतिप्रभुजीनेदुर्गामनआनंदभरे ॥ गणप० ॥ ३ ॥ अद्भुतवाजावज्योइंद्रकोदेवबंधूजहँगानकरें ॥ श्रीशंकरकेआनँदउपज्योनामसुनेसवविघ्नटरें ॥ गणप० ॥ ४ ॥ आनविधातावैठीआसनइंद्रअप्सरानिरतकरें ॥देखवेदब्रह्माजीजाकोविघ्नविनाशकनामधरें ॥ गणप० ॥ ५ ॥ एकदंतगजवदनविनायकत्रिनयनरूपअनूपधरें ॥ पगथंभासाउदरपुष्टहेदेखिचंद्रमाहास्यकरें॥गणप०॥६॥ देसरापश्रीचंद्रदेवकूंकलाहीनततकालकरें ॥ चौदालोकमेंफिरेगणपतीरणतभँवरगुंजारकरें॥ गणप०॥ ॥ ७ ॥ उठिप्रभातजवकरेध्यानकोइवाकेकारजसवैसरें ॥ पूजाकालेगावआरतीजाकेशिरछत्रफिरें ॥ ॥ गण० ॥ ८ ॥ गणपतिकीपूजापहिलेकरिकैकामसवेनिर्विघ्नसरें॥श्रीपरतापगणपतीजीकीहाथजोडअस्तुतीकरें ॥ गणपतिकीसेवामंगलमेवा० ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीगणपतिकी आरती संपूर्ण ॥

शाखिगौरीशा ॥ दोहा ॥ पवनतनयसंकटहरण, मंगलमूरतिरूप ॥ रामलखणसीतासहित, वसहुहृदयसुखरूप॥इतिवजरंगचालिसीसंपूर्णा ॥ ॥

॥ रामनवमीकीप्रशंसा ॥

॥ सोरठा॥ शेपनपावहिंपार, रामजन्मउत्सवमहा ॥ आइंकरनजुहार, सुहमंगलतिहुँलोककी ॥ १ ॥

॥ अथश्रीगणपतिकीआरती ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ गणपतिकीसेवा मंगलमेवापूजतदेवाविघ्नटरैं ॥ तीनलोकतेंतीसदेवताखड़ेद्वारपैअरजकरैं॥ टेर ॥ ऋद्धिसिद्धिदक्षिणवामखड़ीहैंउरआनँदसेचँवरकरैं॥ धूपदीपअरुलियेआरतीभक्तखड़ेजयकारकरैं ॥ गणप० ॥ १ ॥ गुड़केमोदकभोगलगतहैं मूपकवाहनचढ्योसरे ॥ सौम्यरूपसेयागणपतिकोविघ्नभार्जकेरूपपरे ॥ गण० ॥ ॥ २ ॥ भाद्रमासअरुशक्लचतुर्थीदिनदुपहरकोपूरप-

थसुतनँदलालाकी ॥ हरिहरिपग्देशारखवालाकी ॥
हरिहरिघाटवाटरखवालाकी ॥ ज० ॥ १० ॥
इतिश्रीलक्ष्मणवालाजीकीआरतिसंपूर्णा ॥ ॥

॥ आरतीलक्ष्मीरमणकी ॥

जयलक्ष्मीरमणाश्रीलक्ष्मीरमणा॥शरणागतजयश॥
रणागोवर्धनधरणा ॥ टेर ॥ जयजययमुनातटनि-
कटभक्टपटुवेषा ॥ अटपटगोपीकुचतटपटहरनट
भेषा ॥ जय० ॥ १ ॥ जयमुरलीरवतरलीकृतगो-
पीलीले ॥ तवभक्तिमेंभवतुव्रजललनाइमे ॥ ज० ॥
॥२॥जयजयभगवनमेघवनकंसारे ॥ पतितंपतितंकृ-
पयातारेसंसारे ॥ज० ॥३॥ जयजयगोगोपीप्रतिपा-
लकबंधो ॥ देवकिमाताकृष्णकृपसिंधो ॥ ज० ॥४॥
जयजयभक्तजनप्रतिपालकचिरंजीवीजिष्णो ॥ गा-
मुद्धरदीनोद्धरधरणीधरविष्णो॥ज०॥५॥जयजयकृ-
ष्णस्वामीनिजपदरसगामें ॥ कुरुकरुणाकुन्दरूणाद
ससखारामे ॥ जयलक्ष्मीरमणा०॥६॥इ०श्रील०आ०

॥ आरतीलक्ष्मणबालाजीकी ॥

जयजयवोलोसाधोलछमणवालाकी ॥ व्रालाकीश नँदलालाकी ॥ टेर ॥ दक्षिणदेशसवालखपर्वत जगमगजोतिदिवालाकी ॥ ज० ॥ १ ॥ तपतीमेसी तारामविराजो चौकीहनुमतवालाकी ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपविराजो चौकीहनुमत बालाकी ॥ ज० ॥ ३ ॥ ईज्यवीज्यदोयपोलियाविरा जैं गहरीधौंसनगाराकी ॥ ज० ॥ ४ ॥ वालाजीके रथपरकनकसिंहासन कलँगीवनीहीरालालाकी ॥ ज० ॥ ५ ॥ वृहस्पतिवारजरीकोजामो ऊपरमोज दुसालाकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ शूकरवारदूधकोन्हावन॥ मोजवनीमोहनमालाकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ देश देशकेयात्रीआवें मारपडीमृगछालाकी ॥ ज० ॥ ॥ ८ ॥ आशानंदगरीवदुलारो ॥ पतिराखोकंठीमा लाकी ॥ ज० ॥ ९ ॥ जैजैबोलोसाधोलक्ष्मणबा- लाकी ॥ वालाकीशनँदलालाकी ॥ हरिहरिदशर-

ड़चिनयप्रभुमेरीसुनुदाता ॥ टेर ॥ तुमरघुनाथमेरे प्राणपितामाता ॥ तुमहींसज्जनसंगतिभक्तिमुक्ति दाता ॥ जय० ॥१॥ चौरासीप्रभुफंदछुटावोमेटोयमकीत्रासा ॥ निशिदिनप्रभुमोहिंराखोअपने सँगसाथा ॥ जय० ॥ २ ॥ सीतारामलक्ष्मण भरत शत्रुहनसंगेचारोभैया॥जगमगज्योतिविराजतशोभाअतिहिलहनिया ॥ जय०॥३॥ हनुमतनादवजावतनेवरकोठिमकाता ॥ सुवरणथालआरतीकरती कौसल्यामाता ॥ जय० ॥४॥ क्रीटमुकुटकरधनुप विराजतशोभाअतिभारी ॥ मनीरामदर्शनकोपलप ल्यलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥ इतिजानकीनाथ०

॥ फकीरलक्षण ॥

दोहा—फाकाफक्तफराकदिल, आसनदृढगंभीर ॥
फिकिरिफारिकफनीकरे, तिस्कोकहीफकीर ॥ १ ॥

॥ आरतीशिवजीकी ॥

जयशिवओंकाराहरशिवओंकारा ॥ब्रह्माविष्णुसदा

अथशिवस्तुतिअष्टक १
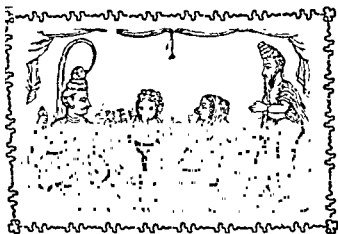
नयजयहेशिवपरंपराक्रमओंकारेश्वरतुमशरणं॥ न-
मामिशंकरभवानिशंकरहरिहरशंकरतुमशरणं ॥
॥टेर॥ दशभुजमंडनपंचवदनशिवत्रिनयनशोभित
शिवसुखदा॥जटाजूटशिरमुकुटविराजेश्रवणकुंडल
अतिरमणा॥जयजयहे० ॥१॥ ललाटचमकतरजनी
नायकपन्नगभूषणगौरीशा॥ त्रिशूलअंकुशगणपति

॥ आरती दुर्गाकी ॥

जयअंबेगोरीमय्या जेमंगलमूरतिमइया॥जयआनंदकीकरणी ॥ तुमकोनिशिदिनध्यावतहरब्रह्मागिरी ॥ टेर ॥ मांगसिंदूरविराजतटीकोमृगमदको॥ उज्वलसेदोउनैनाचंद्रवदननीको ॥ जयअंबे० ॥१॥ कनकसमानकलेवररक्तांवरराजे ॥ रक्तपुष्पगलमालकंठनपरसाजे ॥ जयअंबे० ॥ २ ॥ केहरिवाहनराजखड्गखप्परधारी ॥ सुरनरमुनिजनसेवततिनकेदुखहारी ॥जयअंबे०॥३॥ कानननकुंडलशोभितनासाग्रेमोती ॥ कोटिकचंद्रदिवाकरराजतसमजोती ॥जयअंबे० ॥४॥ शुंभनिशुंभविदारेमहिपासुरघाती ॥ धूम्रविलोचननैनानिशिदिनमदमाती ॥ जयअंबे० ॥ ५ ॥ चौसटियोगिनिगावतनृत्यकरतभैरूँ॥बाजततालमृदंगऔरबाजतडमरू॥जयअं० ॥ ६ ॥ भुजाचारअतिशोभितखड्गखप्परधारी ॥ मनवांछितफलपावतसेवतनरनारी ॥ जयअंबे० ॥

जोभोगकरे ॥ संत० ॥ २ ॥ भृगुसुखदाईसदास-
ाईसंतखड़ेजयकारकरें ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशसहसफ-
ालियेभेंटतेरेद्वारखडे ॥ अटलसिंहासनवैठीमाता
शेरसोनेकाछत्रफिरे ॥ संतन० ॥ ३ ॥ वारशनि-
धरकुंकुमवरणोजवलोकनपरहुकमकरे ॥ खड्गखप्प-
त्रिशूलहाथलियरक्तवीजकोभस्मकरे ॥ संतन०
। ४ ॥ अ ितवारआदिकीवारीजनआपनकोकष्ट
रे ॥ कोपहोयकरदानवमारेचंडमुंडसवचूरकरे ॥
नवतुमदेखोदयारूपहोयपलमेंसंकटदूरकरे ॥ सं० ॥
। ५ ॥ सोमशुभावधन्योमेरिमाताजनकीअरजक-
बूलकरे ॥ सिंहपीठपरचढीभवानीअटलभवनमेंराज
करे ॥ दर्शनपावेमंगलगावेसिद्धसाधतेरेभेंटधरे ॥
संतन० ॥६॥ ब्रह्मावेदपढेतेरेद्वारेशिवशंकरजीध्यान
धरे ॥ इंद्रकृष्णतेरीकरेंआरतीचँवरकुवेरडुलायाहे ॥
जयजननीजयमातुभवानीअटलभवनमेंराजकरे ॥
संतनप्रतिपालीसदाखुस्याली० ॥७॥ इतिदुर्गाष्टक०

आरतीलक्ष्मीजीकी ॥

जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकोनिशिदिन
सेवतहरविष्णुविधाता ॥टेर॥ ब्रह्माणीरुद्राणीकमला
तूंहीजगमाता ॥ सूर्यचंद्रमाध्यावतनारदऋषिगा-
वसताता॥ जय० ॥१॥ दुर्गारूपनिरंजनिसुखसंपति
दाता ॥ जोकोइतुमकोध्यावतऋधिसिधिधनपाता ॥
जयल० ॥२॥ तूंहींपतालवसंतीतूंहींहैशुभदाता ॥
कर्मप्रभावप्रकाशअघनिधिसेत्राता ॥ जयल० ॥
॥ ३ ॥ जिसघरतेरोवासोताहिगुणआता ॥ करण
चहेसोईकरलेवैमननहिंधडकाता ॥ जयल० ॥ ४॥
तुमविनयज्ञहोयवस्त्रनहींहोवैराता ॥ खानपानको
विभवतुमहीविनकोनहेदाता ॥ जयल० ॥ ५ ॥
शुभगुणसुंदरयुक्तक्षीरनिधिजाता ॥ रत्नचतुर्दशतु-
[illegible] पाता ॥ जयल० ॥ ६॥ यहआर-
[illegible] हैज [illegible] गाता॥उरपंकजअतिउ-
[illegible] ॥जयल०॥ ७ ॥ स्थिर

चरयहसवभक्तिकरिसुखपाता ॥ रामप्रतापमाय
शुभदृष्टिचाता ॥ जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमात
तुमकोनिशिदिनसेवतहरविष्णुविधाता ॥ ८

॥ इतिलक्ष्मीजीकीआरतीसंपूर्णा ॥

॥ अथविद्याकीप्रशंसा ॥

दोहा-अजरअमरकीभाँतिहै, विद्याधनहिंवढ़ाव
मनहुँमीचुचोटीगहे, देतविलम्बनलाव ॥ १
विद्याधनसवधननसे, संतकहतसरदार ॥ मोत
ड़ोनहिंघटतघर, दिनदिनहोतउदार ॥ २ ॥ उ
सवसंशयमिटें, अनदेखासोदेखु ॥ पढ़िवोपे
आंखिहै, अपढ़अंधकरिलेखु ॥ ३ ॥ ॥

॥ अथ प्रश्नोत्तरवर्णन ॥

सोरठा-मद्दिफलतुरतमँगाव, देकृशानुमोहिं
ले ॥ पतरीदेघरआव, क्योंकृष्णवारी नहीं ॥

॥ अथ शिवस्तुति प्रारंभ ॥

टेर ॥ भोलानाथअमलीमेराशंकरअमली ॥ बागामें भांगडलीववायराखुली॥काहववाऊंकाशीजीमेंकाह वावऊंपराग॥ काहववाऊंहरिकीपैरीकाहववाऊंकैला स॥भोला० ॥१॥ काशीजीमेंकेशरववाऊंचंदनववाऊं पराग ॥ हरिकीपैरीविजयाववाऊंधतूरोववाऊंकैला स॥भोला०॥२॥काहमांगनादियोकाहेमाँगेगणेशा॥ काहमांगभोलाशंकरजोगडाकोभेशा॥भो.॥३॥दूर्वा मांगनदियोजीमोदकगणेश ॥ विजयामांगेभोलाशं- भुयोगियाकेभेश॥भोला० ॥ ४ ॥ घोटेघोटेनांदीयो जीछाणेछाणेछेगणेश॥भरभरप्यालादेवेगौराजीपीवे छमहेश ॥ भो० ॥ ५ ॥ आकडाकिरोटीपोवेंध तुराकोसाग ॥ विजयाकीतरकारीछौंकैजेवेंभोलेना- थ॥भोला० ॥ ६ ॥ भूँखोमांगेअन्नधनराजामांगेरू- प ॥कुष्ठीमांगेनिरमलकायावांझहुमांगेपूत ॥ भो० ॥ ७ ॥ भूखे हिहेतेअन्नधनराजहिदेतेरूप ॥ कुष्टि

चरयहसवभक्तिकरिसुखपाता ॥ रामप्रतापमायाकी शुभदृष्टिपाता ॥ जयलक्ष्मीमाताजयलक्ष्मीमाता ॥ तुमकोनिशिदिनसेवतहरविष्णुविधाता ॥ ८ ॥

॥ इतिलक्ष्मीजीकीआरतीसंपूर्णा ॥

॥ अथविद्याकीप्रशंसा ॥

दोहा-अजरअमरकीभाँतिहै, विद्याधनहिंवढाव ॥ मनहुँमीचुचोटीगहे, देतविलम्बनलाव ॥ १ ॥ विद्याधनसवधननसे, संतकहतसरदार ॥ मोलव-इनहिंघटतघर, दिनदिनहोतउदार ॥ २ ॥ जाते सवसंशयमिटैं, अनदेखासोदेखु ॥ पढ़िनोपोढ़ी आंखिहै, अपढ़अंधकरिलेखु ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ अथ प्रश्नोत्तरवर्णन ॥

सोरठा-महिफलतुरतमँगाव, देकुशानुमोहिंगोद ले ॥ पनरोंदेघरआव, क्योंकृष्णधारी नहीं ॥ १ ॥

हिदेतेनिर्मलकायावांझहिंदेतेपूत ॥ भोला० ॥८॥ नाचनाचनांदियोजीनाचैछेगनेस ॥ नाचतमेराभोलाशंभूयोगियाकेभेस ॥ भोला० ॥ ९ ॥ घोटतहैसुगणेशवाबाछोनाभैरवनाथ ॥ भरभरप्यालापिवोहमारेशंभूभोलानाथ ॥ भोलानाथअमलीमेरा शंकर अम० ॥ १० ॥ इतिशिवस्तुति संपूर्णा ॥

॥ सत्यनारायणकी आरती प्रारं० ॥

जयलक्ष्मीरमणा ॥ श्रीलक्ष्मीरमणा ॥ सत्यनारायणस्वामी जनपातकहरणा ॥ जय० ॥ टेर ॥ रत्नजड़ितसिंहासनअद्भुतछबिराजे ॥नारदकरतनीराजनघंटाधुनिबाजे ॥ जयल० ॥ १ ॥ प्रगटभयेकलिकारणद्विजकोदरसदियो ॥ बूढेब्राम्हणबनकेकंचनमहलकियो ॥ जयल० ॥ २ ॥ दुर्बलभीलकतारोजिनपरकृपाकरी ॥ चंद्रकेतुयकराजाजिनकीबिपतिहरी ॥ जयल० ॥ ३ ॥ वैश्यमनोरथपायोश्रद्धातजदीनी ॥ सोफलभोग्याप्रभुजीफेरस्तुतिकीनी

जयपा० ॥ ३ ॥ शुंभनिशुंभविदारेहेमाचलताता ॥ सहसभुजातनुधरकेचक्रलियाहाथा ॥ जयपा० ॥ ४ ॥ सृष्टिरूपतूहींजननीशिवसँगरँगराता ॥ नंदीभंगीविनवहिंपरयामदमाता ॥ जयपा० ॥५॥ देवताअरजकरतहेंमनचितकोपाता ॥ गावतदेदे तालमनोहररँगछाता ॥ जयपा० ॥६॥ श्रीपरता-पआरतीजोकोईनरगाता ॥ स्वर्गसुखीनितरहता सुखसंपतपाता ॥ जयपा० ॥ ७ ॥ इतिपार्व०आ०

॥ अथ रुद्राष्टकं लिख्यते ॥

॥ छंद ॥ भुजंगप्रयात ॥ नमामीशमीशान निर्वाणरूपम् ॥ विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपम् ॥ निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं ॥ चिदाकारमाकाशवासंभजेहम् ॥१॥ निराकारमोंकारमूलंतुरीयम् ॥ गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशम् ॥ करालंमहाकालकालंकृपालुम् ॥ गुणागारसंसारपारंनतोऽहम् ॥ २ ॥

॥श्लोक॥रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतुष्टये॥ येपठंति नराभक्त्यातेषांशंभुःप्रसीदति॥९॥ इतिरुद्राष्टकंसं०

मनिहारिन्लीलाकी लावनीप्रारं०

श्रीकृष्णनंदजीकेनंदनधराभेषमनिहारिनका॥ आपहरीजहँगयेतह्रापरवहुतझुंडव्रजनारिनका॥ टेर॥ पहिरजनानाभेषहरीनेरुचिरुचिकेशृंगारकरा॥ हँसुलीऔरहमेलगलेबिचझलझलझलकैपन्नहरा ॥ ठट गुजरातीसजेघाँगराओढ़निदिखनीचीखरा॥रविशशिकोटिवदनकीशोभाऐसाहरीनेरूपधरा॥ कुचहुँव नायकेपाटीचोलीअरुकुरुताफुलक्यारनका॥ आप० ॥ १ ॥ श्रीकृष्णजीफिरैपूँछतेकोइचुड़ियापहनोगेरिखरी॥ कालीपीलीजरदजँगालीसुरुखवैंगनीऔरहरी॥एकसखीयोंवढ़करबोलीअरीआवतूंमणिहारी॥ चुड़ियामोतीचूरकड़ावँदलाईतोपहनाजारी॥सुखमागेलेवोदामहमकोमुठावतारीमोलचुरिनका॥ आप० ॥ २ ॥ श्रीकृष्णपहेरानेलागेपहरेराधासहेलनी ॥

मेंधरसेंआनतुमजरानमनधासतलाया ॥ फिरोदि-
वानादिवानाहोकिकिसीकाभरमाया ॥ मधुरवचन
सुनकेराधेकेश्रीकृष्णसमझातेभये ॥ कर० ॥ १ ॥
माधोनामहैमेराजगतमेंतेरेपासआयाहूंअली ॥ कहे
राधिकाशरदऋतुमेंऋतुवसंतनहिंलगभली ॥ ऋतु
वसंतनहिंजानप्रियामेंचक्रीहूंतूंजानअली ॥ चक्रीहो
तोयहांसेसरकोकुलालकीपूंछोगली ॥ धरणीधरक-
हतेहैंसुझकोवेदनीतिसेगातेभये ॥ कर०॥२॥ जान-
गईतुमशेपनागहोसहसीसतनकेकारा ॥ शेपनहीं
मैंप्रियाहूंसरपनकेमारनहारा ॥ शेपनहींतोगरुडहो
यगावनिताकीकरोप्रतिपाला ॥ प्रियाहरीहूँमेराह
सारेजगतमेंउजियाला ॥ सूर्यहोवतोस्वर्गछांड़िकेमे
रेभवनक्योंआतेभये ॥ कर० ॥ ३ ॥ कृष्णकृष्णश्री
कृष्णचंद्रनेतीनवेरउचारकिया ॥ उठीराधिकाजियेप
टखोलगलेकाहारकिया ॥ मूलचंदपरकृपाकरोरीजि
सनेयेव्यवहारकिया ॥ भक्तजनोंकाहरीनेछिनमेंवे-

जी ॥ रामचंद्रगादीवैठारो ॥ राजतिलकगुरुकरसों धारो ॥ करेंकौशल्याआरतिवर्सेफूलविमानन जय जय त्रैलोकउचारोरे॥रंगरचनी०॥४॥इंद्रादिकध्यावन आवेंजीब्रह्मादिकध्यानलगावेंजी ॥ इंद्रादिकसुरध्यावनआवेंऋपिमुनिअस्तुतिनिजगुदरावें॥ दासजैलालकीवीनतीमहामूढपापीरतिहूवतनावबचावोरे ॥ रँगरचनीकेशरलावोरे ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ रामनामकी महिमा ॥

हैरामनामसरनामजगतजोगावें॥कटजायकालकाफंदफेरजन्मनहिं पावें॥टेर ॥ हैरामनामकावडामहातमभारी ॥ वेदनकासारगीतामेंकहेविचारी ॥ सुरऋपिमुनिजपतेनामअटलयुगचारी ॥ हेंसकललोकविख्यातजपेंनरनारी ॥ यमराजकाँपतारामनामजोध्यावें ॥ कटजायकालकाफंदफेरजन्मनहिंपावें॥ ॥ १ ॥ यकवाल्मीकमुनिभयेजगतविख्याता ॥ जिनभरामराजपपायात्रिलोकीनाथा ॥ भयेमहर्लीनज-

लतेरायशछाई ॥ हूंअधमनीचअज्ञानपूर्णकुटिलाई॥ शरणागतवत्सलजानवीनतीगाई ॥ होंहाथजोड़जे लालतेरायशगावे ॥ कटजाय० ॥ ६ ॥

श्रीकृष्णचंद्रजीकी विनती.

श्रीकृष्णचंद्रमहाराजवेपनटवरधारी॥वंसीवारेश्याम मुरारेलाजअवहाथतेरेमथुरावारे ॥ टेर ॥ गिरि वरलियोउठायराखलीलाजविरजकीमतवारे ॥ सव मेघविचारे॥हारचलेइन्द्रलोकमेंपुकारे॥आदिपुरुप अवतारसाँवरोइनसेतीहमसवहारे॥खालीकरडारे॥ नीरजलवरसरहगईछारे॥जवइंद्रगयोघवराई॥कहो कीजेकोनउपाई॥मेंकरीवहुतलरकाई॥सववातहात विगराई ॥ पडूंअवपाँवसाथलेपरिवारे ॥ श्यामसु- रारे॥लाजअवहाथतेरेमथुरावारे॥१॥ गिरोगेंदय- मुनागेंसांवरोकूदपडोजलकीधारे ॥ गोकुलरखवारे नागिनिहाथजोडकेकहेपुकारे ॥ नागजहरकीखा- नडरोभगवानकईपचकरहारे सवकोमथडारे ॥

पीतांबरबांधेकाननकुंडलकरबँसुरी ॥खडेकदँबतटस खासँगग्वालबालखेलेंहँसरी ॥हेअपारलीलाजगता रीकोगावेकविमतिथोरी ॥ हेगुरुपुरुपोत्तमदासजे लालकहैयोंकरजोरी ॥ मेंहूँमतिमंदअभागीनिशि दिनकुकर्मसोंलागी ॥ अबकरोकृपाबरमाँगीदोबुझा पापकीआगी ॥ नाशकरदुखदरिद्रदोपारे ॥ श्याम मुरारे ॥ लाजअबहाथतेरे ॥ ७ ॥

॥ शिवजीकी विनती ॥

महादेव काशीके वासी ॥ हेमकन्यापति अवि- नासी ॥ टेर ॥ जटाबिच गंग सीस राजै ॥ चंद्र- मा मस्तकपर छाजे ॥ व्यालगलमुंडमालराजै ॥ देख भयरूप काल भाजे ॥ भस्मअभूपण अती ...न, भूतनाथ विकराल ॥ वृपवाहन बाघंवर साजै ... मैरूं करताल ॥ बनि छवि गिरिजा कैला- ... ॥ महादेव काशीके वासी ॥ १ ॥ लंकपती ...प अधिकारी ॥ ध्यावत नितप्रति त्रिपुरारी ॥

शीस निज काट हुने वारी ॥ उठा कैलास लियो भारी ॥ भोलानाथ प्रसन्न हो, दिया अमित वरदान ॥ वीस भुजा दसशीश कर, किये विकट वलवान् ॥ भये सुरदिग्गज नेगमी ॥ महादे० ॥ ॥ २ ॥ धाम रामेश्वर अतिपावन ॥ शिवालय सुंदर मन भावन ॥ जानरीगंगा जल चढावन॥भक्ति सायुज्यमुक्ति पावन ॥ लिंग थाप पूजा करी, रामचंद्र निजहाथ ॥ शिवरघुवरको ध्याइये, मिटै विघ्नउत्पात ॥ जायकटफंदाचोरासी ॥ महादेव०॥ ॥ ३ ॥ गंगतटशिवनगरीसुंदर॥विराजनविश्वनाथमंदिर ॥ वनीछविवाराणसीअंदर॥विभूषितपूनमसोचंदर॥शंकरशहरसुहावनो,ब्रह्मारच्योसुहेत॥ज्या दर्शनसेपापकटतहैं, मनवांछितफलदेत ॥ पवित्रसुसरितातटकाशी ॥ महादेव० ॥ ४ ॥ त्रिलोचननीलकंठदेवा॥भूतवैतालकरेंसेवा॥वजायेगालमिलेमेवा॥त्रिशूलीखप्परधरदेवा ॥ सीसपूजेशिवलोकमें.

मृत्युलोकमेंलिंग ॥ चरणपूजेंपातालमें, उमार्ति अर्द्धंग ॥ गंगारहेसंगसदादासी ॥ महादेव० ॥५॥ चंदेशिरकस्तूरीचंदन ॥ दिगंबरव्याघंबरअंगन॥करें सुरतेतीसोंवंदन॥धतूराआकभोगव्यंजन॥ चंभोला पदवीनवे, हाथजोड़जैलाल ॥ पलकखोलप्रभुदर्शन दीजे, कीजेमोहिंनिहाल ॥ काटदेउयमपुरकीफासी॥ महादे० ॥ ६ ॥ इतिशिवजीकी विनती ॥

प्रेमवर्णन ।

दोहा—कपटनिपटमिटिजायजहँ, उपजे पूरनक्षेम॥
ताहीसों सब कहत हैं, केशव उत्तम प्रेम ॥

मुमुक्षुलक्षण ।

दोहा—जन्ममृत्युसंसारते, कैसेछुटियेनित्त ॥
सोमुमुक्षुकहियेसदा, यहेविचारतचित्त ॥

सामयिक ।

दो० रचोनदेख्यो नाहिं यह, सुन्यो कनकमृगगात॥
तऊरामतृष्णा स्वमाति, नाशकालफिरिजात ॥

तुझीकोआठपहरचितलाई ॥ मानुपदेहवारंवारसह जनहिंपाई ॥ २ ॥ जवनिकसगर्भसेमोहजालमें आयो ॥सवभूल्योकौलकरारररामविसरायो॥मावाप देखसुतआनँदकरतउछायो ॥पंडितगुरुदेखेंदशावहु तधनपायो॥घरवजैनोवतावंटरहींनेगवधाई ॥ मानुपदेह० ॥ ३ ॥ वालककुछस्यानोभयोखेलनेजावे॥ नितनाचफंदमेंरहैसोधनहिंलावे ॥ मावापलाड़लीसुरतदेखहरपावे॥ व्याहनकोसुंदरयोगकहींवनजावे॥ तिरियाफंददीनाडारगलेमेंलाई ॥मानुप० ॥ ४ ॥ वालकपनवीतोआयगईतरुणाई ॥ नहिंभजनभावतेचित्तरहैप्रस्ताई ॥ तिरियासँगनिशिदिनरहेगले लिपटाई ॥ भयोगदापचीसीमाहिंजवानीछाई॥तिरियाफंदमेंहोयअंधकारचितचाई॥मानुपदे० ॥५॥ नितअतरफुलेलसुगंधअरगजालावे ॥नरउवटनमर्दनअंगसुगंधलगावे ॥ पँचरंगीचीरावांधछैलवनजावे॥परतिरियातकतेनिजघरकीविसरावे॥ धिक्है

उसेजिननेरामनामाबिसराई ॥ मानुपदेह० ॥६॥ बालकपनज्वानीबीतीबुढ़ापाघेरा ॥ सबछुटेजगतके स्वादमोहमदफेरा ॥ मुखकाननाकपगहाथथकेयक्नेरा ॥ परवशहोकंपैकालआगयानेरा ॥ दिनरहे विकलतारातिनींदनहिंआई ॥ मानुपदेहवारंवार० ॥ ७ ॥ देहछीज रहगईहाड़कीटट्टी ॥ मुखनथनझरेंदिनरैनभईदुरघट्टी ॥ सबघरकेमिलयोंकहें मिलेकबमट्टी ॥ वेटानहिंमानतहुकुमकरमकीपट्टी॥ घरकीनारीभौगारीदेवतराई ॥ मानुपदेहं० ॥ ८ ॥ तनछीनमलिनमुखविकलभयोअतिचारी ॥ मरनसे तोहूंडरेलगेजोकारी ॥ यमदूतखड़ेचहुँओरभयंकर भारी ॥ मुसकोंसेलीनाबांधमूसलनमारी ॥ लेखींच जीवकोचलेजहाँयमराई ॥ मानुपदेह० ॥ ९ ॥ यमराजकोपकरहोदुष्टलेआवो ॥ लोखंडगरम करदेहउसकीचिपकावो ॥ मुदगरकीमारोमारजेरवंदलावो ॥ अतिघोरभयंकरनरकमाहिंछिटकावो ॥

जीवजंतुनरककेचूंटचूंटतनखाई ॥ मानुपदेह० ॥ ॥ १० ॥ रहैजीवनरकमेंदुखीकहींनाहिंजावै ॥ करणीकेभोगैभोगकहापछतावै ॥ फिरभुगतनरककोचौरासीमेंआवै॥ देहदेहमेंभटकेजीवकोटिदुखपावै ॥ यहिभाँतिदुर्दशाप्राणीकीहोजाई ॥ मा०॥ ११ ॥ हरिविमुखनकीयहदशाहोतदोजगमें॥ जैलालरटोनितरामनामहरदममें ॥ गुरुपुरुपोत्तमकरयादगर्भप्रणघटमें ॥ कटजायआगमनफंदतेराचटपटमें॥हैतारकमंत्रशुभयहविदश्रुतिगाई ॥ मानुपदेहवारंवारसहजनहिंपाई ॥ १२ ॥ इतिगर्भचिंतामणिसमाप्त ॥ ॥

नकमोतीवर्णन ।

दोहा—केशवआनँदकंदफल, सुधाबुँदमकरन्द ॥
मनपतंगदीपकगर्ता, नकमोतीजगवंद ॥

भजनप्रभाती ।

लंबोदर दानारगजानन लंबोदर दानार ॥ टेर ॥

जान समुदितु है॥ कौने है सँवारी वृषभानकी कुमारी यह तेरी कटि निपट कपटकैसो हितु है॥

शिवमाहात्म्य ।

कवित्त--जग जगमगत भगतजन रसवस भय भयहर कर करत अचर चर ॥ कनक वसन तन अशन अनल वड़ वदल वसन मजल थल थल कर॥ अजर अमर अज वरद चरणधर परमपर मगन वरन सरनपर ॥ अमल कमल वरवरनदनम दनवश हरन मदनमद मदनकदन हर ॥

प्रभाती ।

जयजयरघुवरदीनदयानिधि जागोअवधभुवाला ॥ गगनप्रभागनंकचुनिर्मलकी रविमंडलजगधारा ॥ नि- मिरनशावनरुपोंनिदिशा [illegible] ॥ ॥ १ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

रसाला ॥ २ ॥ भोरभयोसुरनरमुनिजागेचिड़िया करतचुहाला ॥ मोरमरालकोकधुनिटेरतद्वारपाल रखवाला ॥३॥ घरघरनारिदहीमाथनको उठेंहो-तभिनसारा ॥ प्रातकालगोधेनुचरावन चलेविपि-नप्रतिग्वाला ॥४॥ मातकौशल्यासुतहिंजगाव-त उठोलालरछपाला ॥ चरणकमलजैलालसीसधर वंदनकरतदुराला ॥ ५ ॥ इति प्रभाती ॥ ॥

॥ रामनामप्रभाव ॥

दोहा–तुलसीअघसवदूरिगे, राअक्षरकेलेत ॥
फिरिनेरेआवतनहीं, माअक्षरपढ़िदेत ॥

अथपनघटकीरंगतलँगडी ।

चलझटपटरीवंशीवटरीकृष्णखड़ेपनघटरी ॥ नाग-रनटरी ॥ वजावेंवंशीआजयमुनातटरी ॥ टेर ॥ शिरधरघटरीत्यागकपटरीसँगहोझटरीतजहठरी ॥ प्रगटेघटरी॥ विराजेजोजीवनकेघटघटरी॥चलोनि-

कटरीत्वरितसटकरीशीसमुकुटपीलेपटरी॥ लियेहा-
थलकुटरीदरससेसर्वकटेंगेसंकटरी ॥तजखटपटरीच-
लझटपटरीमानकहीमेरीसटरी ॥ नागर० ॥ १ ॥
लगिचवपटरीशिमटशिमटरीमहिघटवरशिरचलि-
झटरी ॥ काढ़घूंघुटरी॥ सिनगरसजकेचलीआनि-
अटपटरी ॥ नहींपनघटरीआयनिकटरीजानदेझट-
रीमतनटरी ॥ नटखटरी० ॥ देखकेआईकहै
आवोइनझटपटरी ॥ रैनदिनटटरहैंजानचुकातू
झटपड़री॥ नागर० ॥ २ ॥ दीनीअटकरीपकजके
पटरीनटवरनटकीयाहठरी ॥ लपटझपटरीलियेकुच
पकड़रीगईअँगियाफटरी॥एक्यारोड़टरीगलेलपट
रीगयेकंसनिकटरहतअतिशठरी ॥ जोखुनेगाझटरी
पकजकेसबकोमथुरादेडटरी ॥ कृष्णनिकटरीग्वाल
नखटरीजुड़ेरागगावैंसोरठरी॥ नागर०॥ ३ ॥ कृ-
ष्णप्रगटरीहनेकइशठरीभूमिभारसबगयाहटरी॥मे-
रेघटरी॥विबुधमुकुटरीरामचन्द्रपटरीकथैख्यालग-

तउटपटरी ॥ भागेझटरीमभीशठदेशिरअपनेपेप टरी ॥ नंदलालकहेसुनशठचलेनारहेनिकटफडमेंद- टरी ॥ नागर० ॥ इतिपनघ० ममा० ॥ ४ ॥

सीतास्वरूपवर्णन ।

कवित्त-कलितकलंककेतुकेतुअरिमेतुगान भोगयोग कोअयोगरोगहीकोथलमो ॥ पूनांहींकोपूरनपे मप्रातिदिनदूनो होतदिन क्षिन क्षनिछविछीलाको जलसो ॥ चंद्रमोजुवरनतरामचन्द्रकीदुहाई मोइमतिमंदकविकेशवकुशलमों ॥ सुंदरसुवास अरुकोमलअमलअतिसीताजूकोमुखमखिकेवल कमलसो ॥ ॥ ॥ ॥

सीयस्वयंवर ।

दोहा--सीय स्वयंवर वरनिये, मंडल मंच बनाव॥
रूप पराक्रम वंश गुन, वरनिय राजाराव ॥

लोचनवर्णन ।

दोहा--लोचन चारुचकोर सम, चात्रिक मीनतुरंग
अंजनयुत अलिकाम सर, खंजन कंज कुरंग॥

॥ भृकुटिवर्णन ॥

दोहा--भृकुटी कुटिललता धनुप, रेखाखड्ग अनूप॥
केशवदास सुपास सम, वरन श्रवण करि कूप॥

अष्टादशपुराणोंकीसंख्याघनाक्षरी·

ब्रह्महैअयुतपद्मछपन त्रिविंशविष्णुचतुर्विंशशिवपं·
चविंशनारदीयहै ॥ अष्टादशभागवतएतहीवैवर्तब्र·
ह्मलिंगएकादशऔअयुतवायनीयहै ॥ कूर्मसप्तदश
मत्स्यचौदसहस्रनवसहस्रमार्कण्डयऊनविंशगारुड़ी
यहै ॥द्वादशब्रह्माण्डचतुर्विंशवराहस्कन्दएकसैएका
सीसहस्रजाननीयहै ॥ १ ॥ पंचशतचौदहसहस्रहै
भविष्यआग्निपंचदशसहस्रऔचारिशतमानिये ॥
इनकेएकत्रकियेपद्मस्वल्पलक्षचारिहोतहैं विचारि

निरधारिविप्रजानिये ॥ मुनतमुनावनओगावन
वतावतजेहरिलोकपावनकहानननजानिये ॥ जन-
नमनायसमुझायकेमहेशदत्त कहतगुनाय मनभाय
तोवखानिये ॥ २ ॥ इति अष्टादशपुराणोंको० ॥

विष्णुके २४ अवतारोंकेनामऔरचरित्र

॥ घनाक्षरी ॥ वामनवराहयज्ञकपिलकुमारपृथुदत्त
लऋषभनृसिंहहंसठानिये ॥ मत्स्यकूर्मह्यग्रीवमुख्य
व्यासकृष्णबुद्धमोहनीपरशुरामरामचन्द्रमानिये ॥
कल्कीनारायणधन्वंतरिओध्रुव एतेपंचविंशगाइये
पैअसंख्याकृतिजानिये। गायजिनगुणपारजाननग-
णेशशेषप्रजनेशऔमहेशक्योंमहेशमानिये ॥१॥ ब-
लिजालीवामन नृसिंहप्रहलादपालीहरिगजलाली
रामवालीलङ्कनाहुको ॥ मत्स्यवेदउद्धारीओकूर्मपृष्ठ
गिरिधारीकृष्णकेसदारी मोहनारीमारीराहुको॥वृ-
न्ददपाकारीवराहमहिधारीकपिलयोगमञ्चारी राम
गारीमहमचाहको ॥ कल्कीम्लेच्छगारीव्यासवेदवि-

स्तारीरूपभज्ञानहिंपसारी　पृथुभूमिगारीलाहुको
॥ २ ॥ हयास्यवेदोचारहिसभक्तियोगचारीप्रलम्ब
मारिपलध्रुवउच्चलोकधारीहे ॥ नारायणतपकारीकु-
मारआतमतत्त्वपारीयज्ञलोकमारीदत्तयोगविस्तारी
हैं॥लोकरोगदारीवैद्यराजउपकारीसवकहांलौंपुका-
रींवलिहारिवालिहारीहैं॥ दुष्टअपकारीहितकारीनि-
जदासकेमहेशअघहारीऔअनेककार्यकारीहैं ॥३॥
इति विष्णुके २४ अवतारोंकेनामऔरचरित्रसमाप्त॥

शंकरजीकी प्रशंसा ।

दोहा॥शंकरसेवाकरतजो, सोपावतवहुवित्त॥ विद्या
मेंअतिप्रवलहै, रटतशम्भुदोचित्त ॥ १ ॥ शंकरजीसु-
रस्वार्थलगि, कीन्हगरलकोपान ॥ जाकेकण्ठविशा-
लमें, विषकोवनोनिशान ॥२॥ वाणासुरकेसंगहै,यु-
द्धकीन्हपरिपाहिं॥ऐसेशंभुकृपालुको,　भजनकरहु
मनमाहिं ॥ ३ ॥ महादेवकेभजनविन,　नहिंपावत
हरिलोक॥ विषयभोगकरिवहतादिन, पुनिभरिभो-

गतशोक॥४॥ ऐसेदयानिधानको, भजाकरोदिनरा
ति॥प्रतिदिनहोहिंअनन्दबहु, नाशहोहिंआराति

हनुमदाष्टक ।

घनाक्षरी ॥ दिग्गजदबकिजातशेषशीमअलमात
हहलातवारिधिघटतद्युतिभानुकी ॥ मेरुधमकनकम
कतउररावणकोचलनअवनिछविछपतकृशानुकी ।
सुभटसकातदैत्यदेखिकैपरातमनरामसुसुकातअति
पायनिजजानुकी ॥ गर्भगिरजाततशोकसुरचिनना
तवननाकअररातसुनिहाकहनुमानकी ॥ १ ॥

उद्धवगोपिकासंवाद गजल रागकाफी

जानाजराजानाजराजानाजराजाना ॥ १ ॥ जान
जराजानाजराजानाकोसमझाना ॥ २ ॥ कुब्जा
केघरवारीफूलीतापरभ्रमरलुभाना ॥ ३ ॥ खाय
म्बायकुंजनमेंमाखनअबभेजनपरवाना ॥ ४ ॥ ला

गवसंतसंतहैछायेकरातिआपनोमनमाना ॥ ५ ॥ वारीउमिरिस्तवतौ सखियनकीजोवनअवहरिमाना ॥ ६ ॥ ऊधोसाथअपनेलानादरशपरशकरवाना ॥ ७ ॥ कहेद्वारिकाप्रसादकृपानिधिहमकोगले लगाना ॥ ८ ॥

अथरामबाराखडी।

श्रीगणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ कका करुणामयरघुवीरकृपाला, असअविनाशीदीनदयाला ॥ भंजनअसुरभूमिकेभारा, प्रगट भयेरघुवंश कुमारा॥ ॥ १ ॥ खखा–खेलतदशरथआँगनमाहीं, बालरूपछविवरणिनजाहीं ॥ लछिमनभरतशत्रुहनभैया, निरखतजननीलेतवलैया ॥ २ ॥ गगा–गौर श्यामसुंदरदोउजोरी, जोकछुकहोसोउपमाथोरी ॥ करधनुहींकटिकसेनिषंगा, चढिकेनचावंचपलतुरंगा ॥ ३ ॥ घघा–घरमुनिविश्वामित्रजुआये,

आदरकरिभूपतिबैठाये ॥ तनुधरिजोकछुकारजहोई, कहोवचनहमकरिहैंसोई ॥ ४ ॥ नना—निशिचरखलमारीचसुबाहू ॥ यज्ञविध्वंसकरैउरदाहू ॥ लछिमनरामदोउसुतदीजै, पूरणयज्ञहोइयशलीजै ॥ ॥ ५ ॥ चचा—चकितभयोभूपतिमुनिवानी, समुझायोतबहींमुनिज्ञानी ॥ दीनपुत्रमुनिमनभयहारी, मारगचलतताड़कामारी ॥ ६ ॥ छछा—छांड़िबानमारीचउडायो, पावकबानसुबाहुजरायो ॥ पूरण यज्ञभयोमुनिहरषे, जयजयकरतसुमनसुरवरषे ॥ ७ ॥ जजा—जनकयज्ञमुनिचलेविचारी, पदरजपरसिअहल्यातारी ॥ जहँगयेजगपावनिगंगा, स्नानध्यान करिनिर्मलअंगा ॥ ८ ॥ झझा—धीमरनावनिकट नहिंलायो, देखेचरणप्रभाववढ़ायो ॥ चरणप्रछालि रामबैठायो, उतरेपारजनकपुरआयो ॥ ९ ॥ नना-नृपतिजनकपूछीयकबाता, मुनिकौशिकसँगदोउ भ्राता ॥ करिपूजासिंहासनदीन्हा, अपनाजन्मसुफ

लकरिलीन्हा॥१०॥टटा—टूटयोनहींधनुपनृपहारे,रघुवरराजसभापमुधारे।तोरेउधनुपकियेदुइखंडा,जयजयजैध्वनिपूरित्रह्मंडा ॥११॥ठठा—ठाढ़ेधनुपतारि रघुराई, सीताजयमालापहिराई।।परशुरामधनुसौंपि सिधाये, सजिवरातनृपदशरथआये॥ १२ ॥डडा—डोमऔभाटानिछावरिपाई, चारिउकुंवरविवाहेउभाई दीन्हेउदायजद्रव्यलुटाई, धेनुवत्सगजवाजिसजाई ॥ १३ ॥ ढढा—ढाढसवतवंशलखिराजा, रामहिं करनचह्योयुवराजा ॥ शारदकुवरिमतिभरमाई,मिलिकैकेइहिंकुमतिउपाई ॥ १३ ॥ रानीवरमाँगी नृपपासा, भरतहिंराजरामवनवासा॥मातापितागुरुहिशिरनाई, सीतासहितचलेदोउभाई ॥ १५ ॥ तता—तमसातीरप्रथमदिनआये, शृंगवेरपुरगुहहिं मिलाये ॥ पहुँचेगंगाउतारिप्रयागा, मिलेभरद्वाज हिंअनुरागा ॥१६॥ थथा—थोरेहिमेंसवकहोंप्रसंगा,चलेभानुकुलकमलपतंगा ॥ वाल्मीकिआश्रम

भुआये, चित्रकूटगृहवासवसाये ॥ १७ ॥ ददा—
खिशैलतृणसालवनाई, सीताहितवमेदोउभाई ॥
मगमनसुनिनृपतनुत्यागा, चित्रकूटगयेभरतसु-
गा ॥ १८ ॥ धधा—धरिपाँवरीसासअतिप्रेमा.
ायअवधपुरवसेसनेमा ॥ रघुवरपंचवटीकृतवासा,
सुरविनाशकियोसवनासा ॥ १९ ॥ नना—ना-
[illegible] श्रुतिनासाकाटेरघुराई॥सहस-
[illegible]. खरदूषणत्रिशिरासंहारे ॥२०॥
[illegible]ारावणसुनिपाई, लेमारीचाकियोमृ-
नाई ॥ मृगमारननिकसेप्रभुजवहीं,रावणहरीजा-
ितवहीं ॥२१॥ फफा—फिरतप्रियाढूँढतरघुराई,
ेजटायूपितुगतिपाई ॥ शबरीकेफलरुचिमोपा-
हनूमानसुग्रीवमिलाये ॥ २२ ॥ बबा—वालि-
रिअंगदयुवराजा, नृपसुग्रीवहिंकियसिरताजा ॥
ानतवदूतपठाये, लंकानारिसियासुधिलाये ॥
२३ ॥ भभा—भालुकपिनकीमेनबनाई, नाग-

मा ॥ भरतलषणदोउचमरढुरावैं, जयसुरकरत
मनवरसावैं ॥ ३० ॥ पपा—खिजमतकरैंप्रीति
रलावैं, संतचरणमेंचित्तलगावैं ॥ लछिमनआदि
रतरिपुसूदन, करहिंसेवरघुपतिपदपूजन ॥ ३१ ॥
सा ॥ सानुकूलजिनपररघुराई, श्रीरघुवरकीरतिअ
केकाई ॥ इतिश्रीरामवारहखडीसमाप्ता ॥ श्री
मचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

बाललीला

ागखट--सामरो सलोनो प्यारो परमदुलारो वारो
लसिझलावैनँदरानोसोइपालना ॥ शेषहुनपावैभेद
तिनेतिगावैवेदताहिलेखिलावैहुलसावै व्रजग्वाल-
ा ॥ १ ॥ करनकडालाजे नूपुरपगनवाजे मुक्ता-
ुलाकसाजे श्रोनमोतीहालना ॥ हरिकोविलासगा
यो गोपिनसुहागपायो माखनदिखायकैबुलायपलेहू
लालना ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

वंसीलीला

मेरेप्यारेमोहना, वंसीनेकबजाय ॥ तेरीवंशीकेसु
नहन्यो, घरअंगनानसुहाय ॥ १ ॥

पनघटलीला

अपनेअपनेगेहसों, विवशनेहनँदलाल ॥ सांझस
कियाधरचलीं, पनघटकोब्रजबाल ॥ १ ॥ पनघ
मिसब्रजगोपिका, श्यामदरसकेहेत ॥ नितउठिजा
तसिंगारकर, जिहिबनप्रभानिकेत ॥ २ ॥

चुरियाचुभनलीला ॥

सेपटापाल्ह ॥ गोरीबहियांरसभरीचुरियां
भिचुभिजाय ॥ निपटगंवारिनिगोंडि [illegible]
मोहन [illegible] ॥ १ ॥

यमुनास्नानलीला ।

घटभरिभरिजमुनातट, चलींयमुनाअसनान ॥ पुष्ट
मदअनुरागनी, गावतमधुरीतान ॥ १ ॥

गागरलीला ।

सुनतसखिनकेवचनकूं, नागरनन्दकिशोर ॥ गाग-
रपटकीसीसते, वैयांगहिझकझोर ॥ १ ॥

काँकरवामारनलीला ।

देखोनन्दकोलँगरवामेरेकाँकरवामारे रे ॥ नैनसे-
नकरसेलचलावैचलतडगरघुंघटवाझोलेरे ॥ १ ॥ प्री
तिरीतिपरतीतजनावैछलबलकरगलहरवाडारे रे ॥
हरिविलासफिरफिरहरिहेरतलिपटचिपटआंचरवा
फारेरे ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ संतस्वभाववर्णन ।

दोहा--शशिकुमुदनमफुलितकरत, कमलविक।स-
तभानु॥विनमांगेंजलदेतघन, त्योंहीसंतसुजानु॥१।

अथ व्रजभूमिनन्दग्रामतथाव-
रसानेकीरंगीलीहोरीलीला ।

मचैधूमफागुनकेमासप्रभुवरसानेखेलेंहोरी ॥ खेल

अवतारलिया ॥ व्रजलीलाकेव्रातिरसभुजंगजो कलोंलोंइदिया ॥ असुरमारकाटेहेंभारसवभक्तनको उधारकिया ॥ व्रजरजमेंवननहींकरीजोजन्मपायक छूयाकिया ॥ व्रजकीमहिमाअनंतहैसहदेवकही थोरीथोरी॥मनचूम०॥७॥सोरठा॥व्रासरामगढवास, शेठश्रीगुरूशाहमल॥औधनश्यामकोदास, होलीकहीवनायभल॥ ॥ अति० ॥ ॥ ॥

॥ अथ लिलहारिनलीला लिख्यते ॥

एकसमैनटनागरनेनटिनीकोसमस्तसिंगारसँवारी॥ जोजोचहीजेहिअंगआभूषणसोसोवनाइकरीहैतयारी ॥ जातचलीछविकौनगनैतवहींवृषभानुपुराप्रगुधारी ॥ खोरिनखोरिनटेरतुहैंहमहैंलिलहारकिगोदनहारी ॥ १ ॥ वातसुनीयकआलीतवैवृषभानुसुतापहँजाइगुजारी ॥ एकनटीअतिसुंदरिरूपकहीनहिंजातविरंचिसँवारी ॥ राधेकहातेहिलावोबुलाइ चलीललिताजहँहैनटनारी ॥ वोलीवुलावतप्यारीतु

जोईकहौहमसोईलिखैंतेरेअंगहिंअंगवनैवोविहारी।
वृषभानुललीवरसानेधराचड़ेराजनकीतुमराजदुला-
री ॥ देहौ हमें तुम काह कहौ हमहैंलिलहारकिगोद-
नहारी॥ ६ ॥ देहौमैंहारहजारनकेदुलरीतिलरीहुँसु-
लीवाड़िभारी ॥ देहौंछलादोउहाथनकेकँगनावड़ेमो-
लगदेहैंसुनारी ॥तोहिंआभूपणदेहौंसखीअरुओढन
कोअपनीतनसारी ॥मोतिनमालअमोलनकेअरीवो
लिलहारकिगोदनहारी ॥ ७ ॥ यासुनिकैलिलहा-
रिनकेतुरतेअपनेअवजारनिकारी ॥ जोजोकह्योजे
हिअंगगोदावनसोसोस्वरूपवनाइसँवारी ॥ देखि
छकीवृपभानुसुताजिमिचंदहिंदेखिचकोरकुमारी ॥
मांगोजोईसोई देहिंतुम्हेंअरीवोलिलहारकिगोदन-
हारी॥८॥ दर्शनपाइमिल्योसवहीविधिऔरकहाहम
माँगहिंप्यारी ॥ मातुकिचोरीचलोयमुनातटआ
वेंअन्हाइसवैव्रजनारी ॥ याविधिमोंछलछिद्रकि-
योपहुँचेघरलैजहँमानपिनारी ॥ देखनआइंगवैव्रज-

कोटिगियाटगिल्लियहूमुंदरिनागी ॥ ९ ॥ बाजननाल
मृदंगसंगवीणाजनप्रीतिसोंरसुमंगलगावैं ॥ हाट-
बाटतनुअलंकृतकरिनरनारिनंदभवनसोंदानलेनलुटावैं ॥ धन्य
धन्यजोमैयेनिनहींधनिवेजनकेसंगधेनुचरावैं ॥धन्य
यशलालौंचलाईयसंप्रभुपूरणब्रह्मचरित्रदिखावैं ॥१०॥
॥ सोरठा ॥ कहतमध्यमस्वरटेरि, लिलहारिनली-
लाचरित ॥ पढैंसुनैंजेहरि, तरिबैकुंठैंजाइहैं ॥११॥
तिनकोचरितनृप, नितअमोलगावतरहत ॥ सुं-
दरसुखदस्वरूप, बसहुहृदयममस्वामिवर ॥ १२ ॥
इतिश्रीलिलहारिनलीलासंपूर्णा ॥ ॥ ॥

अथ बिसातिनलीला लिख्यते ।

दोहा ॥ वेषबिसातिनकोकियो, जेहिप्रकारयदुनंद॥
श्रीराधाकेसँगरमे, कहौंतोनरचिछंद ॥ छंद ॥ एकस
मयब्रजचंदनंदसुतमनमेंयाहिबिचारी ॥ धरिकैवेष
बिसातिनजींकोछलियेराधाप्यारी ॥ कीनखापको
लहँगापहिरेअरुणजरकसीसारी॥ अँगियालालस्या

हृवंदनकीअतिछविदेतक्निारी ॥भोतिनकीपहिरेन
क्वेरसझालरदारवनाई ॥ मानहुरतिपतिरचीआप
करकहिंनजातसुघराई॥ काननकरनफूलअतिसोहैं
ाथवीचजड़ाऊ ॥ ताऊपरअतिलसतवेंदनी मोति·
मांगभराऊ॥ कंठलसतदुलरी अरुतिलरीगजमुक्त
केहारा ॥ मानोयुगसुमेरविचबैकैधसींगंगकीधा-
॥ गरेहमेलमालकंचनकीअरुपहिरेखगवारी ॥
नहुँकामआपनेकरसोंरुचिरुचिविविधसँवारी ॥
जूवंदउपरनासोहैसोहतभुजमाहीं॥हरीचुरिनवि
ट्टाखारीउपमाताकीनाहीं ॥ हाथनमेंकंचनके
ामोहरीअधिकवनीहैं ॥ उपमाताहिकवनकीदी-
ळागीकनीघनीहैं ॥ दसौंअँगुरियनलसतमुद्रिका
नजड़ितवनाई ॥ कोकहिसकेश्यामसुंदरकीगह-
कीसुघराई॥ पंचकलीत्रिवली परसोहैचुनिचुनि
ीवांधी ॥ सुंदरनाभिमनोहरऊपरतापरकोंछी
ी ॥ कटिकिंकिणीझुनुकविछुवनकीघुँघुरूरुनु

पुरसेमेंआईहांजातिजवहरिनकेरी ॥ जोकोइलेइमालमुक्तामणिहेममपासघनेरी ॥ हीरामोतीलालजवाहिरलहसुनियाअरुपन्ने ॥ पुखराजअरुनीलकंपंतीमेरेभरेटेपन्ने ॥ चिरजगईपँवरिकेभीतरराधेखबरिजनाई॥मथुरापुरतेएकविसातिनिअतिसुंदरिइतआई ॥ सुलेसाँवलीपानीसजनीदेखतहीबनिआवे ॥ औरकहाँलौंकहिये प्यारीरतिकोलाजलजावे॥हीरामोतीलालजवाहिरउनकेभरेटेपन्ने॥लालघांघरालालचूनरीओढेजरदउपन्ने ॥ राधेकहीसुनोंहोललिताकीजैयहेमसौदा ॥ बोलिविसातिनिलेहुअटापरकरियेवाकोसौदा॥ललितागईपँवरिकेबाहरबोलीवचनसयानी ॥ तुम्हेंबुलावतराधेप्यारीचलहुविसातिनरानी ॥ सुनिललिताकेवचनमनोहरअतिसुखपायोमोहन ॥ सुंदरमहलअँटाकेऊपरचलेताखुकेगोहन ॥ चढतअँटारीऊपरमोहनमनहींमनमुसकाता ॥ गयेनिकटवृषभानुसुताकेचटकभयेसबगाता ॥ वि-

सातिनकोरूपदेखिकैराधेअतिसुखपायो ॥ धरिकै हाथगलीजाऊपरअपनेढिगबैठायो ॥ पूंछिकुशल वृषभानुनंदिनीबीरालैकरदीनो ॥ प्रेमसहितआनंद मानिकैविहँसिबिसातिनिलीनो ॥ राधेकहीसांवली जीसेकौनगांवसेआई ॥ कहानामहैतेरोसजनीमेरेम नअतिभाई ॥ काहनामहैतेरोसजनीकाहनाममह- तारी ॥ कौनगांवमेंसखाबिवाहीमोसेकहुवरनारी ॥ मेरोनामसाँवलीसजनीपितासूरसुतकहिकै ॥ मा- ताकोहैनामदेवकीमथुरापुरमेंरहिये ॥ कुंदनपुरससु- रारिहमरीनृपभीपमकेदेशा ॥ तुमसेकहूंसत्यमेंप्या रीयामेंनहींअँदेशा ॥ उत्तमकुलक्षत्रीकीवेटीयहवे- पारहमारे ॥ लीजैमालजोनमनभावेआइउँदेनतुम्हारे ॥ देशदेशकेरतनलाडिलीदेशदेशकीचीजें ॥ देश देशकेमाणिकमोतीदेशदेशकीचीजें ॥ मेरेभरेटेपन्ने सजनीमरजीहोइतौखोलौ ॥ नहिंतौजाउँभवनअप नेकोयोंदरशअमोलौ ॥ विहँसिकहीवृषभानुनंदि

नीसुनोसखीपरवीना ॥ खोलिदिखावोहमैंसांवली अपनोमालनगीना ॥ खोलेउडब्बाचवैबिसातिन प्रगटइंदुभइतारा ॥ मानहुँएकठौरघरिराखेइंदुवधू नभतारा ॥ ईदेखोमोतीअतिसुंदररतननगरसेआये ॥ उजरेगोलमोलअतिसुंदरतुमहितमांगिपठाये॥ इहीराहैंपन्नपुरीकेउजरेलालहरे ॥ मोतीचूराहैंवंसपतीकोकालेचोपहररे ॥ पुखराजलहसुनियापन्नेनीलकऔरपिरोजा ॥ ईआयेहैंहिंगलाजसोंसबसोसिरोसिरोजा ॥ यहलीजेदुलरीअरुतिलरी टिकुलीकाशीकेरी ॥ अतिसुंदरदामिनिसीदमकैशोभादेतघनेरी ॥ ईककनाहैंप्रयागराजकेहीरनजडितबनाई ॥ पहिरिदेखियेराधेप्यारीलगतेपरमसुहाई ॥ ईछल्लरीगयासेआईसखीपहिरिकेदेखो ॥ गोरेगल्लेलगतअतिनीकोसबसअधिकविशेषो ॥ ईघांगूबँदअवधपुरीकेब्रह्मावर्तकिडोरी ॥ कुरुक्षेत्रकोपुटघदचोलीलीजेरा घागोरी ॥ ईमुंदरीहैंनागनगारकीलगेनगनिर्लाने ॥

हेरिदेखियेराधेप्यारीमानहुंआइउगौने ॥ ईलीजे
न्जेनपुरीकेकरखफलअरुवीजें ॥आवोउठिकैपहि-
राधेमेंनिजकरगुहिदीजे ॥ ईलीजेपुष्करकीदोहरी
हिरीदारवनीहैं ॥ उपमाताहिकवनकीदीजेलागी
नीघर्नीहैं ॥ ईलीजेमथुराकेघुँघुरूसजनीअधिकव-
हैं ॥ पहिरिदेखियेअपनेपायनरुनुझुनुवजतघने
॥ सिगरोमालविशालआपनोमनिहारिननेदिखा
॥ देखिदेखिवृषभानुसुताकेमनहीमनअतिभाई ॥
धेकहीविसातिनजूसेसुनोवातयकमोसों ॥ क-
हेयेमोलमालअपनेकोमेंपूछतिहोंतोसों ॥ जवन
नवननगजितनेकोहैंजुदाजुदाकरिभाखो ॥ हमको
देयसुनाइसांवलीरंचककपटनराखो ॥ जितनेकोहैं
लीनहमारोउतनेहीकोदेहों ॥ हमेंतुम्हैंहिनभयो
लाडिलीतुमसोंनफानलेहों ॥ यकयकनगहेलक्षट
काकोसत्यकहोंदिलखोली ॥ ईतीनिउहैंवाढिमोल
केवेसरिचुटवंदचोली ॥ ईपहिरोतुमकुँवरिराधिका

हिकैतयक्कहीविसातिनजोअनुशासनपाऊं ॥ तोमें
आऊंभवनआपने कालिहपरांफिरिआऊं ॥ विहँ-
सिकहीवृपभानुनंदिनीसुनुमखियानहमारी ॥ कोतु-
एकदिखावोंतुमकोआजुइहांरहिजारी ॥ नंदनंद-
यशुदाकेनंदननंदगांवमेंहेरी ॥तिनकेदर्शनलेतसाँ-
लीअतिमुखपैहेतेरी ॥ कोटीमदनछविपटतरना-
हींशोभाअधिकविराजे ॥ औरकहालोंकहियेमज
ीमुरलीमहाविराजे ॥ पहिरेकरकंचनकेचूरामुरली
करमेंसोहे ॥ वेणुवजावतनाचतगावतसवहीकाम-
नमोहे ॥ गरेमालगुंजनकीपहिरेकुंडलझलकतका-
नन ॥ गोलकपोलनमेंद्युतिझलकतअतिसोहतछ-
विआनन ॥ माथेमुकुटमोरपक्षनकोमानहुँउयसेसी-
र ॥ मटकनिचालमुकुटकी लटकनिसोइमनमाहिं
वसेरे ॥ तीनलोकदशचारिभुवनमेंऐसीछविनाहिंआ
ली ॥ जैसीछविहैनंदनँदनकीगडतअहैवनमाली ॥
भलीबाततुमकहाराधिकामोरेमनअतिमाना ॥ का-

मुनिजासुबसेरे ॥ तेलालनतुमबनेफिरतहौंब्रजवनि-
तनकेचेरे ॥ नंदकंदआनंदकेवासीवनवारीसुखरा-
सी ॥ ऐसोवेषनकीजेमोहनमेंराउरकीदासी ॥ याब्र-
जकेनरनारिचवाइनेकशोधजोपावें॥ घरघरघेरुहोत
हैमोहनवड़ीफसादमचावें ॥ तातेजाउभवनअपनेको
सुनियेमदनगोपाला ॥ हमेंतुम्हेंफिरभेंटहोइगीनव-
लकुंजमेंलाला ॥ अरसपरसराधेसोंकरिकेनयनसों
नयनमिलाये ॥ नंदकुंदआनंदमानिकेमंदगाउँचलि
आये ॥ यशुदाकहीसुनोमनमोहनसबदिनकहांगँ-
वायो॥ चलकेसंगकलेवाकरिकेतबतेअबफिरिआयो
॥खेलतरहेउँसंगग्वालनकेवंशीवटकीछाहीं ॥ काह
कहोंमेरीमातयशोदाखेलनजाऊँकिनाहीं ॥ भलीक-
हीमेरेप्राणपियारेअबचलिकेगेविआरी ॥ बैठीमह-
रितुम्हेंपरसेहैंपरमियरीहैथारी ॥ नंदमंगहारेभोजन
कीनोबीराम़ुखमेंनाई ॥ सोइगयेपलँगाकेऊपरनिर-
खिमातुवलिजाई ॥ प्रेमदासवलिवलिचरणनकोली-

लागाइसुनाई ॥ जोकोइसुनैकानचितदैकैतरिवैकुंठ
साई ॥ इति श्रीविसातिनलीलासम्पूर्णा ॥

बांसुरीकेकबित्त.

खगमोहेमृगमोहेनगमोहेनागमोहेपन्नगतापलमोहे-
धुनिसुनिजासुरी ।सुरमोहेनरमोहेसुरएसुरेशमोहेमो
हिरहेमुनिकेअसुरअरुआसुरी ॥ भनतशुमानकहो
मोहिवेकीकहावातचिरऔअचरमोहेउमगिहुलाशु-
री ।गोपिनकेवृन्दमोहेआनँदमुनीन्द्रमोहेचन्द्रमोहेच
न्द्रकेकुरंगमोहेबांसुरी ॥१॥ भूल्योखानपानभूल्यो
पटपरधानसवलोगनकोभूलिगयोवासुऔनिवासुरी
॥ चकिरहींगैयांचारांचांचनाचिरइयांदाबीधितव-
निचलतजुचितुचेतनासुरी ॥ हेंपरीभरीसीहेपरीसी
वृपभानुजाईजीवतालावेवेगिआवेंद्दगआंसुरी॥का-
न्हरसकैसैकैछँडाइमेरीवीरकविकवकीविशासिनि
निवगोरेविपवासरी॥२॥जलकीनघटभरैमगकीनप-
गधरैघरकीनकछुकरैवैठीभरैसांसुरी ॥ एकैसुनिलो-

टिगईएकेलोटपोटभईएकनकदगननिकरिआयेआं सुरी ॥ कहैरसनायकसोव्रजवनितनवीधवधिकक हायेहायहुइकुसाहांसुरी ॥ करियेउपायवामडारिये कटायनाहींउपजेगोवाँसनाहींवाजेफेरिवांसुरी ॥३॥

॥ रासलीला ॥

लावनी ॥ वृन्दावनरचोगुपालरहसकुंजनमें ॥ थेई थेइनागरनटनिरतकरतसखियनमें ॥ निशिशरद चांदनीचन्दपरमसुखदाई ॥ वंशीमेंमदनगोपालम-धुरधुनिगाई ॥ नारदसुरशेषमहेशमुनिनमनभाई ॥ मोहींव्रजवालविशालसुरतिविसराई ॥ धुनिरहीम-नोहरछायलोकलोकनमें ॥थेइथेइनागरनटनिरतक-रतसखियनमें ॥ वाजीवाजीयोंकहैवांसुरीवाजी ॥ वाजिनकेलागीचोटविरहकीताजी ॥ उलटेआभूष-णपहिरिकिंकिणीसाजी ॥ अम्वरकीनहींसँभारवि-कलवनभाजी ॥ मुखचन्दसखिनकेवन्दभरेयौवन में ॥थेइथेइनागरनटनिरतकरतकुंजनमें॥ वोलोगे

हनकेरिझानेवाली ॥ गावैंगणेशपरमादचरिनछन्द-
नमें ॥ थेइथेइनागरनटनिरतकरनकुंजनमें ॥ इति०

॥ यमुनाजलविहारलीला ॥

रागिनीविहाग ॥ यमुनाजलक्रीड़ननंदनन्दन ॥
गोपिवृन्दमनोहरचहुँदिशिमध्यअरिदर्पनिकन्दन ॥
पकरेपाणिपरस्पराछिनकनोंशिथलमालभुजनन्द-
न ॥ मानहुँयुवतियूथअहिपतिकोलरयोअंकदेचन्द
न ॥ कचभरिकुटिलमुदेशअम्बुकणचुवतअंगनि
मन्दन ॥ मानहुँभरिगंड़पकमलतेडारनअतिआन
न्दन ॥ भुजभरिअंकअगाधचलनतेज्योंलुब्धकेम-
गफन्दन ॥ सूरदासप्रभुपयअवम्भाननतोनिनेतिश्रु
तिछन्दन ॥ १ ॥ रागिनीविहाग ॥ गर्वीलकरनि
छैलछबीली ॥ कुचकुंकुमकंचुकिचंदधोटलटीकगही
लटगीली ॥ चन्दनाशिरनाटकगंडफरनतजोटनम
णिलीली॥गतिगयन्दमृगगजमुकटिरयोंरा॥म।
किणिटीली ॥ भचेऽलदयमुनाजलभगतन

तरसझीली ॥ नन्दसुवनभुजग्रीवाविराजतभागसुहा॰
गभरीली ॥ वर्षतसुमनदेवगणहर्षितदुंदुभिसरसव
जीली ॥ सूरस्यामस्यामाजलक्रीड़तयमुनतरंगथ
कीली ॥ २ ॥ इति यमुनाजलविहारलीला स॰ ॥

॥ वसन्तवर्णन सवैया ॥

भावैभरिरसआवैछकीसुछकावैरीनैनसोंनैनमिलावै।
गावहिंडोलवजावैमृदंगहँसावैहँसैसुरतालमिलावै ॥
लावैगुलालरचावहिरंगगर्व्वासुखवीनसुगंधानिलावै।
॥रीझिरिझावैअनंगजगावैविहारकोप्यारीवसंत ॥
खिलावै ॥ १ ॥ इति श्रीरागमंत्रार्पणमस्तु ॥

॥ राधिकाजीकी वधाई ॥

सुननजन्मराभानुकुमारीकोउठिधाईव्रजनारीरी ॥
मंगलसाजलियेकरकंचनथारहियेगमगारीरी ॥ गो
[illegible]
[illegible]

णीशिथिलखर्चितकचहुभुमनन्दीलतपोठपरमोहिहो
काजरनयनश्रवणचलनरथनेत्थनहामनमोहिहो ॥
झुमझुममंडितमुखशशिशोभितबंदीहारजड़ाइहो ॥
अधरतमालरंगमेभीनगाबतमगमगबधाईहो ॥
आनँदउमँग्योगानगानमेमनबहिय अधिकउछाहहो॥
सबबरपुत्रभयोधनबाढ्योमयहीकोननव्याहहो ॥
लोचनतृपितदरशविनव्याकुलपगहंमोचाह्यिवेहो।
चौंकिचौंकिवारहुदिशिमगमगमानहुकेजपिलाये-
हो ॥ आइजुरींनृपभानुभवनमेमुखानिरखनमुखपा
याहो ॥पगपरितखाचूर्भिनिरखिहगजन्मसुफलकर
बायोहो ॥ धनिदिनधनिछिनधनिपलनियहघ-
रीसोहाईहो ॥ जामेनीनिलोककीस्वामिनिभानुभव
नप्रगटाईहो ॥ नाचतगावतकरतकोलाहलप्रेमउम-
गिअकुलानीहो ॥ हँसतप्रमोदकरतमनफूलतबोलत
बानीहो ॥ अतिमदमनबदनन काहूउ
हो ॥ अंचलखलनना मुधिन-

नकीभईएकद्वीसेसाहो॥ सबव्रजकोश्रृंगाररूपरसभागसुहागसुहायोहो ॥ मोहनकीसबसंपतिसंगमिलिबरसानेआयोहो॥ कोकहिसकैकहाकहिभापैकविपैकहिनहिंजाईहो ॥ जोसुखशोभाताक्षणबाढीअनुभवनयनलखाईहो॥ नंदभवनतेवादिसुखतेहिंक्षणक्योंप्रगटायोहो॥ हरिश्चंद्रवल्लभपदबलतेकेवलयहलखिपायोहो॥१॥ इति राधाजीकीवधाईस० ॥

॥ मंगलनामोचार रागभैरव ॥

मंगलमाधोनामउचार ॥ मंगलसदनकमलकरमंगलमंगलजनहिसदासंभार ॥ देखतमंगलपूजतमंगलगावतमंगलचरितउदार ॥ मंगलश्रवणकथारसमंगलमंगलतनवसुदेवकुमार ॥ गोकुलमंगलमधुबनमंगलमंगलरुचिवृन्दावनचन्द ॥ मंगलकरनगोवर्द्धनधारीमंगलवेपयशोदानन्द ॥ मंगलधेनुरेनुभवमंगलमंगलमधुरबजावतवेनु ॥ मंगलगोपवधूपरि- [illegible] ॥ मंगलचरणकमल

मणिमंगलमंगलकीरतिजगतानिवास ॥ अनुदिनमं-
गलध्यानधरतमुनिमंगलमतिपरमानँददास ॥ १ ॥
मंगलरूपयशोदानंद ॥ मंगलमुकुटकानमधिकुड-
लमंगलतिलकविराजतचन्द ॥ मंगलभूषणसवअँ-
गसोहतमंगलमूरतिआनंदकंद ॥ मंगललकुटकाँ-
खमेंचापेमंगलमुरलिवजावतमन्द ॥ मंगलचालम-
नोहरमंगलदर्शनकरतमिटतदुखद्वंद्व ॥ मंगलव्रजप-
तिनामसवनकोमंगलयशगावतश्रुतिछन्द ॥ २ ॥

॥ वधाईवसुदेवजीकी ॥

आजुव्रजदूनोवढ्योआनन्द ॥ भादोंसुदीपंचमीस्वा
तीवुधप्रगटेयदुचन्द अग्रजश्रीगिरिधारनजूकेलील
ललितअमन्द॥रोहिणिमाताउदरप्रगटभयेहरणभ-
क्तकेदंद॥दानदेतनंदफुलेआवतगावतदेवसुछन्द ॥१

॥ शिवजीकी वन्दना छन्दछप्पय ॥

जयमहेशभुजरोशशेषवरहारविभूषण ॥ जयत्रिलो-

नकीभईएकुहीसेसाहो॥ सवव्रजकोशृंगाररूपरसभा गसुहागसुहायोहो ॥ मोहनकीसवसंपतिसंगमिलिवरसानेआयोहो ॥ कोकहिसकेकहाकहिभापेकविपेकहिनहिंजाईहो ॥ जोमुखशोभाताक्षणवाढी अनुभवनयनलखाईहो ॥ नंदभवनतेचाहिसुखतेहिंक्षणक्योंप्रगटायोहो ॥ हरिश्चंद्रवल्लभपदवलतेकेवल यहलखिपायोहो ॥१॥ इति राधाजीकीवधाईस० ॥

॥ मंगलनामोच्चार रागभैरव ॥

मंगलमाधोनामउच्चार ॥ मंगलसदनकमलकरमंगलमंगलजनहिसदासंभार ॥ देखतमंगलपूजतमंगलगावतमंगलचरितउदार ॥ मंगलश्रवणकथारसमंगलमंगलतनवसुदेवकुमार ॥ गोकुलमंगलमधुवनमंगलमंगलरुचिवृन्दावनचन्द ॥ मंगलकरनगोवर्द्धनधारीमंगलवेपयशोदानन्द ॥ मंगलधेनुरेनुभवमंगलमंगलमधुरवजावतवेनु ॥ मंगलगोपवधूपरिरंभणमंगलकालिन्दीपयफेनु ॥ मंगलचरणकमल

मणिमंगलमंगलकीरतिजगतानिवास ॥ अनुदिनमंगलध्यानधरतमुनिमंगलमतिपरमानँददास ॥ १ ॥ मंगलरूपयशोदानंद ॥ मंगलमुकुटकानमधिकुडलमंगलतिलकविराजतचन्द ॥ मंगलभूषणसबअँगसोहतमंगलमूरतिआनंदकंद ॥ मंगललकुटकाँखमेंचापेमंगलमुरलिबजावतमन्द ॥ मंगलचालमनोहरमंगलदर्शनकरतमिटतदुखदंद्व ॥ मंगलव्रजपतिनामसबनकोमंगलयशगावतश्रुतिछन्द ॥ २ ॥

॥ बधाईवसुदेवजीकी ॥

आजुव्रजदूनोबढ्योआनन्द ॥ भादोंसुदीपंचमीस्वातीबुधप्रगटेयदुचन्द अग्रजश्रीगिरिधारनजूकेलीलाललितअमन्द॥रोहिणिमाताउदरप्रगटभयेहरणभक्तकेदंद॥दानदेतनंदफुलेआवतगावतदेवसुछन्द ।१

॥ शिवजीकी वन्दना छन्दछप्पय ॥

जयमहेशभुजरोशशेषवरहारविभूषण ॥ जयत्रिलो-

कृष्णजीकी वन्दना छन्दछप्पय.

कभटअजितविजितकामादिकदूषण ॥ जयतिज
विधुसकलकलितअतिललितभालतल ॥ जयति
डमुनितनयविनयवशहरितकालबल ॥ जय
लातुहिनगिरिकुंवरिमनोहरिमनहरण ॥ जय
यतिवशीकृतकरणममइच्छापूरणकरण ॥४॥ इति

॥ श्रीराधिकाजीकी वन्दना ॥

छन्दछप्पय ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णचन्दमुखचन्द
चकोरी ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णनयनमृगवन्धनडो-
री ॥ जयतिजयतिश्रीकृष्णकमलमधुमधुपवालिका-
॥जयतिजयतिश्रीकृष्णप्रेमतरूसरसथालिका ॥जय
तिजयतिचातकधरणिकृष्णतनुधरणिमुदभरणि ॥
जयतिजयतिसुखशरणिममइच्छापूरणकरणि॥ १॥

॥ श्रीकृष्णजीकी वन्दना ॥

॥ राधिकाजीका सौभाग्यवर्णन ॥

कवित्त ॥ ब्रह्ममेंढूंढीपुराणनवेदनमंदसुनेचितचौगुनेचायन ॥ देख्योसुन्योतकवोंकितहूंवहकैसोस्वरूपहैकैसोसुभायन ॥ हेरतहेरतहारिफिर्योरसखानिवतायोनलोगलुगायन ॥ देख्योंकहावहकुंजकुटीतटवैठ्योपलोटतराधिकापायन ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ गोपिनको सौभाग्यवर्णन ॥

कवित्त॥शेषमहेशगणेशादिनेशसुरेशहुजाहिनिरन्तरगावें ॥ जाहिअनादिअनन्तअखण्डअछेदअभेद-सुवेदवतावें ॥ नारदलेशुकव्यासरटैपचिहारेतऊपुनिपारनपावें ॥ ताहिअहीरकीछोहरियाछछियाभरिछाछकोनाचनचावें ॥ १ ॥ गुंजगरेशिरमोरपखाअरुचालगयंदकीमोमनभावें ॥ सावरोनन्दकुमारसवैव्रजमंडलीमेंव्रजराजकहावें ॥साजेंसमाजसमैशिरता-जकीलाजकीवातकहीनहिंआवें ॥ ताहिअहीरकी

सातलतूम्यौ ॥ जामुखकोशिवलायसमाधिरखाय
जटाशिरधूरिमेंघूम्यौ ॥ जामुखकोचतुराननहूँक
बिब्रह्मभनैंघटहूघटघूम्यौ ॥ सोमुखनंदकीरानिय
शोमतिदाविकपोलदुहूँकरचूम्यौ ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ रामबालरूपवर्णन ॥

कवित्त ॥ तंत्रकोविचारमंत्रयंत्रनकोसारभुविभारका
रवीतरागजोअधारपावई ॥ तत्वनकोअंशचंडअंश
कोप्रशंसवंशवृजिनविध्वंशअवतंशछविछावई ॥ वे-
दऔनिषेधब्रह्मजीवकोअभेदलखवनजातवेददेवखे
दजोनशावई ॥ औधमहाभागनस्वयम्भुस्वच्छमां-
गनसोंकोशलेशआंगनमेंकागनकोधावई ॥१॥इति०

॥ शीलतावर्णन ॥

कुंडलिया ॥ मंडनहेंऐश्वर्यको, सज्जनतासन्मान॥
राणीसज्जनसूरता, मंडनधनकोदान ॥ मंडनधनको
दानज्ञानमंडनइन्द्रीदम ॥ तपमंडनअक्रोधनियगमं-

नसोहतशम ॥ प्रभुतामंडनमाफधर्ममंडनछलछंड-
न॥सवहिनमेंसरपारशीलतामवकोमंडन ॥ १ ॥ इ०

॥ चेतावनी ॥

कवित्त॥रहाहैनकोइयहाराहिहैनकोईयहजानैमवको
ईपेनमानेंमोहपरिगे ॥ हाथीऔरघोड़ेजोड़ेछोड़ेसवे-
ठौरठौरमौननमेंगाड़ेभूरिमांडेतेविसरिगे ॥ कहैछ-
विनाथरघुनाथकेभजनविनऐमेहीविचारेजन्मकोटि
ननिसरिगे ॥जंगवालेजोरवा ळेजाहिरजरववालेजो-
सवालेजालिमचिताकीआगजरिगे ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ कुदिनवर्णन ॥

कवित्त ॥ वेघाहोतफूहरकल्पतरुथूहरपरमहंसचुह-
परपंढयापरिपाटीको ॥ भूपतिमँगयाकामधेनुठांठहे
वागयंदमदचुवतसुचेरोहोतत्राटीको ॥ काहेशिव-
लालतवधर्मकीन्हेपापहोतवेरीमित्रवापहोतमांपहो-
नसांटीको ॥ निर्धनीकुवेरऔनियारमनमोरहोतानदि-
ननकेफेरसोंसुमेरहोतमाटीको ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥

॥ भक्तिवर्णन ॥

सवैया ॥ कामसेरूपप्रतापदिनेशसेसोमसेशील गनेशसेमाने ॥ हरिचन्द्रसेसाँचेबड़ेविधिसेमघवासे महीपविषयसुखसाने ॥ शुकसेमुनिनारदसेवक्तसे चिरजीवनलोमशसेअधिकाने ॥ ऐसेभयेतौकहातुलसीजोपैजानकीजीवनरामनजाने ॥ १ ॥ झूमतद्वारअनेकमतंगजँजीरजड़ेमदअंबुचुचाते ॥ तीखेतुरंगमनोगतिचंचलपौनकेगोनहुँतेअधिकाते ॥ भीतरचन्द्रमुखीअवलोकितबाहरभूपजुरेनसमाते॥ ऐसेभयेतौकहातुलसीजोपैजानकीनाथकेरंगनराते ॥ २ ॥ भोगमेंरोगवियोगसँयोगमेंकायाकलेशकमायो ॥ त्योंपदुमाकरवेदपुराणपढ्योपढ़िकेबहुवादबढ़ायो ॥ दौन्योंदुराशामेंदासभयोंपैकहूंविसरामकोधामनपायो॥ कायाकमायोसे सेहीजीवनहाथमेंरामकोनामनगायो ॥ ३ ॥ इति० ॥

॥ रेखता–रासलीला ॥

रसरहसमेंरसीलोनाचतनवलबिहारी ॥ अद्भुतशृं गारकीन्हेंसंगसोहेकीरतिकुमारी ॥बाजतमृदंगवी नासुरचंगबजेन्यारी ॥ बाजतकरतालझांझमुरली कोशोरभारी ॥ गातीहैंगीतगोपीशुभरागकोउना री ॥ लेतीहैंतालसम्पेदेतीहैसबेतारी ॥ हंसेहिभेग कबहूंबंसीमधुरबजावें ॥ धुर्पदमल्लारठुमरीसुंदरसुरा गगावें ॥ करकोफेरिफिरिनचकुँनाचनप्यारीसिखावैं ॥ यहिभांतिसुमगनप्रेमरसहृदर्सेमंदनावे ॥ प्रियप्या सजासबब्रजसोहैंगोपिकाकुमारी ॥ तिनमध्यशुभ राजनराधावृषभानुदुलारी ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥

॥ छमदानलीला ॥

रेप्यारेलागतहैंअवहिंचारे ॥ गुणवाकेसुनोयशुद नियातेहैंगेन्यारे ॥ एकदिवसमेरेघरमोहनचोरीग तिहारे॥ऊखलकोनीचधरिनीकेळीकेसे हींउतारे माखनकोसवैखायकैभाँड़नकोफोरिडारे ॥ आत हमैंदेखिकैछिपतेहैंजायअंध्यारे ॥ ढूंढ़नभवनमेंपैठ तवहींचतुर्भुजधारे॥लैनरूपदेखिमोहेप्रियार नि वनसिधारे ॥ १ ॥ दोहा ॥ यहलीलाजोगावही, प ढेसुनैकरिनेम ॥ प्रियादासतारसिकको, अचल हैंगोप्रेम ॥ इति० ॥

॥ अथचंपकलतागृहगमनलीला ॥

रागईमनदेश ॥ श्यामसंखीदोउकरतकलोल ॥आ लिंगनचुंवनपरिरंभनअपनेअपनेरूपहितोल ॥ छू टीलटअलकैंकपोलपैनागिनिसीरहींडोल ॥ प्रिया दासआनँदनिधिलूटीप्रेमविवशविनमोल ॥ १ ॥
॥ रागदेवगंधार ॥ प्रेमहिंडोलेसखीप्रभुकोझुलावे नेहकेखंभप्रीतिकीडोरीपलकपाटपैहारिहिंरमावे ॥

ल्लोंकादेतरसिकनागरजवतबगोपीनिजकंठलगावे॥ देखिदेखिमोहनमूरतिकोगोपीहियेविचहर्षवढावे ॥ प्रियादासछविलखिदृगछाके उपमाअधिककहन नहिं आवे ॥२॥ दोहा॥ चंपकलताकोसुखदियो, निशिमेंसुंदरश्याम ॥ होतप्रातहीचलिभये, मोहन अपनेधाम ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ अथपंडितलीला ॥

॥ रागपीलू॥पंडितरूपवनेवनवारी॥पीतांवरकीधो-तीपहिरेरचिपचिपटुलिसँवारी ॥ तिलकभालरच्यो मालगलेविचपोथीकाखतरमोहतन्यारी ॥ शिरपेपा नगुलाबीसोहतकोवरणेछविअतिशुभकारी॥प्रियदा सकेठाकुरपहिरिखराऊंबरसानेतनचलेसिधारी ॥१॥

॥ अथवैद्यलीला ॥

लावनी॥वैद्यवन्योनटवरनंदकिशोर ॥ पुकारतम-दनमंजरीकीओर॥टेक॥ वैद्यहमवृन्दावनवासी ॥

हरतहमविविधव्याधिखांसी ॥ रोगकीनीकेहमैंप-
हिंचान ॥ दिखावेरोगीहमैंकोउआन ॥ दो० ॥
वृद्धज्वाननरनारिहो, कोईहोयविकार ॥ हरैंपीरइ-
कगोलिमें, सोहमकरतपुकार ॥ टेक ॥ वातएसी-
चीजानोमोर ॥ वैद्यकोवचनसुनतव्रजनार ॥ निक-
लिसबद्वारेकरतपुकार ॥ वैद्यतूनिकटहमारेआव ॥
प्रगटसबअपनेगुनगनसुनाव ॥ दो० ॥ हैंव्याकुलय-
कगोपिका, सुनोवैद्यमहराज ॥ देयविदाईगोघ-
नी, जोनीकीकरिहौआज ॥ इति० ॥ ॥ ॥

॥ गोपीगजल ॥

नंदकेफरजंदबिनमुझकोसखीभातानहीं ॥ चैनइस
वेदर्देदिलकोएकछिनआतानहीं॥क्याकरूंकिस्सेक-
हूंइसदर्दकोअच्छाकरे।वेदमेरीमर्जकाइससमयतोदि
खतानहीं ॥ हरतरहसमुझायागेनेक्याकरूंवेवसभ-
ई॥प्रियादासकेठाकुरविनाकोईतरहजातानहीं॥१॥

प्यारी ॥ देखोदामिनिकैसीदमकतनभमंडलमेंघटा आईकारी ॥ मोरशोरवनओरकरतहैंऔरकोयलियाकूकतन्यारी ॥ बरसतमेघगरजतहैंनान्हींनान्हींबूंदपरतमहिप्यारी ॥ प्रियादासकहेरसिकशिरोमणिगावतसावनतनमनवारी ॥ २ ॥ इति० ॥ ॥

॥ फूलबिननलीला ॥

॥ राग खट ॥ फूलनेकहितसखिनसंगचलीश्रीवृपभानुकुमारीहे ॥ अतिसुकुमाररूपनिधिश्यामावा छबिपेबलिहारीहे ॥ लहँगालालरेसमीसोहैअतिछबिदेतकिनारीहे ॥तापेसोहैरंगबैंजनीकेरिसुन्दरीसारीहे ॥ कंठसिरीदुलरीऔतिलरीकोस्तुभमणिदुरन्यारीहे ॥ दमकतजुगुनूउभयकुचनबिचशोभाकहिचुधिहारीहे ॥ जातवतातमध्यगोपिनकेकीरतिराजकुमारीहे ॥ गजगामिनिसुकुमारिछबीलीहँसतवजावततारीहे ॥ प्रियादासआनन्दरसलूटतलल [illegible] ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥

॥ अथ साझीलीला ॥

रागदेशगगेसरी॥ प्रियाजीकीसांझीहरिदेखनआये ॥ प्यारीआवतदेखतश्यामकोउठकेकंठलगाये ॥ सखीलायआसनसुंदरशुचितापेश्यामबिठाये ॥ करकोपकरिवृषभानुनंदिनीहरिकेचित्रदिखाये ॥ देखोप्यारेचित्रतिहारेसांझीकेचित्रकैसेबनाये ॥ तबहींवचनश्यामशुभमधुरेयोंफिरिकहतसुनाये॥ तेरोभेदभेदनहिंपावतवदर्शनकोममदगअकुलाये ॥ तबहिंलालकोकुँवरिकिशोरीसुमनमालपहिराये ॥ प्रियादासमिलियुगुलपरस्परसखीसुमनबरसाये ॥१॥इति

॥ चतुरता वर्णन ॥

कवित्त ॥ गृहीदरिद्रगृहत्यागिनविभूतिदीन्हीयोंपापिनभमोदपुण्यवंतसोछलागयो ॥ ग्रहितग्रहेशकीन्हींशनिहिंसुचित्तलघुव्यालनअनंदशेषभारसोंदलागयो ॥ गुणिनफिरावतगृहिनगृहद्वारद्वारगुणतेविह

वोसुकुमारी ॥ भनकघुँघुरुनकीत्रलिहारी ॥ दो० । अपनीओरनिहारिकै, देउआलिंगनदान ॥ क्षमाक रोसत्रचूकमम, जोकछुभईअजान ॥ विनयमेरीमा नोहेगोरी ॥ २ ॥ तिहारेगुणनितप्रतिगाऊं ॥ विना आज्ञानकहुंजाऊं ॥ दोहा ॥ ताहूपैदगअरुणकरि, भृकुटीलेतचढ़ाय ॥ जोरावरसोंनिबलकी, काहुँविनिनसमाय ॥ हारेहूँहारजीतेहूँहार ॥ ३ ॥ जिन्हें तुमसमुझौहितकारी ॥ सोईअतिकपटीव्रजनारी ॥ दोहा ॥ हममेंफूटकरायके, आपअलगमुसक्यात ॥ नारायणतुमनेकरी, खरीन्यायकीवात ॥ भलेकोदंडबुरेकोप्यार ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ तमाखूका कवित्त ॥

ज्वरकीहिंसासुदुष्टदुलहीहलाहलकीवीछीकीसहिनि परपंचरूपसाजांहे ॥नानीकरियारीकीधतूरेकेभमा- नीपितियानीवच्छनाककीजहानमेंविराजांहे ॥ क- हेंगंगादत्तवेपचवेंघन्यप्राणीजेअफीमकीजिठानि

सुनोतुमयारननँदोई ॥ तुम्हंबिनरहबकसहोई ॥ तिहारेनैनरतनारे ॥ चानसमहायहँसिमारे ॥ तबते पीरनहिंभूले ॥ हमारेकरतहियेशूले ॥ तुम्हंलति प्राणहंतनमें ॥ बिचारोआपहीमनमें ॥ सुरतिकरि भेजियोपाती ॥ विनयअबकरोंकोनभाती ॥ विरहके सुनतमृदुबेना ॥ लालकेभरेहंजलनेना ॥ समेनहिं कहिसकेतकोऊ ॥ मधुरअलिप्रेममेंदोऊ ॥ २ ॥

॥ अथरामविवाहसरसवर्णन ॥

॥ रागदेश ॥ छैलयहिगलआजआया ॥ छवीली छविक्यादरसाया ॥ मोरअतिसुभगशीशसोहे ॥ जड़ितमणिमाणिकमनमोहे ॥ कुंडलदोउकानमेंह-लकें ॥ कामकीमनहुँमीछलकें ॥ दोहा ॥ व्याह विभूषणअंगमें, लसतसुदेशवहार ॥ छटाछिटिकि क्षितिमेंरही, सुपमाअमितअपार ॥ रूपलाखिसब ॥ कमलकरकडेवडेराजें ॥ मालमोति- ॥ तूणकटिकसनिपीतपटकी ॥ मंदग-

तिगालिमसियवरकी ॥ दोहा ॥ कमलनयनवाँके वड़े, मनहुँनयनकेवान ॥ सानभरेघायलकरत, भृकुटीपायकमान ॥ वादकजरेकीधरिलाया ॥ अवधकोअजवबीररासिया ॥ मजेसेसवकोदिलफँसिया ॥ नहींकहुँअसछविदेखिपरै ॥ कहेकविकैसेबुद्धिहरै ॥ दोहा ॥ हँसनिहायचितकीफँसनि, वचनअमीवरसाय ॥ मधुरअलीतृणतोरिकै, वारवारवलिजाय ॥ सखीसियदूलहुभलपाया ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ मधुरमूर्तिरघुनन्दनवर्णन ॥

राग भोपाली ॥ सखीसियकोसजनप्यारा ॥ दिलोंतेहोतनहिंन्यारा ॥ सुरतिअवहायनहिंभूले ॥ सांवलारूपदृगझूले ॥ छटाछविछयलकीबांकी ॥ लखींमैंजबतेझांकी ॥ नयनदोउनयनकेतीरे ॥ करेजेलागिदेपारे ॥ हँसनिमृदुवोलनिअतिखासी ॥ मेरे जनुप्राणकीफांसी ॥ जोहरीजुलुफमदनछलकै ॥ चसममेरेदेखनकोललकै ॥ सलोनाअवधकोलाला ॥ मधुरअलिजेहिंमोहीवाला ॥ १ ॥ इति० ॥ ॥

॥ रामछ्यलवर्णन ॥

राग विहाग ॥ छ्यलछविहृदयवीचखटकी ॥ सुभगपागसिरपेंचजडितमणिकलँगीक्यालटकी ॥ वसनविभूपणललितमनोहरकमरपीतपटकी ॥ मधुरअलीनयननमेंझूलतद्युतिनागरनटकी ॥ १ ॥ इति०॥

॥ रसिकरेखता ॥

जहांव्रजराजकलपायेचलौसखिआजवावनमें ॥ विनावारूपकेदेखेविरहकीदौलगीतनमें ॥ नकलपड़तीहैवेकलकोनजीलगताहैविनजानी ॥ भईफिरतीहौंयोगिनसीअरीवाजारगलियनमें ॥ करूंकुर्वानदिलउसपरजनमभरगुणनभूलोंगी ॥ मेरामहवुजोलाकरविठादेमेरेआँगनमें ॥ नहींकछुगर्जदुनियासेनमतलवलाजसेमेरा ॥ जोचाहोसोकहोकोईवसाअवतौवहीमनमें ॥ तेरीयहवातहैसांचीनहींशकइस्मेंनारायण ॥ जोसूरतिकाहैमस्तानावोमानेकैसेवातनमें ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ अथ सुकविप्रशंसा ॥

दोहा-सबसोंऊंचेसुकविजन, जानतरसकोसोत ॥
जिनकेयशकीदेहको, जरामरणनहिंहोत ॥

॥ अथ काव्यप्रशंसा ॥

सोरठा-प्रभुज्योंसिखवैवेद, मित्रमित्रज्योंसतकथा ॥
काव्यरसनिकोभेद, सुखसिखदानितियानिज्यों ॥१॥

॥ अथ श्रीकृष्णचन्द्रछविवर्णन ॥

दोहा-मोरपंखकोमुकुटशिर, उरतुलसीदलमाल ॥
यमुनातीरकदम्बढिग, मैंदेखौंनँदलाल ॥

॥ अथ सत्संगमहिमा ॥

दोहा-जडताईमतिकीहरत, पापनिवारतअंग ॥
कीरतिसत्यप्रसन्नता, देतसदासत्संग ॥

॥ ब्राह्मणमाहात्म्य-सवैया ॥

ब्राह्मणपेठिपतालछल्योबलि, ब्राह्मणसाठिहजार कोजाऱ्यो ॥ ब्राह्मणसोखिसमुद्रलियोअरु, ब्राह्मण

हीयदुवंशउजान्यो ॥ ब्राह्मणलातहनीहरिकेउ ब्राह्मणक्षत्रियकोदलमान्यो ॥ ब्राह्मणसेजनिवैरकरो कोउ, ब्राह्मणसेपरमेश्वरहान्यो ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ यशोदापूर्णभाग्यवर्णन ॥

यशोदापूरनभागनिधान ॥ देखदेखसुतचरितमनोहरआनंदउरनसमान ॥ कबहूँबातकृपानगहतहरि कबहूँरूपभविखान ॥ कबहूँहरिमुखदेतअंगुरीपरसतकबहुँकुशान ॥ अतिआतुरजननीउठिधावतपरचसरकरतपान ॥ हरिविलासद्विजबोलपढावतसुतहितदेतखुदान ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ अथशृंगाररसलक्षण ॥

दोहा—उचितप्रीतिरचनावचन, सोशृंगाररसजान ॥
सुनतप्रीतिमयचितद्रवे, तबपूरणकरिमान ॥

॥ अथ हासरसलक्षण ॥

दोहा-हँसीभन्योचितहँसिउठे, जोरचनासुनिदास ॥
कविपंडिततताकोकहें, यहपूरणरसहास ॥

॥ अथकरुणारसलक्षण ॥

दोहा–शोकचितजाकेसुने, करुणामयव्हैजाइ ॥
ताकवितार्इकोंकहे, करुणारसकविराइ ॥

॥ अथ वीररसलक्षण ॥

दोहा–जोउत्साहिलचित्तमें, देतवढाइउछाह ॥
सोपूरणरसवीरहै, रचेंसुकविकरिचाह ॥

॥ अथ रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत रसलक्षण ॥

दोहा–वैरिसवाढैरौद्ररस, भयहिभयानकलेखि ॥
घृणतेहेवीभत्सरस, अद्भुतविस्मयदेखि ॥

॥ अथ शांतरसलक्षण ॥

दोहा–मनविरागसमअशुभशुभ, सोनिर्वेदकहन्त॥
ताहिवढेतेहोतहै, संतहियेरसशान्त ॥

॥ जलभरनलीला प्रभाती ॥

गागरनाभरनदेततेरोकान्हमाई ॥ हँसिहँसिमुखमो

रमोरगागरछिटकाई ॥ घूंघटपटखोलखोलसामो कन्हाई ॥ यशुमतितेभलीवातलालकोसिखाई ॥ अगरवगरझगरोकरतरारतौमचाई॥ कहौंतोवीरय· मुनातीरनीरभरनजाई ॥ गिरिधरकेचरणऊपरमी· रावलिजाई ॥ १ ॥ इति० ॥

॥ दादरा ॥

अलकजालकेफंदेपरोना ॥ जोचाहोकुशलाताहिये कीमृदुमुसुक्यानकरोनअरोना ॥ तुमनलिनीमन मोहनमधुकरभूलेघाकीगैलढरोना ॥ ललितकिशो· रीऔघटचलियेभोराघभरोनभरोना ॥ १ ॥

॥ नवनिधिनारीवर्णन सवैया ॥

भोरहितेउठिगायदुहावतआनतहेगगरीदशपानी॥ रूपसुरूपअनूपपतिव्रतपीतमकोसनमानी ॥

॥ अथ जीवन्मुक्तवर्णन-सवैया ॥

भूखेअघानेरसानेरिसानेहितूअहितूनसोंस्वच्छमनेहैं ॥ दूषणभूषणकंचनकाचजुमृत्तिकामाणिकएकगनेहैं ॥ शूलसोंफूललोंशालपलाशसोंदासहियेसमसाखसनेहैं ॥ रामकेनामसोंकेवलकामतेईजगजीवनमुक्तबनेहैं ॥ १ ॥

॥ अथ शमदमलक्षण ॥

दोहा--मनविषयनतेरोकनो,शमतिहिकहतसुधीर॥
इन्द्रियगणकोरोकनो,दमभाषतबुधवीर ॥ १

॥ अथ श्रद्धासमाधानलक्षण ॥

दोहा --सत्यवेदगुरुवाक्यहैं, श्रद्धाअतिविश्वास ॥
समाधानताकोकहत,मलविक्षेपकोनाश ॥

॥ श्रीराधिकाविरहवर्णन सवैया ॥

श्रीयदुरायहमैंत्रिसरायगयेमथुरापितुधामजहांहै ॥
चन्दनवन्दनकैयदुनन्दनकूबरिकूबरमेट्योतहांहै ॥

॥ राधिकाछविवर्णन ॥

सवैय्या ।

साजिशृँगार चढी है झरोखन ठाढी है भानुसुता सुखदाई ॥ हारनके दवि भारनसे कुच दोउन पाई मनो लघुताई ॥ चूरत भार उतार मनो मनमतस्थन हत्थ किये खुधराई ॥ सोहत है त्रिवली सुमनो कचके लचके कटि हैं दरकाई ॥

॥ शनिफलम् ॥

छन्दत्रोटक.

चतुरं सुवसे खगमंद जिहीं, अति उन्नत थानहरम्य तिहीं ॥ उन ग्राम घनेवनवाखलता सवसे अरुची मन व्याकुलता ॥

भृगुफलम् ।

भृगु सप्तमस्थानक जासुरहें, अतिचातुरता पतितासुकहें ॥ वह दंपतिको मन एक सदा, सुख होय लखे अलखे दुखदा ॥

॥ राधिकाछविवर्णन ॥

सवैय्या ।

साजिभृँगार चढी है झरोखन ठाढी है भानु-सुता सुखदाई ॥ हारनके दवि भारनसे कुच दोउन पाई मनो लघुताई ॥ चूरत भार उतार मनो म-नमरस्थन हत्थ किये खुधराई ॥ सोहत है त्रिवली सुमनो कचके लचके कटि हैं दरकाई ॥

॥ शनिफलम् ॥

छन्दत्रोटक.

चतुरं सुवसे खगमंद जिहीं, अति उन्नत थानहर-म्य तिहीं ॥ उन ग्राम घनेवनवाखलता सवसे अरुची मन व्याकुलता ॥

भृगुफलम् ।

भृगु सप्तमस्थानक जासुरहें, अतिचातुरता पतिता-सुकहें ॥ वह दंपतिको मन एक सदा, सुख होय लखे अलखे दुखदा ॥

॥ शशिफलम् ॥

दशएकम जासुशशी सुवसे, रतनांवरईम अनें कअसे ॥ सुधि दीनयालुकमी न धनं, शुचितारुचि प्रेम प्रकाश मनं ॥

॥ राहुफलम् ॥

वसि द्वादश राहु रह्यो जिनको, अनुराग विराग बढ़े तिनको ॥ भयभीत सुचित्त नहीं धिरता, ग्रह एफल जातक उचरता ॥

॥ शरदृऋतुवर्णन ॥

दोहा—अम्बरजरी सुसोसनी, पना सु भूपणधार ॥
चंद्रोदय जल कमल छवि, शरद सुकरत विहार ॥

॥ हेमन्तऋतुवर्णन ॥

नील निचोल सु अंवरी, माणिक भूपण सार ॥
अतिहि उष्ण उपचार तन, हेमँत करुत विहार ॥

॥ केतुफलम् ॥

षटमें गृह केतु जिहीरहतं, अति चातुरताइ उदार चितं ॥ उनु व्याधि न व्यापत तासुयथा, भय चातुर मानसि आधिविथा ॥

॥ भौमफलम् ॥

संपतगृहमें पुनिभौम रहे, मन कंतमिले तनु ना मिलिहै ॥ विरहा तनु तापस आसुरता, सुरतं न प्रियं सुरता सुरता ॥

॥ बुधफलम् ॥

नवमें शशिसून सुशीलवती, तपतीरथ सेवित पुण्यमती ॥ गुणवान सुमंत सँगीतपढे, रति सं-सृति देवनसेव बढे ॥

रविफलम् ।

दशवें रवि उच्च ग्रहेगति है, परताप वडो निंदहा प्रति है ॥ विविधं वह राजसुनीतलहे, क्रमकी रति ज्ञे विशेष कहे ॥

॥ शशिफलम् ॥

दशएकम जासुशशी सुबसे, रतनांबरईम अने कअसे ॥ बुधि दीनयालुकमी न धनं, शुचितारुचि प्रेम प्रकाश मनं ॥

॥ राहुफलम् ॥

बसि द्वादश राहु रह्यो जिनको, अनुराग विराग बढे तिनको ॥ भयभीत सुचित्त नहीं थिरता, ग्रह एफल जातक उचरता ॥

॥ शरदऋतुवर्णन ॥

दोहा–अम्बरजरी सुसोसनी, पना सु भूपणधार ॥
कमल छवि, शरद सुकरत विहार ॥

॥ ग्रीष्मवर्णन ॥

चेल गुलाबी केसर. सब शीतल उपचार ॥
मुक्ता मंडन बाग बसि, ग्रीषम करत विहार ॥

॥ स्वरनाम ॥

छंद चन्द्रायणा-खर्ज ऋषभ गंधार सुमध्यम जानिये ॥ पंचम धैवत और निषाद बखानिये ॥

॥ सप्तस्वर अनुमान भेद ॥

छप्पय ॥ बरहिवान सर खर्ज ऋषभ नातकी उचारन ॥ अंगुवार गंधार मध्यकुरची काल धारन ॥ पंचम कोकीलशब्द बाजध्वनि धैवत जाने ॥ घनगर्जन सुनि पाद सप्तसुर भेद बखाने ॥ षट सुर फिरन्त पंडव कहें पंच सुओड वखारिये ॥ स्वरसप्त सोय पूरन कहें रागन धाम विचारिये ॥

॥ सप्तरागोत्पत्ति भेद ॥

भैरवहरयेभयो मालकोशहु विष्णुमुख ॥ अङ्गगात्र
२१

हडाल और दीपक दिनमणिरुख ॥ शेषहुते श्री राग मेघ गाजत आकाश हुव ॥ इकइक इक प्रति ग पंच रागनी प्रकट भुव ॥ सुत पंच पंच प्रति रागनी पंच पंच पुत्री कहे ॥ विस्तार वध्यो सम्बन्धसे तीनलोक फैल्यो वहे ॥

॥ श्रीभैरवपंचरागिनीनामभेद ॥

चौपाई–भैरव राग भैरवीनारी । वैरारी माधवी विचारी ॥ सिंधू वंगाली सु कहावे । यहै रीति संगीत वतावे ॥

मालकोशहूकी यह वाला । टोंड़ी गोड़ी रूपरसाला ॥ पुनि गुणकली खमायचिनारी ॥ कुंकुम युक्त पँचो हितकारी ॥

चौ०–रामकली दे साख सुवामा । ललिता अरु विलावलीनामा ॥ पटमंजरी पंचमी नारी । ए हिंडोरकी आज्ञाकारी ॥

॥ दीपकपंचरागनी नाम ॥

देशी ओर कमोद कहावे। नरकेदारदार गुणगावे। चहुरिकान्हरारूपविशाला।यहेपंचदीपककीवाला।

॥ श्रीराग पंचरागिनी ॥

मालसिरी मारू शुभनामा। धन्यासरी वसंतसुवा मा॥ आसावरी युक्त यह जानी । श्रीरागके पं मनमानी॥

॥ मेघरागपंचागिनी नामभेद ॥

टेक मलार गुञ्जरी नारी॥ पुनि भूपाली अतिहित कारी ॥ देशकारयुत पंचगनाई ॥ मेघरागह मनभाई॥

॥ पूर्वदिशाके सुख ॥

पुरुषउवाच ॥ दोहा–रूपविशेपविशेपधन,भ मिसुवाहनदेश॥ जायकरोंयातेअवे, पूरवकोपरदे श ॥ १ ॥ कवित्त ॥ ताफतारुवाफतामुसञ्

श्रीसाफमखमलरुमुकेसीपटनानासुखदाइये ॥ सरसकृपाणतरकसरुकमानवाणजरकसीचीराहीराज हूँ जाइलाइये ॥ सुकविगुपालफुलवारीधामधाम अंबश्रीफलकदंबगौंडापाननको खाइये ॥ वडेहोतकेशमिलैंतंदुलअशेषप्यारीपूरवकेदेशमेंविशेषसुख पाइये ॥

॥पूर्वदिशाकेदुःख-स्त्रीउवाच-खंडन ॥

सोरठा--लगैंचोरठगवाइ, पेटचलैपानीलगे ॥ कीजेकवहुंनजाइ,पूरवकेपरदेशको ॥ १ ॥ कवित्त ॥ पानीलगिजातवहुफूलिजातगातघुनिपेट चलिजातकछुखाइजातजवहूं ॥ जादूकरिकरिकैं सँभोगसुखकाजपशुपक्षीकरिराखैंनारिनरनकोअवहूं ॥ ब्राह्मणवणिकमीनमांसमधुखाततैंलहरदलगायन्हातनारीनरसवहूं ॥ फांसीदैवोहालमारीडारैं ठगजालपातेजैयनगुपालदिशिपूरवकीकवहूं ॥ १ ॥

॥ दक्षिणदिशाके सुख ॥

पुरुषउवाच ॥ दोहा–दयावानधनवानपुनि, लोगबड़ेगुणवान ॥ यातेदक्षिणदेशको, करियेसदापयान ॥ १ ॥ कवित्त–चीराचिरसालूमेलासमलावहारदारजरकमीकामजहाँहोतनानाभाँतिहे ॥ सुकविगुलालललाउरतनप्रवालमणिमाणिकविशाल मोतीमहँगीसुजातिहै ॥ मेवाऔमिठाईफलफूलमूलमूलगजतरुणीअनूपरुपझलकतगातहै ॥ देखेघनेवातसदाशोभासरसात प्यारीदक्षिणदिशाकेगुणकहेनहींजातहें ॥ १ ॥ इति द० ॥

दक्षिणदिशाकेदुःख-स्त्रीउवाचखडन॥

दोहा–दक्षिणपियसुनिकानदे, दक्षिणदक्षिण

रि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ धूरिनकेथएसावेंढोलकेढम-
केजलतरुविनथलतहांशोभानहींपामेंहैं ॥ चताअ
रुगेहूंरसगोरसनफूलफलमोठबाजरीकोखायदिवस-
वितामेंहैं॥ रहतमलीनधर्मकर्मकरिहीनलोगपहरत
दीपपटऊननकेजामेंहैं ॥ सुकविगुपालकछुकहतन
आवेबातजेतेदुखहोतसदापश्चिमदिशामेंहैं ॥

॥ उत्तरदिशाकेसुख ॥

पुरुषउवाच ॥ दोहा--हरिद्वारतेकैपरशि, बद्री
नायकेदार ॥होतकृतारथजीवयह, उत्तरखंडमझार
॥ १ ॥ कवित्त॥ लाइचीलवंगदाखदाडिमबदामसे-
बसालमअंगूरपिस्ताखैयेउठिभोरको ॥ कस्तूरीकेस
रिजावित्रीजायफलदालचीनीदेवदारुकीसुगंधिचहुँ
वारेको॥ सालऔदुसालधुस्सानानापसमीनाओढि
देखतरहतआछीतियनकीमोरको ॥ कहतगुपा
लप्यारीसुनियेनिहोरमोपैकह्योनहींजातसुखउत्तर-
कीओरको ॥ १ ॥ इति० ॥

नसुखारीहैं ॥ लोगनिरहेतभानिजकोन्याहिवेटीदे॰ तरीतिविपरीतिसबदेखतमेंन्यारीहैं ॥ बढ़तअगा॰ रीहोतिवडीवड़ीख्वारी।दिशिदक्षिणमझारीजातहो दुःखभारीहै ॥ १ ॥

॥ पश्चिमदिशाके सुख ॥

पुरुषउवाच ॥ दोहा—राखे दक्षिणते अवे, ज दिशिपश्चिमजात ॥ ताकेअबसुनिलीजिये, त्या सुखअवदात ॥ १ ॥ कवित्त ॥ लोगदयावा तियसुंदरसुजानमीठीबोलनिनिदाननीरलगैनत कहूँ ॥ वृषभविशालऊंचेपुरुषसुकारवस्त्रविविध रत्नहैसूतकेजहाकहूँ ॥ सुकविगुपालतातेतरल हूंजियशोचतहीरहूंप्यारीपश्चिमदिशाकेसुख कहाकहूं ॥ १ ॥

॥ पश्चिमदिशाकेदुःख-स्त्रीउवा

दोहा—मरतरैनिदिनवारिविन, ... नारी॥करियेनहींपयानपिय, प ...

॥ उत्तरदिशाकेदुःख-स्त्रीउवाच-खंडन ॥

दोहा--सदाशीतभयभीतनर, व्याघ्रसिंहवृषघोर ॥ कीजैनहींपयानपिय, उत्तरदिशिकीओर ॥१॥
कवित्त ॥ विकटपहारझारघनेसिंहस्याररनिरवाहन हींहोतरथवहलकोजामेंहै ॥ गिलटीरुगिलरुअनेकरोगहोतजहाँचारिहूवरणजीवहिंसकहरामेंहैं॥सुकविगुपालसदाशीतभयभीतलोगवरफकेमारेदुरे हतगुफामेंहैं ॥ राहामेंनगामेंचल्योजातनानिशामें यातेबहुदुःखपावैंजातउत्तरदिशामेंहैं ॥ १ ॥

॥श्रीराधामाधवप्रार्थना ॥

श्री राधामाधवकीछटादेख्यौंमनआनंद ॥ शोभा श्रीशृंगारकीसोहेंगोकुलचंद ॥ सोहेंगोकुलचंदनाथ सर्वेश्वररजै ॥ सनकादिकके सीस हंसभगवानविराजै ॥ कह कविता सहदेव प्रगट जादवके जादव॥ दुख जाय देखश्रीराधा माधव ॥४॥समाप्त